अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर 2025, वर्ष 34, अंक 10

उत्तर प्रदेश

सदेश

राम मंदिर ध्वजारोहण विशेषांक

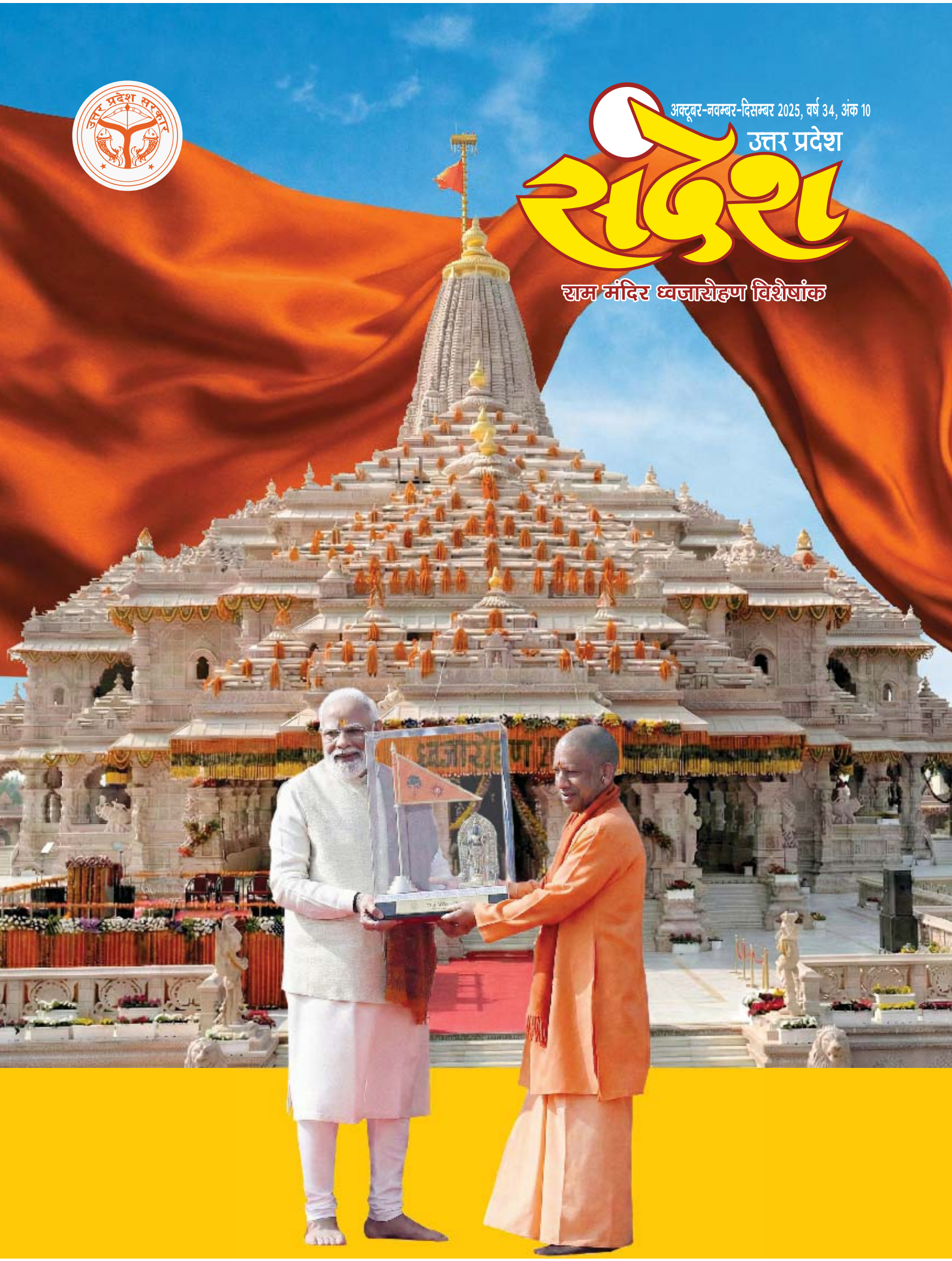

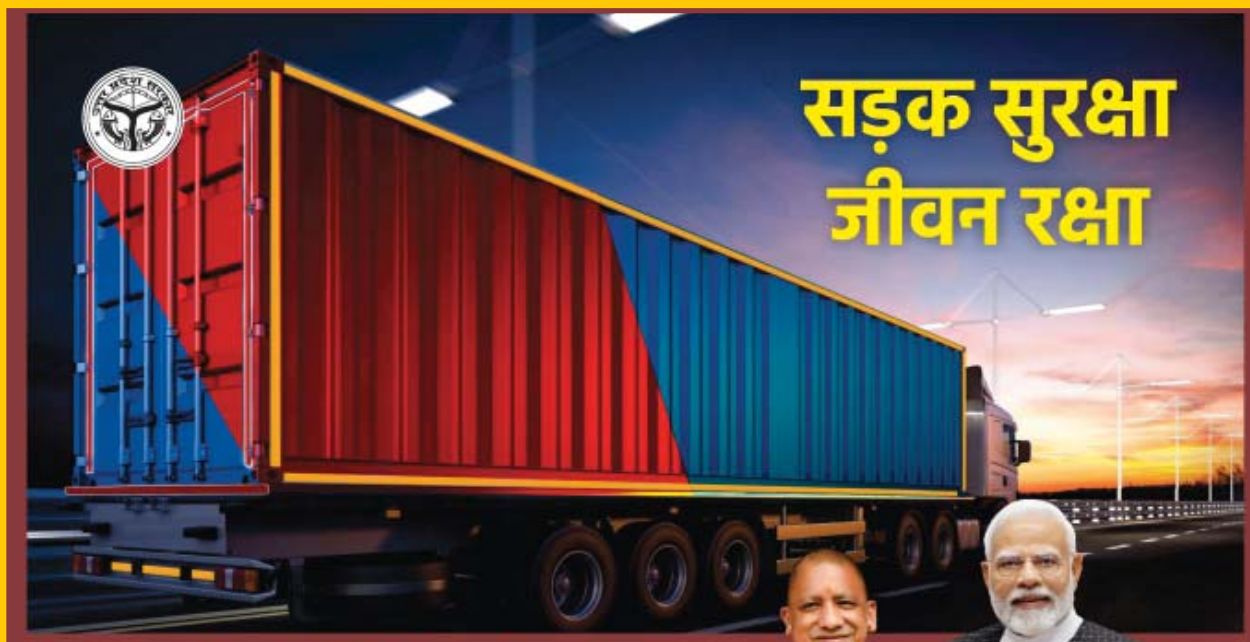

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा

परावर्तक पट्टी (रिफ्लेक्टिव टेप)/रियर मार्किंग टेप के संदर्भ में केन्द्रीय मोटरयान नियमावली, 1989 के नियम 104 के अंतर्गत

मालवाहन (वर्ग N1 तथा वर्ग N2) 3.5 टन+ तथा अधिकतम 7.5 टन तक वजन के लिए नियम :

- बॉडी की पूरी चौड़ाई को क्रॉस करते हुए सामने एक श्वेत परावर्तक पट्टी (रिफ्लेक्टिव टेप)
- पीछे एक लाल परावर्तक पट्टी
- दोनों टेप की चौड़ाई कम से कम 20 एम.एम.

मालवाहन (वर्ग N3 व वर्ग N2) 7.5 टन और उससे ऊपर वजन वाले वाहन के लिए नियम :

- सामने बॉडी की चौड़ाई को पूरा क्रॉस करते हुए एक श्वेत परावर्तक पट्टी
- सामने वाली पट्टी की चौड़ाई कम से कम 50 एम.एम.

ट्रेलर या सेमी ट्रेलर और वर्ग N2 7.5 टन और उससे अधिक कुल वाहन वजन व ट्रेलर अथवा सेमी ट्रेलर सहित वर्ग N3 के लिए नियम :

- पीछे तथा किनारे परावर्तक रेखीय चिन्हांकन

कृषि ट्रैक्टर के लिए नियम:

- पीछे दोनों ओर 7 वर्ग सेमी. से अन्यून परावर्तन क्षेत्र वाले दो गैर त्रिकोण लाल परावर्तक

यात्री वाहन (वर्ग M2 व वर्ग M3) के लिए नियम :

- बॉडी की चौड़ाई को क्रॉस करते हुए सामने श्वेत तथा पीछे लाल परावर्तक पट्टी
- M3 वर्ग के वाहनों के किनारे बॉडी की लम्बाई को क्रॉस करते हुए पीली परावर्तक पट्टी
- पट्टी की चौड़ाई कम से कम 50 एम.एम.

ई-रिक्शा और ई-कार्ट सहित तीन पहिया वाहनों के लिए नियम:

- वाहन की सम्पूर्ण चौड़ाई में फैली सामने की ओर सफेद परावर्तक पट्टी
- पीछे की ओर लाल परावर्तक पट्टी
- दोनों टेपों की चौड़ाई कम से कम 20 एम.एम.

जुर्माना एवं सजा का प्रावधान

- रिफ्लेक्टिव टेप/परावर्तक नहीं लगाने पर मोटर वाहन अधिनियम, 1988 की धारा 190 (2) के अंतर्गत कार्यवाही का प्रावधान
- पहली बार में ₹10,000 तक का जुर्माना, 03 महीने कैद या दोनों। 3 महीने के लिए लाइसेंस निलंबन भी
- दूसरी बार ₹10,000 तक का जुर्माना, 06 महीने तक की कैद या दोनों
- वाहनों का फिटनेस प्रमाण-पत्र भी निर्गत नहीं किया जाएगा

UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficialUP

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

कार्यालय परिवहन आयुक्त, उत्तर प्रदेश

अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर, 2025, वर्ष 34, अंक 10

उत्तर प्रदेश संदेश

संरक्षक एवं मार्गदर्शक :
संजय प्रसाद
प्रमुख सचिव, सूचना

❖

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी :
विशाल सिंह
सूचना निदेशक

❖

सम्पादकीय परामर्श :
अरविन्द कुमार मिश्र
अपर निदेशक, सूचना

❖

चन्द्र विजय वर्मा
सहायक निदेशक (प्रकाशन)

❖

दिनेश कुमार गुप्ता
उपसम्पादक, सूचना

❖

अजय कुमार द्विवेदी
सहयुक्त संपादक

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
ईमेल : upsandesh20@gmail.com
दूरभाष कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 9412674759, 7705800978

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित

भारत सरकार के रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या : 55884/91

प्रकाशित सामग्री में विभिन्न लेखकों के दृष्टिकोण एवं विचार से सूचना विभाग की सहमति अनिवार्य नहीं हैं। लेखों में प्रयुक्त आंकड़े अनन्तिम हो सकते हैं।

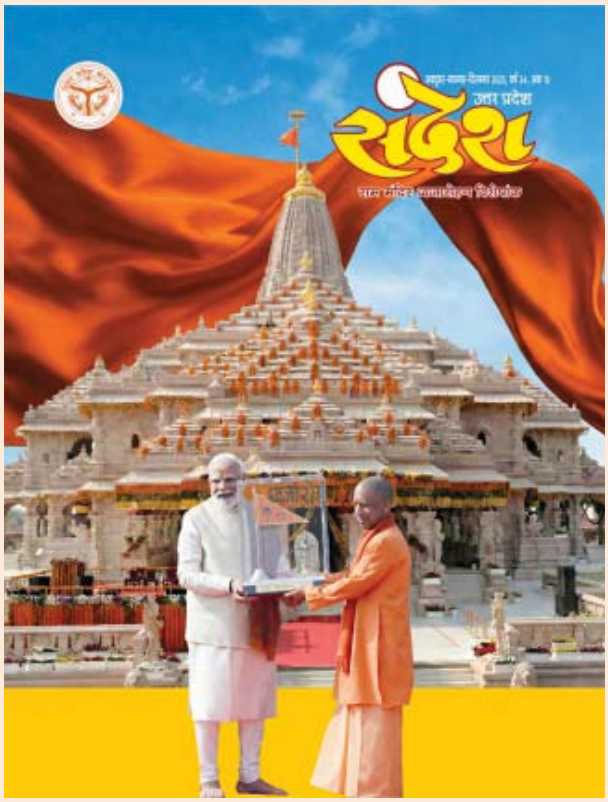

इस अंक में

- ध्वजारोहण 2025 : सांस्कृतिक विरासत और सुशासन 5
  –डॉ. शिवानी कटारा
- गौरवशाली सभ्यता के निर्माण का नवघोष 10
  –सियाराम पांडेय 'शांत'
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नजरों में अयोध्या 14
  –सुनील राय

- भारतबोध का प्रतीक है श्रीराम मंदिर का ध्वज –डॉ. सौरभ मालवीय 19
- लोकजीवन में रचे-बसे राम –डॉ. रविशंकर पांडेय 23
- अयोध्या धाम : राम मंदिर धर्म ध्वजारोहण : संघर्ष से सिद्धि तक –विमल किशोर श्रीवास्तव 28
- जब प्रभु श्री राम में लीन भये मोदी –यशोदा श्रीवास्तव 33
- योगी की पहल : दुनिया भर के लोग जानें अयोध्या का माहात्म्य –रवि प्रकाश 35
- राममंदिर पर ध्वजारोहण : संकल्प की सिद्धि –श्याम नारायण सिंह 37
- महानायक राम की नगरी अयोध्या –विदर्भ कुमार 42
- अयोध्या में अध्यात्म और विकास का संगम –डॉ. अजय कुमार मिश्रा 46
- अनंतकाल तक एकता और धार्मिक विश्वास की अलख जगायेगा ''धर्मध्वज'' –सुधा मिश्रा 49
- भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का प्रतीक है धर्म ध्वज –प्रदीप उपाध्याय 52
- राम मंदिर पर लहराया आस्था का विजय ध्वज –प्रज्ञा पांडेय 56
- अयोध्या को मिल रही वैश्विक पहचान –सीमा राय 64
- सनातन धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा का ध्वजारोहण –राघवेन्द्र प्रताप सिंह 70
- सदियों के संकल्प का ध्वजारोहण –एस.पी. सिंह 75
- संकल्प पूर्णता का शंखनाद –सुनीता उपाध्याय 83
- अयोध्या में रामराज्य की पुनर्स्थापना –चित्रांशी 86
- अयोध्या पर माता अन्नपूर्णा का भी आशीर्वाद –राधिका 88
- त्रेतायुग की याद दिलाता धर्मध्वज –प्रेमशंकर अवस्थी 93
- सत्य होते सदियों के सपने –प्रदीप कुमार गुप्ता 99

❖❖❖

सम्पादकीय

भगवान राम की जन्मस्थली अयोध्या निरंतर विकसित हो रही है। उसका कायाकल्प हो रहा है। राम नगरी अयोध्या पूरी दुनिया में विरासत के संरक्षण का मॉडल बनकर उभर रही है। जिस अयोध्या को भगवान राम ने सुहावन कहा था, जिस अयोध्या में कभी युद्ध नहीं हुआ था, सनातन धर्मियों की आस्था का केंद्र वही अयोध्या कालांतर में आक्रांताओं की बदनीयती का शिकार हो गई थी। राममंदिर का विध्वंस दरअसल देश की आत्मा पर हमला था। भारतीय जीवन मूल्यों पर आघात था। सिद्धांतों, आदर्शों, संस्कृति और सभ्यता पर करारी चोट थी। रामजन्म भूमि मंदिर को मुगलों के चंगुल से छुड़ाने के लिए न जाने कितने हिन्दू राजाओं और उनके सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुति दी। साधु-संतों, नागा संन्यासियों, वैरागियों, नाथ योगियों ने भी अस्त्र-शस्त्र उठाए लेकिन उनके तमाम प्रयासों के बाद भी अयोध्या स्थित राम जन्मभूमि को मुगलों के चंगुल से छुड़ाना सम्भव नहीं हो सका। गुलामी के दौर में अयोध्या निरंतर उपेक्षित रही। मुगल काल और अंग्रेजों के दौर में उसकी आर्थिक स्थिति बदतर होती गई। आजादी के बाद जब सोमनाथ मंदिर का प्राचीन आध्यात्मिक गौरव वापस लाने के समवेत प्रयास आरम्भ हुए तो लगा कि मानव जन्म के इतिहास का केंद्र रही अयोध्या के दिन भी बहुर जाएंगे लेकिन

सनातनधर्मियों का यह विश्वास ध्वस्त होते देर नहीं लगी। सैकड़ों साल के संघर्ष और कानूनी लड़ाई के बाद अंततः अयोध्या और रामलला को न्याय मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगुआई में अयोध्या के विकास और विरासत को भरपूर तरजीह मिल रही है। अयोध्या में बने भव्य और दिव्य राम मंदिर के भूमिपूजन, प्राण प्रतिष्ठा और ध्वजारोहण के तीनों ही मौके पर इन दोनों राजनीतिक दिग्गजों की सम्मानित उपस्थिति रही है। राम मंदिर पर ध्वजारोहण से न केवल दुनिया भर में सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति की गौरव गरिमा बढ़ी है,बल्कि राम मंदिर निर्माण के लिए आत्मोत्सर्ग करने वाली हुतात्माओं की आत्मा को शांति भी मिली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगुआई में अयोध्या के विकास और विरासत को भरपूर तरजीह मिल रही है। इस गौरवपूर्ण उपलब्धि को सम्मान देने के लिए 'उत्तर प्रदेश संदेश का राम मंदिर ध्वजारोहण विशेषांक' आप सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। आशा है, यह प्रयास आपको पसंद आएगा। उत्तरप्रदेश तीर्थों का प्रदेश है। भगवान विष्णु के सर्वाधिक अवतार उत्तर प्रदेश में ही हुए हैं।

राम मंदिर निर्माण के साथ ही अयोध्या का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक वैभव भी बढ़ा है। ढांचागत विकास और नागरिक सुविधाओं में भी बढ़ोतरी हुई है, यह अपने आप में सुखद संयोग है। आशा है, यह प्रयास आपको पसंद आएगा। भगवान राम अगर आदर्शों और सिद्धांतों के समुच्चय हैं तो मर्यादा पुरुषोत्तम भी हैं। अयोध्या इस मर्यादा की उत्पादयित्री आधारभूमि है। अयोध्या में होने वाली हर गतिविधि दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचती है। यह मर्यादा की भूमि है। नदी तटों की मर्यादा में ही रहकर जीवनदायिनी कहलाती है। जो व्यक्ति, समाज, प्रदेश और देश नैतिकता और मानवमूल्यों से विरत हो जाता है, उसके पतन की शुरुआत हो जाती है लेकिन जो अपनी सीमाओं में रहकर आगे बढ़ने का प्रयास करता है, प्रगति उसके चरण चूमने को आतुर हो जाती है। प्रस्तुत अंक की प्रेरणा प्रमुख सचिव सूचना श्री संजय प्रसाद जी और सूचना निदेशक श्री विशाल सिंह जी से मिली, इसके लिए हम उनके तहे दिल से आभारी हैं। इसके अतिरिक्त विभाग के सहृदय उच्चाधिकारियों के आत्मीय सहयोग और मार्गदर्शन ने इस निमित्त हमारा मनोबल बढ़ाया। उत्तर प्रदेश संदेश के नियमित और आमंत्रित लेखकों ने अपना स्नेहाशीष प्रदान कर अयोध्या के ध्वजारोहण विशेषांक को बेहतर और संग्रहणीय बनाने में हमारी मदद की। इसलिए उनका हृदय तल की गहराई से विनम्र आभार। यह अंक आपको कैसा लगा? आपके अनुभवों और सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

सम्पादक

ध्वजारोहण 2025 : सांस्कृतिक विरासत और सुशासन

-डॉ. शिवानी कटारा

अयोध्या का राम मंदिर केवल स्मारक या धार्मिक स्थल नहीं है, यह भारत की उस सभ्यतागत चेतना का मूर्त रूप है, जिसने समय की असंख्य परीक्षाओं के बावजूद अपने मूल्यों को जीवित रखा। वास्तव में, राम मंदिर का प्रश्न आरंभ से ही किसी कालखंड की राजनीतिक विमर्श-सीमा में सीमित विषय नहीं रहा, वह उस सांस्कृतिक भारत का जीवंत संकेत रहा है, जिसके केंद्र बिंदु श्रीराम मर्यादा, कर्तव्य, न्याय, करुणा और राष्ट्रधर्म के शाश्वत आदर्श रहे हैं। यही कारण है कि 25 नवंबर, 2025 को राम मंदिर के शिखर पर भगवा ध्वज का आरोहण केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की पुनर्प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक क्षण का सशक्त प्रतीक बन गया।

यह यात्रा अचानक प्रारंभ नहीं हुई, इसका उद्गम उस क्षण से होता है जब राम मंदिर का विध्वंस हुआ और समाज ने अपनी स्मृतियों, परंपरा तथा आत्मसम्मान की रक्षा हेतु संघर्ष आरंभ किया। समय के साथ यह संघर्ष जनमानस में सांस्कृतिक प्रतिज्ञा बन गया। आधुनिक काल में यह प्रतिज्ञा 9 नवंबर, 2019 को सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णय के बाद मूर्त रूप लेने लगी। पाँच फरवरी, 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की घोषणा, 5 अगस्त, 2020 को भूमि-पूजन, 22 जनवरी, 2024 को रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा, 14 जून, 2025 को राम दरबार के द्वार भक्तों के लिए खुलना यह क्रम राष्ट्रीय पुनर्जागरण के क्रमिक पड़ाव थे, जो 25 नवंबर, 2025 को ध्वजारोहण समारोह में अपने तेजस्वी शिखर तक पहुँचते हैं।

25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सम्पन्न ध्वजारोहण मात्र चार मिनट का वैदिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि अयोध्या में कई दिनों से चल रही आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक उत्सव-शृंखला का चरम क्षण था। ध्वज का आरोहण अत्यंत शुभ 'अभिजीत मुहूर्त' में हुआ जो भारतीय परंपरा में विजय, सिद्धि और दिव्यता का काल माना जाता है। यह पवित्र अनुष्ठान 11:52 से 12:35 बजे के मध्य निर्धारित था। ध्वजारोहण से पूर्व अयोध्या में उत्सवों की शुरुआत 20 नवंबर को मार्गशीर्ष अमावस्या के पावन अवसर पर हुई, जब नगर में आध्यात्मिक चेतना और उल्लास का अद्भुत संयोग दिखा। विविध अनुष्ठानों की शृंखला की प्रथम कड़ी थी कलश यात्रा। इस यात्रा का श्रीगणेश सरयू तट पर धर्माचार्यों द्वारा पूजन और अर्चन के साथ हुआ। यात्रा के साथ ही अयोध्या की गलियाँ और मंदिर-परिसर उत्सवमय हो उठे। 23 से 25 नवंबर तक आयोजित धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने पूरे नगर को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक वैभव से आलोकित कर दिया। लोक नृत्यों की झंकार, संगीतमय प्रस्तुतियों की माधुरी, ऐतिहासिक झाँकियों की छटा, सप्त मंदिरों तथा छह उप-मंदिरों में सम्पन्न विशिष्ट पूजन अयोध्या को जीवंत सांस्कृतिक राजधानी का स्वर दिया। शहर के चौराहों, गलियों और मार्गों को आकर्षक रोशनी, रंग-बिरंगी पुष्प सज्जाओं और पारंपरिक रंगोलियों से विशेष रूप से अलंकृत किया गया।

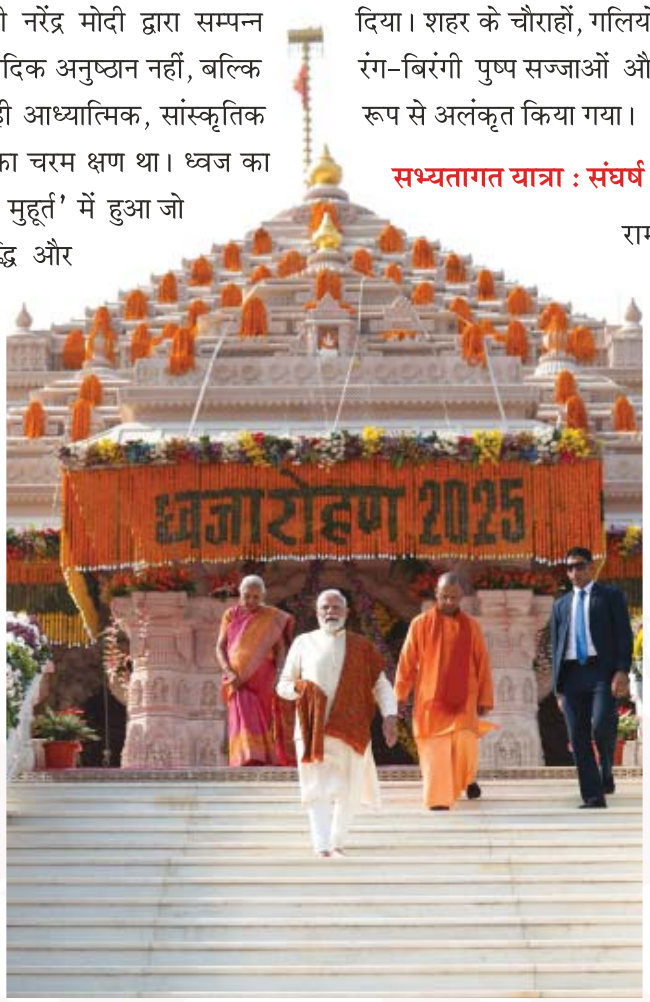

सभ्यतागत यात्रा : संघर्ष से संकल्प तक

राम मंदिर का निर्माण केवल न्यायिक निर्णय का परिणाम नहीं था, यह संघर्ष की वह यात्रा थी, जिसे न केवल आंदोलनकारियों, संतों और समाज ने आगे बढ़ाया, बल्कि पीढ़ियों तक भारतीय मानस में जीवित रखा। इसलिए जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि "राम कोई व्यक्ति नहीं, एक मूल्य हैं," तो यह उस सभ्यता की आवाज है, जो राम को धर्म, कर्तव्य और समता के सार्वभौमिक आदर्शों के रूप में देखती है।

अयोध्या एक समय वह नगरी थी, जहाँ तुलसीदास ने कहा "सीलु सनेह संपन्न नगरु, जहाँ ताल की ध्वनि सुहाई।" आज वही अयोध्या फिर से अपने सांस्कृतिक उत्कर्ष की ओर लौट रही है। यहीं ऋषि वाल्मीकि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य, अहिल्या और तुलसीदास जैसे दिव्य व्यक्तित्वों की स्मृतियाँ जुड़ी हैं। मंदिर परिसर में जटायु और गिलहरी की मूर्तियाँ इस सत्य की याद दिलाती हैं कि महान संकल्प छोटे-छोटे प्रयासों से पूर्ण होते हैं।

प्रधानमंत्री और राष्ट्र का संदेश

ध्वजारोहण के क्षण पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "आज सदियों के घाव भर रहे हैं... 500 वर्षों का संकल्प पूर्ण हुआ है। राम भेद से नहीं, भाव से जोड़ते हैं। राम हमारे सामूहिक मूल्य हैं।" उन्होंने यह भी कहा कि भारत ने लोकतंत्र को किसी से ग्रहण नहीं किया। "भारत लोकतंत्र की जननी है, यह हमारे डीएनए में है।"

यह केवल सांस्कृतिक वक्तव्य नहीं, बल्कि उस राष्ट्रीय आत्मविश्वास का उद्घोष था-जिसकी प्रतीक्षा देश के सामूहिक मानस ने लंबे समय से की थी।

मंदिर निर्माण के बाद नगर के रूपांतरण ने विश्व का ध्यान खींचा है। 2024 में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या में पर्यटकों की संख्या 16.44 करोड़ पहुँच गई। वैश्विक तीर्थस्थलों की तुलना में यह अद्भुत परिघटना है। यह नगर आज केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि आर्थिक और सांस्कृतिक गति का केंद्र बन चुका है।

ध्वजारोहण : परंपरा, वास्तु और राष्ट्रधर्म का मिलन

25 नवंबर का ध्वजारोहण केवल अनुष्ठान नहीं था, यह मंदिर के वास्तु-पूर्ण होने का प्रतीक था। कुछ विद्वान इसे 'द्वितीय प्राण-प्रतिष्ठा' कहते हैं। जहाँ प्राण-प्रतिष्ठा मंदिर की आत्मा को प्रतिष्ठित करती है, वहीं ध्वजारोहण मंदिर की संरचना, उसकी ऊर्जा और आध्यात्मिक अधिकार का सार्वजनिक उद्घोष है। इस ध्वज के फहराते ही मंदिर के सभी 44 द्वार और उनसे जुड़े परंपरागत नियम-अनुष्ठान पूरी तरह से शुरू हो गए। धर्म ध्वज के तीन पवित्र प्रतीक कोविदार वृक्ष, सूर्य और प्रणव (ॐ) केवल अलंकरण नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक स्मृति और धर्मपरायणता के गहन अर्थों का संगम हैं।

पहला प्रतीक : कोविदार (कचनार) वृक्ष

कोविदार से युक्त ध्वज महाराज दशरथ के रथ की पहचान रहा है। प्रभु श्रीराम बाल्यावस्था से ही इसी रथ में शोभित होते थे, इसलिए उनके रथ को स्वाभाविक रूप से कोविदार ध्वज कहा गया। शास्त्रों में जिसका उल्लेख ''...शेषवे रघुनाथस्तु कोविदारध्वज: स्मृत:'' के रूप में मिलता है। पवित्र वृक्षों की श्रेणी में कोविदार को कल्पवृक्ष के समान माना गया है। एक ऐसा वृक्ष जो सृजन, जीवन, सौंदर्य और संस्कार की अखंड परंपरा का संवाहक है।

दूसरा प्रतीक : दीप्तिमान सूर्य

ध्वज पर अंकित सूर्य प्रभु राम के तेज, मर्यादा, पराक्रम और सत्य के प्रकाश का प्रतीक है। सूर्य जड़ चेतना की आत्मा माना गया है और भारत आदिकाल से सूर्योपासक देश रहा है। स्वयं प्रभु राम सूर्यवंश में अवतरित हुए। अत: सूर्य का यह चिह्न रामराज्य के न्याय, धर्मनिष्ठा और उज्ज्वल आदर्शों का दिग्दर्शक बन उठता है। जैसे सूर्य अंधकार पर उजाले की विजय का शाश्वत प्रमाण है, वैसे ही यह प्रतीक राम के उस 'धर्म प्रकाश'

को धारण करता है, जिसने अनंतकाल से भारतीय समाज को मार्ग दिखाया।

तीसरा प्रतीक : प्रणव (ॐ)

ध्वज पर अंकित प्रणव सृष्टि का मूल नाद है, वह ध्वनि, जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड प्रस्फुटित हुआ माना जाता है। यह सनातन धर्म की आत्मा, उसके ज्ञान मार्ग और ध्यान बल का प्रतीक है। इस प्रतीक की उपस्थिति ध्वज को केवल भौतिक नहीं रहने देती, बल्कि उसे आध्यात्मिक ऊर्जा और चेतन शक्ति का मंत्र रूप प्रदान करती है।

यह त्रिकोणीय ध्वज 10x20 फीट का है, जिसे विशेष पैराशूट ग्रेड कपड़े से तैयार किया गया है। इसे एक ऐसे 42 फीट ऊँचे पोल पर स्थापित किया गया, जिसमें 360 डिग्री रोटेशन प्रणाली है ताकि 60 किमी/घंटा तक की हवाओं में भी यह ध्वज निरंतर लहराता रहे। मंदिर का मुख्य शिखर 161 फीट ऊँचा है और पूरे परिसर में पाँच भव्य मंडप नृत्य, रंग, सभा, प्रार्थना और कीर्तन स्थापित हैं। गर्भगृह तक पहुँचने के लिए 32 सीढ़ियों वाला भव्य प्रवेश मार्ग है। बाहरी दीवारों पर वाल्मीकि रामायण की 87 शिल्प-कथाएँ और 79 कांस्यकृतियाँ भारत की सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करती हैं।

अयोध्या का राम मंदिर केवल एक स्मारक या धार्मिक स्थल नहीं है-यह भारत की उस सभ्यतागत चेतना का मूर्त रूप है, जिसने समय की असंख्य परीक्षाओं के बावजूद अपने मूल्यों को जीवित रखा। वास्तव में, राम मंदिर का प्रश्न आरंभ से ही किसी एक कालखंड की राजनीतिक विमर्श-सीमा में सीमित विषय नहीं रहा, वह उस सांस्कृतिक भारत का जीवंत संकेत रहा है, जिसके केंद्र बिंदु श्रीराम-मर्यादा, कर्तव्य, न्याय, करुणा और राष्ट्रधर्म-के शाश्वत आदर्श रहे हैं। यही कारण है कि 25 नवंबर, 2025 को राम मंदिर के शिखर पर भगवा ध्वज का आरोहण केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की पुनर्प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक क्षण का सशक्त प्रतीक बन गया।

सुरक्षा, प्रशासन और योगी सरकार की असाधारण तैयारियाँ

ध्वजारोहण समारोह जितना भव्य था, उतनी ही सूक्ष्म और बहुस्तरीय व्यवस्थाएँ भी

की गईं। उत्तर प्रदेश सरकार की तैयारी प्रशासनिक दक्षता का नया मानक बनी। अयोध्या में 12,000 से अधिक पुलिसकर्मियों, NDRF टीमों, ड्रोन-आधारित निगरानी, AI-सक्षम कंट्रोल सेंटर और 5,000 से अधिक CCTV कैमरों की तैनाती की गई। यातायात हेतु विशेष ग्रीन कॉरिडोर भी बनाए गए। इसे हाल के वर्षों का सबसे सुव्यवस्थित धार्मिक आयोजन माना गया। एक ऐतिहासिक उपलब्धि और रामराज्य की झलक के रूप में। योगी सरकार के नेतृत्व में अयोध्या आधुनिक बुनियादी ढाँचे के साथ उभरते वैश्विक नगर में परिवर्तित हो रही है।

संतों, जनजातीय समुदायों और समाज का समावेश

इस आयोजन की सबसे सुंदर विशेषता उसकी समावेशिता थी। जनजातीय समूह, डोम समुदाय के प्रतिनिधि, दूरस्थ क्षेत्रों से आए श्रद्धालु, संत, विद्वान, जनप्रतिनिधि और लाखों सामान्य नागरिक सभी को इस भव्य समारोह का सक्रिय सहभागी बनाया गया। विविध समाज-घटकों की एकजुट उपस्थिति उस 'रामराज्य दृष्टि' का सजीव रूप थी, जहाँ प्रत्येक समुदाय बिना भेदभाव के साझा सभ्यता-चेतना में जुड़ता है एक दूसरे के सम्मान तथा सहभागिता से समारोह की गरिमा और भी बढ़ जाती है।

उत्तर प्रदेश सरकार की ऐतिहासिक उपलब्धि

25 नवंबर, 2025 का ध्वजारोहण केवल धार्मिक अथवा सांस्कृतिक अवसर भर नहीं था, यह प्रशासन, सुरक्षा-व्यवस्था, आयोजन क्षमता, मूल्य-परक नेतृत्व तथा राष्ट्रीय पुनर्जागरण के समन्वित स्वरूप का सशक्त और जीवंत उदाहरण था। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उ.प्र. सरकार व श्रीराम तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने जिस असाधारण दृढ़ता, दूरदृष्टि और तकनीकी प्रवीणता के साथ इस आयोजन को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया, वह न केवल राज्य, बल्कि पूर्ण राष्ट्र के लिए अनुकरणीय मॉडल के रूप में स्थापित होता है।

अपने संबोधन में मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि अयोध्या में राम मंदिर का ध्वजारोहण समारोह मात्र मंदिर निर्माण के पूर्ण होने का संकेत नहीं है, बल्कि 'राम राज्य' के शाश्वत मूल्यों और आस्था की चिरस्थायी विजय का प्रतीक भी है। उन्होंने इसे 'एक नए युग' के शुभारंभ के रूप में उल्लिखित किया। उन्होंने यह भी कहा कि भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर 140 करोड़ भारतीयों की आस्था, सम्मान और आत्म-गौरव का प्रतीक है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत तथा राज्यपाल आनंदीबेन पटेल के प्रति विशेष कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी गरिमामयी उपस्थिति राष्ट्र एवं धर्म के उत्थान तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण के साझा संकल्पों को नई ऊर्जा प्रदान करती है। साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री एवं आरएसएस प्रमुख को मंदिर के शिखर पर फहराए गए भगवा धर्म-ध्वज की लघु प्रतिकृतियाँ तथा रामलला की प्रतिमा का मॉडल भेंट किया। यह अभिवंदन उन असंख्य व्यक्तियों के बहुमूल्य योगदान की सांकेतिक मान्यता के रूप में देखा गया, जिन्होंने पीढ़ियों तक मंदिर आंदोलन को पूर्णता प्रदान करने हेतु सतत प्रयास किया। मुख्यमंत्री ने मंदिर निर्माण में योगदान देने वाले सभी कर्मयोगियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया।

निष्कर्षतः, उत्तर प्रदेश सरकार के प्रभावी, समन्वित और दूरदर्शी नेतृत्व में सम्पन्न यह ध्वजारोहण केवल राम मंदिर निर्माण की पूर्णता का द्योतक नहीं, बल्कि सुशासन, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय आकांक्षाओं को दिशा देने की राज्य की क्षमता का सशक्त प्रतीक है। राज्य सरकार ने इस ऐतिहासिक आयोजन के प्रत्येक चरण में अभूतपूर्व सुरक्षा-व्यवस्था, आधुनिक तकनीकी प्रबंधन, समन्वित अंतर-विभागीय सहयोग तथा जनभागीदारी का जो सुदृढ़ उदाहरण प्रस्तुत किया, वह सुशासन एवं उत्कृष्ट प्रशासनिक क्षमता का प्रमाण है। यह ध्वज केवल मंदिर के शिखर पर नहीं फहरा अपितु भारत की सामूहिक चेतना के शिखर पर प्रतिष्ठित हुआ, और उत्तर प्रदेश सरकार की प्रतिबद्धता एवं दक्षता का प्रेरक चिह्न बनकर उभरा। ◆

(लेखिका दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से पीएचडी हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं)
मो. : 9205269749

गौरवशाली सभ्यता के निर्माण का नवघोष

–सियाराम पांडेय 'शांत'

अयोध्या पूरी दुनिया को यह बताने-जताने में सक्षम रही है कि व्यक्ति अपने मूल्यों, सिद्धांतों और आदर्शों की बदौलत ही पुरुषोत्तम बनता है। विकसित भारत के निर्माण में राम मंदिर प्रेरणा स्रोत बन सकता है। अयोध्या के राम मंदिर में ही सात और मंदिर बने हैं, जिनमें माता शबरी, निषादराज, माता अहिल्या, महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य और संत तुलसीदास की प्रतिमा स्थापित की गई है। अयोध्या में गिद्धराज जटायु और गिलहरी की मूर्तियां भी बनी हैं, जो सामाजिक विषमता के खिलाफ सघन अर्थ संदेश प्रदान करती हैं। ये मूर्तियां निश्चित रूप से देशवासियों की आस्था को तो मजबूत करती ही हैं, परस्पर मैत्री भाव, कर्तव्य पालन और सामाजिक सद्भाव की अवधारणा को भी आगे बढ़ाती हैं।

ध्वजारोहण के साथ ही अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण पूरा हो गया और इसी के साथ सप्तपुरियों में एक अयोध्या भारत की 'आध्यात्मिक राजधानी' के रूप में प्रतिष्ठित हो गई। वह न केवल राष्ट्र की सामाजिक-सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रगति में मील का पत्थर बनती नजर आई बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना के परम उत्कर्ष की साक्षी भी बनी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुखिया मोहन भागवत और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सान्निध्य में अयोध्या ने आकर्षण और लोक विमर्श का आकाश छुआ। राम मंदिर के शिखर पर भगवा ध्वज लहराते ही पूरा भारत राममय हो उठा। दुनिया भक्ति के महासागर में गोते लगाने लगी। इस ऐतिहासिक क्षण में भगवान राम में आस्था रखने वाले हर सनातनी का हृदय प्रसन्नता से झूम उठा। उसे अद्वितीय संतोष की अनुभूति हुई। धर्मध्वज की स्थापना एक तरह से धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक पुनरुत्थान और गौरवशाली सभ्यता के निर्माण का नवघोष भी है। इसकी स्थापना मात्र से ही दिव्य आनंद का अतिरेक यत्र-तत्र-सर्वत्र देखने को मिला।

राम मंदिर निर्माण की पूर्णता के साथ ही राम भक्तों के सदियों पुराने घाव भर गए। शूल की तरह चुभने वाला पांच सौ साल पुराना दर्द छू मंतर हो गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ध्वजारोहण को उस यज्ञ की परिणति करार दिया, जिसकी अग्नि 500 वर्षों तक प्रज्ज्वलित रही। तमाम झंझावातों और अवरोधों के बाद भी भगवान राम के प्रति उनके भक्तों की असीम आस्था हमेशा बनी रही, क्षण भर के लिए भी डिगी नहीं। उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि आज भगवान श्री राम के गर्भगृह की अनंत ऊर्जा और श्री राम परिवार की दिव्य महिमा, इस धर्म ध्वजा के रूप में, इस दिव्यतम एवं भव्य मंदिर में प्रतिष्ठित हुई है। यह धर्म ध्वजा केवल ध्वज नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। इसका केसरिया रंग, इस पर अंकित सूर्यवंश की महिमा, अंकित पवित्र ॐ और उत्कीर्ण कोविदार वृक्ष रामराज्य की महान गौरव गरिमा के प्रतीक हैं। यह ध्वज संकल्प भी है और सिद्धि भी। यह अगर संघर्ष से सृजन की गाथा है तो सदियों से संचित स्वप्नों का प्रत्यक्षीकरण भी है। अगर यह संतों की तपस्या और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणति है तो यह लोकमंगल और समाज में रामराज्य की पुनर्स्थापना का ठोस आधार भी है।

त्रेतायुग में राम के रूप को देखकर लोगों को ऐसा लगता था जैसे किसी गरीब को निधि मिल गई हो। राम मंदिर के साथ ही अयोध्या को देश-दुनिया के प्यार का खजाना मिल गया है। 'निरखहिं राम रूप अनुरागी। मनहुं रंक निधि लूटन लागी।' बड़ी तादाद में देश-दुनिया से पर्यटक और तीर्थयात्री अयोध्या आ रहे हैं, इससे सदियों से उदास दिख रही अयोध्या में रौनक आई है।

उसके चेहरे पर प्रसन्नता की लहर सी दौड़ गई है। उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम का भेद मिट गया है। सभी दिशाओं से लोग अयोध्या आ रहे हैं और वह भी केवल अपने आराध्य अखंड ब्रह्मांड नायक भगवान श्रीराम के श्रीविग्रह की एक झलक पाने के लिए। राम मंदिर के धर्मध्वज से लोगों को बहुत उम्मीदें हैं। वह इसलिए कि नहीं कि यह एक सामान्य ध्वजा है और मंदिरों की ध्वजा से बड़ी ध्वजा है, बल्कि इसलिए यह उस राम के मंदिर की ध्वजा है जो जीवंत धर्म हैं। रामो विग्रहवान धर्मः। इसलिए यह धर्मध्वजा है जो भगवान राम के आदर्शों और सिद्धांतों की सदियों व सहस्त्राब्दियों तक याद दिलाती रहेगी। दिग्भ्रमित समाज का मार्गदर्शन करती रहेगी। असत्य कुछ समय के लिए प्रभावी हो सकता है। चकाचौंध पैदा कर सकता है। अपना वर्चस्व स्थापित कर सकता है, लेकिन जीत तो हमेशा सत्य की ही होती है। आदर्शों और सिद्धांतों की ही होती है, राम मंदिर पर लहराती ध्वजा इसका बोध जन-जन को कराती रहेगी।

संसार में कर्म और कर्तव्य को ही प्रधानता का संदेश देने वाली यह धर्मध्वजा लोगों को न केवल ईश्वर से जोड़ेगी, बल्कि उन्हें धर्म-कर्म के प्रति हमेशा आस्थावान बनाए रखेगी। यह ध्वजा राम राज्य का प्रतीक है। उस राम राज्य की, जहां कोई विभेद नहीं है। कोई दुखी दरिद्र नहीं था। कोई बुद्धिहीन और कुलक्षण नहीं था। नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोई अबुध न लच्छन हीना। इसलिए उम्मीद की जा सकती है कि यह धर्मध्वजा भेदभाव और पीड़ा से मुक्ति दिलाएगी और समाज में शांति व सुख की प्रेरणा देगी। शास्त्रों में भी कहा गया है कि मंदिर पर लगे ध्वज और शिखर के दर्शन मात्र से ही मंदिर में बैठे आराध्य की कृपा प्राप्त हो जाती है। यह धर्म ध्वजा दूर से ही लोगों को रामलला की जन्मभूमि के दर्शन कराएगी और युगों-युगों तक भगवान श्री राम के आदर्शों व सिद्धांतों को मानवता तक पहुंचाएगी। इसमें किसी भी तरह का संशय नहीं है। अयोध्या सामान्य भूमि नहीं है। यह भगवान राम की जन्मभूमि है। यहां के कण-कण में प्रभु राम का वास है। यह वह भूमि है जहां आदर्श आचरण की शक्ल धारण करते हैं। यहां के राजाओं-महाराजाओं का अपना गौरवशाली इतिहास रहा है। अयोध्या नर को नारायण बनाने वाली भूमि है।

अयोध्या पूरी दुनिया को यह बताने-जताने में सक्षम रही है कि व्यक्ति अपने मूल्यों, सिद्धांतों और आदर्शों की बदौलत ही पुरुषोत्तम बनता है। विकसित भारत के निर्माण में राम मंदिर

प्रेरणा स्रोत बन सकता है। अयोध्या के राम मंदिर में ही सात और मंदिर बने हैं, जिनमें माता शबरी, निषादराज, माता अहिल्या, महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य और संत तुलसीदास की प्रतिमा स्थापित की गई हैं। अयोध्या में गिद्धराज जटायु और गिलहरी की मूर्तियां भी बनी हैं, जो सामाजिक विषमता के खिलाफ सघन अर्थ संदेश प्रदान करती हैं। ये मूर्तियां निश्चित रूप से देशवासियों की आस्था को तो मजबूत करती ही हैं, परस्पर मैत्री भाव, कर्तव्य पालन और सामाजिक सद्भाव की अवधारणा को भी आगे बढ़ाती हैं। राममंदिर पर फहराया गया ध्वज इस बात का संदेश देता है कि भगवान राम को केवल भाव प्रिय है। रामहिं केवल भाव पियारा। तभी तो गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है कि भाव कुभाव अनख आलस हूं। नाम जपत मंगल दिसि दसहूं। शबरी से उन्होंने यही तो कहा था कि मेरे लिए तो भक्ति का नाता ही श्रेष्ठ है। मानहुं एक भगति कर नाता। उनके लिए भक्ति भक्त के जाति-वंश से अधिक प्रिय है। संस्कार उन्हें वंश से ज्यादा भाते हैं और सहयोग को वे शक्ति से भी बड़ा मानते हैं। आज हम भी इसी भावना के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

त्रेतायुग में राम के रूप को देखकर लोगों को ऐसा लगता था जैसे किसी गरीब को निधि मिल गई हो। राम मंदिर के साथ ही अयोध्या को देश-दुनिया के प्यार का खजाना मिल गया है। 'निरखहिं राम रूप अनुरागी। मनहुं रंक निधि लूटन लागी।' बड़ी तादाद में देश-दुनिया से पर्यटक और तीर्थयात्री अयोध्या आ रहे हैं, इससे सदियों से उदास दिख रही अयोध्या में रौनक आई है। उसके चेहरे पर प्रसन्नता की लहर से दौड़ गई है। उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम का भेद मिट गया हैं। सभी दिशाओं से लोग अयोध्या आ रहे हैं और वह भी केवल अपने आराध्य अखंड ब्रह्मांड नायक भगवान श्रीराम के श्रीविग्रह की एक झलक पाने के लिए। राम मंदिर के धर्मध्वज से लोगों को बहुत उम्मीदें हैं। वह इसलिए नहीं कि यह एक सामान्य ध्वजा है और मंदिरों की ध्वजा से बड़ी ध्वजा है बल्कि इसलिए कि यह उस राम के मंदिर की ध्वजा है जो जीवंत धर्म हैं।

भगवान राम को पता था कि धर्म ही समाज और राष्ट्र को जोड़े रख सकता है, इसलिए उन्होंने कभी भी मानवता का धर्म नहीं छोड़ा। वे वर्तमान को सुधारने के पक्षधर थे, जिससे भविष्य सुंदर हो। अयोध्या हर क्षेत्र में विकास का प्रतीक रही है। उसी तर्ज पर एक बार पुनश्च विकसित हो रही है। भगवान राम सर्वोत्तम चरित्र के धनी हैं। सत्य और वीरता के संगम हैं। धर्म मार्गी हैं। लोक-सुख उनके लिए सर्वोपरि है। धैर्य और क्षमा के सागर हैं। ज्ञान और बुद्धि के शिखर हैं। सौम्य हैं तो दृढ़ भी हैं। परम कृतज्ञ हैं। हनुमान के बारे में तो अनेक अवसरों पर उन्होंने कहा कि कपि से उरिन हम नाहीं। वे उत्तम संगति में विश्वास रखते हैं। ऐसा न होता तो वे बालि से दोस्ती करते, सुग्रीव से नहीं, लेकिन उन्हें संसर्ग दोष का ज्ञान था। महाबली होने के बाद भी भगवान राम परम विनम्र हैं। सत्यवादी हैं। सजग, अनुशासित एवं निष्कपट हैं। यह धर्मध्वज इस देश को भगवान राम के इन महनीय गुणों की याद दिलाएगा। भूलकर भी कोई भूल न करने और कर्तव्य पथ पर डटे रहकर हमें सशक्त, दूरदर्शी और विकसित भारत के निर्माण की प्रेरणा देगा।

धर्मध्वज पर अंकित कोविदार वृक्ष हमें यह स्मरण कराता रहेगा कि अपनी जड़ों से अलग होने पर व्यक्ति का गौरव इतिहास के पन्नों में दफन हो जाता है। यह धर्मध्वज इस पर अंकित भगवान सूर्य जहां ज्ञान के आलोक से अनवरत आलोकित होने की प्रेरणा देंगे, वहीं ओम स्वयं को पहचानने और अहं ब्रह्मास्मि का बोध कराने की ताकत देगा। वहीं ध्वज पर अंकित कोविदार वृक्ष देश को अपनी विरासत पर गर्व करना सिखाएगा। भारत लोकतंत्र की जननी है और लोकतंत्र हमारे रक्त संबंधों में है। जिस अयोध्या के शासकों ने जनहित के लिए स्वहित के विचार को हमेशा हाशिये पर रखा, उसी अयोध्या में बना भव्य और दिव्य राम मंदिर लोकमानस को सदैव इस बात की याद दिलाएगा कि भारतीय लोकतंत्र विदेशों से उधार ली गई वस्तु हरगिज नहीं है बल्कि यहां लोगों की राय मायने रखती रही है। यहां के राजा पंचों यानी

समाज की रायको अहमियत देकर ही कोई निर्णय करते थे। जौ पंचहि मत लागै नीका।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस बात में दम है कि त्रेता युग में अयोध्या ने मानवता को उसकी आचार संहिता दी थी और 21वीं सदी में अयोध्या मानवता को विकास का नया मॉडल दे रही है। उस समय अयोध्या अनुशासन का केंद्र थी और अब अयोध्या विकसित भारत की रीढ़ बनकर उभर रही है। उन्होंने विश्वास जताया कि निकट भविष्य में अयोध्या परंपरा और आधुनिकता का संगम बनेगी। सरयू और विकास की धारा यहां एक साथ बहेगी। अयोध्या आध्यात्मिकता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच सामंजस्य स्थापित करेगी। राम पथ, भक्ति पथ और जन्मभूमि पथ मिलकर नई अयोध्या का दर्शन कराएंगे। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने ध्वजारोहण को 'राम राज्य' के ध्वज के शिखर पर पहुंचने का प्रतीक बताया, जो विश्व में शांति और समृद्धि फैलाएगा। उनका मानना है कि यह धर्म, ज्ञान और सुफल को पूरी दुनिया में बांटने वाले भारतवर्ष को खड़ा करने के कार्य की शुरुआत है। यह ध्वजारोहण सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का प्रतीक है, जो भारत को विश्व के लिए मार्गदर्शक शक्ति के रूप में स्थापित करेगा, जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यह धर्मध्वज इस बात का प्रमाण है कि धर्म की ज्योति कभी बुझती नहीं और रामराज्य के सिद्धांत अमर हैं। यह भगवा ध्वज धर्म, सत्यनिष्ठा, सत्य, न्याय और राष्ट्रधर्म का प्रतीक है। राम मंदिर पर ध्वजारोहण एक नए युग की शुरुआत है। भगवान श्री राम का यह भव्य मंदिर 140 करोड़ भारतीयों की आस्था, सम्मान और स्वाभिमान का प्रतीक है। यह पवित्र दिन उन संतों, योद्धाओं और रामभक्तों की अटूट भक्ति को समर्पित है, जिन्होंने पूरा जीवन इस आंदोलन और लंबी लड़ाई को दिया, जिसके परिणामस्वरूप यह मंदिर बना है। कुल मिलाकर इस भव्य और दिव्य आयोजन के चलते अयोध्या देश-दुनिया में चर्चा का विषय बन गई है। राम मंदिर के वास्तु शिल्प पर चर्चा हो रही है तो इस बहाने समाज के सभी वर्गों को जोड़ने की पहल की भी सर्वत्र सराहना हो रही है। राम मंदिर के निर्माण के साथ ही अयोध्या ही नहीं, पूरी दुनिया और वहां बसे भारतवंशी भगवान राम की कृपा ऊर्जा से अनुप्राणित हो रहे हैं। इससे अच्छा सुयोग भला और क्या होगा। अगर यह कहें कि 25 नवंबर और विवाह पंचमी की तिथि इतिहास में दर्ज हो गई है तो कदाचित कोई अत्युक्ति नहीं होगी। ◆

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार व साहित्यकार हैं)
मो. : 7459998968

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नजरों में अयोध्या

-सुनील राय

आज अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष-बिंदु की साक्षी बन रही है। आज पूरा भारत और पूरा विश्व भगवान श्री राम की भावना से ओतप्रोत है। प्रत्येक राम भक्त के हृदय में अद्वितीय संतोष, असीम कृतज्ञता और अपार दिव्य आनंद है। सदियों पुराने घाव भर रहे हैं, सदियों का दर्द समाप्त हो रहा है और सदियों का संकल्प आज सिद्ध हो रहा है। यह उस यज्ञ की परिणति है जिसकी अग्नि 500 वर्षों तक प्रज्वलित रही, एक ऐसा यज्ञ जिसकी आस्था कभी डगमगाई नहीं, आस्था क्षण भर के लिए भी खंडित नहीं हुई। आज भगवान श्री राम के गर्भगृह की अनंत ऊर्जा और श्री राम परिवार की दिव्य महिमा, इस धर्म ध्वजा के रूप में, इस दिव्यतम एवं भव्य मंदिर में प्रतिष्ठित हुई है।

यह धर्म ध्वजा केवल एक ध्वज नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। इसका केसरिया रंग, इस पर अंकित सूर्यवंश की महिमा, अंकित पवित्र ऊँ और उत्कीर्ण कोविदार वृक्ष, रामराज्य की महानता के प्रतीक हैं। यह ध्वज संकल्प है, यह ध्वज सिद्धि है, यह ध्वज संघर्ष से सृजन की गाथा है, यह ध्वज सदियों से संजोए गए स्वप्नों का साकार रूप है, और यह ध्वज संतों की तपस्या और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणति है।

आने वाली सदियों और सहस्राब्दियों तक, यह धर्म ध्वज भगवान राम के आदर्शों और सिद्धांतों का उद्घोष करेगा, यह आह्वान करेगा कि विजय केवल सत्य की होती है, असत्य की नहीं। यह उद्घोषणा करेगा कि सत्य स्वयं ब्रह्म का रूप है और सत्य में ही धर्म की स्थापना होती है। यह धर्म ध्वज जो कहा गया है उसे अवश्य पूरा करने के संकल्प को प्रेरित करेगा। यह संदेश देगा कि संसार में कर्म और कर्तव्य को ही प्रधानता देनी चाहिए। यह भेदभाव और पीड़ा से मुक्ति और समाज में शांति और सुख की उपस्थिति की कामना व्यक्त करेगा। यह धर्म ध्वज हमें इस संकल्प के लिए प्रतिबद्ध करेगा कि हमें एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहां कोई गरीबी न हो और कोई भी दुखी या असहाय न हो।

जो लोग किसी भी कारण से मंदिर में नहीं आ पाते, लेकिन उसकी ध्वजा के आगे झुकते हैं, उन्हें भी समान पुण्य प्राप्त होता है। यह धर्म ध्वजा मंदिर के उद्देश्य का प्रतीक है और दूर से ही यह रामलला की जन्मभूमि के दर्शन कराती रहेगी और युगों-युगों तक भगवान श्री राम के आदेशों और प्रेरणाओं को मानवता तक पहुंचाती रहेगी।

अयोध्या वह भूमि है जहां आदर्श आचरण में बदलते हैं। यही वह नगरी है जहां से श्री राम ने अपनी जीवन यात्रा शुरू की थी। अयोध्या ने दुनिया को दिखाया कि कैसे एक व्यक्ति, समाज और उसके मूल्यों की शक्ति से पुरुषोत्तम बनता है। जब श्री राम वनवास के लिए अयोध्या से निकले थे, तो वे युवराज राम थे, लेकिन जब वे लौटे, तो वे 'मर्यादा पुरुषोत्तम' बनकर लौटे। श्री राम के मर्यादा पुरुषोत्तम बनने में महर्षि वशिष्ठ का ज्ञान, महर्षि विश्वामित्र की दीक्षा, महर्षि अगस्त्य का मार्गदर्शन, निषादराज की मित्रता, माता शबरी का स्नेह और भक्त हनुमान की भक्ति, सभी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह धर्म ध्वजा केवल एक ध्वज नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। इसका केसरिया रंग, इस पर अंकित सूर्यवंश की महिमा, अंकित पवित्र ॐ और उत्कीर्ण कोविदार वृक्ष, रामराज्य की महानता के प्रतीक हैं। यह ध्वज संकल्प है, यह ध्वज सिद्धि है, यह ध्वज संघर्ष से सृजन की गाथा है, यह ध्वज सदियों से संजोए गए स्वप्नों का साकार रूप है, और यह ध्वज संतों की तपस्या और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणति है।

राम मंदिर का दिव्य प्रांगण भारत के सामूहिक सामर्थ्य की भी चेतना स्थली बन रहा है। यहां सात मंदिर निर्मित हैं, जिनमें माता शबरी का मंदिर भी शामिल है, जो आदिवासी समुदाय की प्रेम और आतिथ्य परंपराओं का प्रतीक है। जो उस मैत्री का साक्षी है जो साधनों की नहीं, बल्कि उद्देश्य और भावना की पूजा करती है। एक ही स्थान पर माता अहिल्या, महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य और संत तुलसीदास विराजमान हैं, जिनकी रामलला के साथ उपस्थिति भक्तों को उनके दर्शन कराती है। ये मंदिर हमारी आस्था को मजबूत करने के साथ-साथ मैत्री, कर्तव्य और सामाजिक सद्भाव के मूल्यों को भी सशक्त बनाते हैं।

हमारे राम भेद से नहीं, भाव से जुड़ते हैं। पिछले 11 वर्षों में महिलाओं, दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों, वंचितों, किसानों, श्रमिकों और युवाओं समाज के हर वर्ग को विकास के केंद्र में रखा गया है। जब राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक क्षेत्र सशक्त होगा, तो सभी का प्रयास संकल्प की पूर्ति में योगदान देगा, और इन्हीं सामूहिक प्रयासों से 2047 तक एक विकसित भारत का निर्माण होगा।

जो लोग केवल वर्तमान के बारे में सोचते हैं, वे आने वाली पीढ़ियों के साथ अन्याय करते हैं, और हमें केवल आज के बारे में ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के बारे में भी सोचना चाहिए, क्योंकि राष्ट्र हमसे पहले भी था और हमारे बाद भी रहेगा। हम एक जीवंत समाज हैं, हमें दूरदृष्टि के साथ काम करना होगा, हमें आने वाले दशकों, आने वाली सदियों को ध्यान में रखना ही होगा। इसके लिए हमें भगवान राम से सीखना होगा-उनके व्यक्तित्व को समझना होगा, उनके आचरण को अपनाना होगा, और यह याद रखना होगा कि राम आदर्शों, अनुशासन और जीवन के सर्वोच्च चरित्र के प्रतीक हैं। राम सत्य और वीरता के संगम हैं, धर्म के मार्ग पर चलने के साक्षात स्वरूप हैं, लोक-सुख को सर्वोपरि रखने वाले हैं, धैर्य और क्षमा के सागर हैं, ज्ञान और बुद्धि के शिखर हैं, सौम्यता में दृढ़ता, कृतज्ञता का सर्वोच्च उदाहरण हैं, उत्तम संगति के वरणकर्ता हैं, महाबल में विनम्रता हैं, सत्य का अटूट संकल्प हैं और सजग, अनुशासित एवं निष्कपट मन हैं।

राम सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, राम एक मूल्य हैं, एक मर्यादा हैं, एक दिशा हैं। यदि भारत को 2047 तक विकसित बनाना हैं, अगर समाज को सामर्थ्यवान बनाना है, तो हमे अपने भीतर ''राम'' को जगाना होगा। हमारे हृदय में प्रतिष्ठित करना होगा। ऐसा संकल्प लेने के लिए आज से बेहतर कोई दिन नहीं हो

सकता। 25 नवंबर हमारी विरासत पर गर्व का एक और असाधारण क्षण लेकर आया है, जिसका प्रतीक धर्म ध्वज पर अंकित कोविदार वृक्ष है। कोविदार वृक्ष हमें याद दिलाता है कि जब हम अपनी जड़ों से अलग हो जाते हैं, तो हमारा गौरव, इतिहास के पन्नों में दफन हो जाता है।

जब भरत अपनी सेना के साथ चित्रकूट पहुंचे और लक्ष्मण ने दूर से ही अयोध्या की सेना को पहचान लिया। लक्ष्मण ने राम से कहा था कि एक विशाल वृक्ष जैसा दीप्तिमान, ऊंचा ध्वज

अयोध्या का है, जिस पर कोविदार का शुभ प्रतीक अंकित है। आज, जब राम मंदिर के प्रांगण में कोविदार की पुन: प्राण-प्रतिष्ठा हो रही है, तो यह केवल एक वृक्ष की वापसी नहीं है, बल्कि स्मृति की वापसी, पहचान का पुनरुत्थान और एक गौरवशाली सभ्यता का नवघोष है। कोविदार हमें याद दिलाता है कि जब हम अपनी पहचान भूल जाते हैं, तो हम स्वयं को खो देते हैं, लेकिन जब पहचान लौटती है, तो राष्ट्र का आत्मविश्वास भी लौटता है।

190 साल पहले, 1835 में, मैकाले नामक एक अंग्रेज संसदविद ने भारत को उसकी जड़ों से उखाड़ फेंकने का बीज बोया और मानसिक गुलामी की नींव रखी। 2035 में उस घटना को दो सौ साल पूरे हो जाएंगे और आने वाले दस साल भारत को इस मानसिकता से मुक्त करने के लिए समर्पित होने चाहिए। सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि मैकाले के विचारों का व्यापक प्रभाव पड़ा। भारत को स्वतंत्रता तो मिली, लेकिन हीन भावना से मुक्ति नहीं मिली। एक विकृति फैल गई, जहां हर विदेशी चीज को श्रेष्ठ माना जाने लगा, जबकि हमारी अपनी परंपराओं और प्रणालियों को केवल दोष की दृष्टि से देखा जाने लगा।

उत्तरी तमिलनाडु के उत्तिरामेरुर गांव जहां एक हजार साल पुराने शिलालेख में बताया गया है कि उस युग में भी शासन कैसे लोकतांत्रिक तरीके से चलाया जाता था और लोग अपने शासक कैसे चुनते थे। मैग्ना कार्टा की तो व्यापक प्रशंसा की जाती थी, लेकिन भगवान बसवन्ना के अनुभव मंडप के ज्ञान को सीमित रखा गया था। अनुभव मंडप एक ऐसा मंच था जहां सामाजिक,

धार्मिक और आर्थिक मुद्दों पर सार्वजनिक रूप से बहस होती थी और सामूहिक सहमति से निर्णय लिए जाते थे। गुलामी की मानसिकता के कारण, भारत की पीढ़ियां अपनी लोकतांत्रिक परंपराओं के ज्ञान से वंचित रहीं।

गुलामी की मानसिकता हमारी व्यवस्था के हर कोने में समा गई है। सदियों से भारतीय नौसेना के ध्वज पर ऐसे प्रतीक अंकित थे जिनका भारत की सभ्यता, शक्ति या विरासत से कोई संबंध नहीं था। अब नौसेना के ध्वज से गुलामी के हर प्रतीक को हटा दिया गया है और छत्रपति शिवाजी महाराज की विरासत को स्थापित किया गया है। यह केवल स्वरूप में परिवर्तन नहीं, बल्कि मानसिकता में परिवर्तन का क्षण है, एक ऐसी घोषणा कि भारत अब अपनी शक्ति को दूसरों की विरासत से नहीं, बल्कि अपने प्रतीकों से परिभाषित करेगा।

अयोध्या वह भूमि है जहां आदर्श आचरण में बदलते हैं। यही वह नगरी है जहां से श्री राम ने अपनी जीवन यात्रा शुरू की थी। अयोध्या ने दुनिया को दिखाया कि कैसे एक व्यक्ति, समाज और उसके मूल्यों की शक्ति से पुरुषोत्तम बनता है। जब श्री राम वनवास के लिए अयोध्या से निकले थे, तो वे युवराज राम थे, लेकिन जब वे लौटे, तो वे 'मर्यादा पुरुषोत्तम' बनकर लौटे। श्री राम के मर्यादा पुरुषोत्तम बनने में महर्षि वशिष्ठ का ज्ञान, महर्षि विश्वामित्र की दीक्षा, महर्षि अगस्त्य का मार्गदर्शन, निषादराज की मित्रता, माता शबरी का स्नेह और भक्त हनुमान की भक्ति, सभी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यही परिवर्तन आज अयोध्या में भी दिखाई दे रहा है। यही गुलामी की मानसिकता थी जिसने इतने वर्षों तक रामत्व के सार को नकार दिया। ओरछा के राजा राम से लेकर रामेश्वरम के भक्त राम तक, शबरी के प्रभु राम से लेकर मिथिला के पहुना राम जी तक, भगवान राम, स्वयं में एक संपूर्ण मूल्य-व्यवस्था हैं। राम हर घर में, हर भारतीय के हृदय में और भारत के कण-कण में विराजमान हैं। गुलामी की मानसिकता इतनी हावी हो गई कि भगवान राम को भी काल्पनिक घोषित कर दिया गया।

अगर हम अगले दस वर्षों में खुद को गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त करने का संकल्प लें, तो आत्मविश्वास की ऐसी ज्योति प्रज्वलित होगी कि 2047 तक विकसित भारत के स्वप्न को साकार होने से कोई भी ताकत नहीं रोक पाएगी।

आने वाले हजार वर्षों के लिए भारत की नींव तभी मजबूत होगी जब अगले एक दशक में मैकाले की मानसिक गुलामी की परियोजना पूरी तरह ध्वस्त हो जाएगी। अयोध्या में रामलला मंदिर परिसर और भी भव्य होता जा रहा है और अयोध्या का चर्तुमुखी विकास तेजी से जारी है। अयोध्या एक बार फिर दुनिया के लिए एक मिसाल बनने वाला शहर बन रहा है। त्रेता युग में अयोध्या ने मानवता को उसकी आचार

संहिता दी थी और 21वीं सदी में अयोध्या मानवता को विकास का एक नया मॉडल दे रही है। तब अयोध्या अनुशासन का केंद्र थी और अब अयोध्या एक विकसित भारत की रीढ़ बनकर उभर रही है।

भविष्य में अयोध्या परंपरा और आधुनिकता का संगम होगी, जहां सरयू का पावन प्रवाह और विकास की धारा एक साथ बहेगी। अयोध्या आध्यात्मिकता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच सामंजस्य स्थापित करेगी। राम पथ, भक्ति पथ और जन्मभूमि पथ मिलकर एक नई अयोध्या का दर्शन कराते हैं। जहां वंदे भारत और अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनें अयोध्या को देश के बाकी हिस्सों से जोड़ती हैं। अयोध्या के लोगों को सुविधाएं प्रदान करने और उनके जीवन में समृद्धि लाने के लिए निरंतर काम किया जा रहा है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद से लगभग 45 करोड़ श्रद्धालु दर्शन के लिए आ चुके हैं, जिससे अयोध्या और आसपास के क्षेत्रों के लोगों की आय में वृद्धि हुई है। एक समय अयोध्या विकास के मानकों पर पिछड़ी हुई थी, लेकिन आज यह उत्तर प्रदेश के अग्रणी शहरों में से एक के रूप में उभर रही है।

स्वतंत्रता के बाद के 70 वर्षों में भारत दुनिया की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया, लेकिन पिछले 11 वर्षों में ही भारत 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। वह दिन दूर नहीं, जब भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी बन जाएगा। आने वाला समय नए अवसरों और नई संभावनाओं का है और इस महत्वपूर्ण अवधि में भगवान राम के विचार राष्ट्र को प्रेरित करते रहेंगे। जब भगवान श्री राम ने रावण पर विजय की महान चुनौती का सामना किया, तो रथ के पहिये वीरता और धैर्य थे, ध्वज सत्य और सदाचार था, अश्व बल, बुद्धि, संयम और परोपकार थे, और लगाम क्षमा, करुणा और समता थी, जिसने रथ को सही दिशा में आगे बढ़ाया।

विकसित भारत की यात्रा को गति देने के लिए ऐसे रथ की आवश्यकता है जिसके पहिए वीरता और धैर्य से संचालित हों, अर्थात चुनौतियों का सामना करने का साहस और परिणाम प्राप्त होने तक अडिग रहने का धैर्य। इस रथ का ध्वज सत्य और सर्वोच्च आचरण होना चाहिए, अर्थात नीति, नीयत और नैतिकता से कभी समझौता नहीं किया जाना चाहिए। इस रथ के घोड़े बल, बुद्धि, अनुशासन और परोपकार होने चाहिए, अर्थात शक्ति, बुद्धि, संयम और दूसरों की सेवा की भावना होनी चाहिए। इस रथ की लगाम क्षमा, करुणा और समता होनी चाहिए, अर्थात सफलता में अहंकार नहीं होना चाहिए और असफलता में भी दूसरों के प्रति सम्मान होना चाहिए। यह क्षण कंधे से कंधा मिलाकर चलने, गति बढ़ाने और रामराज्य से प्रेरित भारत के निर्माण का है। यह तभी संभव है जब राष्ट्रहित, स्वार्थ से ऊपर रहे। ◆

(लेखक पत्रकार हैं)
मो. : 9415132728

भारतबोध का प्रतीक है श्रीराम मंदिर का ध्वज

–डॉ. सौरभ मालवीय

अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भारतीयों का स्वप्न था। इस स्वप्न को साकार करने के लिए भारतीय जनता पार्टी को लंबा संघर्ष करना पड़ा। जब भाजपा केंद्र की सत्ता में आई और नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने न्यायालय में चल रहे प्रकरण की सुनवाई तीव्र गति से करवाई। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी उनके साथ खड़े रहे। मोदीजी और योगीजी के अथक प्रयासों से राम मंदिर का निर्माण हुआ और विगत 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक डॉ. मोहनराव भागवत ने अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के शिखर पर विधिवत मन्त्रोच्चार के साथ धर्मध्वजा की पुनर्स्थापना की।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के अध्यक्ष महन्त नृत्य गोपालदास जी महाराज उपस्थित रहे। इसके पूर्व प्रधानमंत्री ने सप्त मंदिर महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, महर्षि वाल्मीकि, देवी अहिल्या, निषादराज गुह, माता शबरी, शेषावतार मन्दिर तथा माता अन्नपूर्णा देवी मन्दिर में दर्शन-पूजन किया। इसके उपरान्त प्रधानमंत्री एवं डॉ. मोहनराव भागवत ने श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में पूजा-अर्चना की।

इस अवसर पर समारोह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष-बिंदु की साक्षी बन रही है। आज पूरा भारत और पूरा विश्व भगवान श्री राम की भावना से ओतप्रोत है। प्रत्येक राम भक्त के हृदय में अद्वितीय संतोष, असीम कृतज्ञता और अपार दिव्य आनंद है। सदियों पुराने घाव भर रहे हैं, सदियों का दर्द समाप्त हो रहा है और सदियों का संकल्प आज सिद्ध हो रहा है। यह उस यज्ञ की परिणति है जिसकी अग्नि पांच सौ वर्षों तक प्रज्वलित रही, एक ऐसा यज्ञ जिसकी आस्था कभी डगमगाई नहीं, आस्था क्षण भर के लिए भी खंडित नहीं हुई। आज भगवान श्री राम के गर्भगृह की अनंत ऊर्जा और श्री राम परिवार की दिव्य महिमा, इस धर्म ध्वजा के रूप में, इस दिव्यतम एवं भव्य मंदिर में प्रतिष्ठित हुई है।

यह धर्म ध्वजा केवल एक ध्वज नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। इसका केसरिया रंग, इस पर अंकित सूर्यवंश की महिमा, अंकित पवित्र ॐ और उत्कीर्ण कोविदार वृक्ष, रामराज्य की महानता के प्रतीक हैं। यह ध्वज संकल्प है, यह ध्वज सिद्धि है, यह ध्वज संघर्ष से सृजन की गाथा है, यह ध्वज सदियों से संजोए गए स्वप्नों का साकार रूप है और यह ध्वज संतों की तपस्या और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणति है।

आने वाली सदियों और सहस्राब्दियों तक, यह धर्म ध्वज भगवान राम के आदर्शों और सिद्धांतों का उद्घोष करेगा कि सत्य स्वयं ब्रह्म का रूप है और सत्य में ही धर्म की स्थापना होती है। यह संदेश देगा कि संसार में कर्म और कर्तव्य को ही प्रधानता देनी चाहिए। यह भेदभाव पीड़ा से मुक्ति और समाज में शांति और सुख की उपस्थिति की कामना व्यक्त करेगा। यह धर्म ध्वज हमें इस संकल्प के लिए प्रतिबद्ध करेगा कि हमें एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहां कोई गरीब न हो। कोई भी दुखी या असहाय न हो।

राम आदर्शों, अनुशासन और जीवन के सर्वोच्च चरित्र के प्रतीक हैं। राम सत्य और वीरता के संगम हैं, धर्म के मार्ग पर चलने के साक्षात स्वरूप हैं, लोक-सुख को सर्वोपरि रखने वाले हैं, धैर्य और क्षमा के सागर हैं, ज्ञान और बुद्धि के शिखर हैं, सौम्यता में दृढ़ता, कृतज्ञता का सर्वोच्च उदाहरण हैं, उत्तम संगति के वरणकर्ता हैं, महाबल में विनम्रता हैं, सत्य का अटूट संकल्प हैं और सजग, अनुशासित एवं निष्कपट मन हैं। उन्होंने कहा कि राम के ये गुण हमें सशक्त, दूरदर्शी और स्थायी भारत के निर्माण में मार्गदर्शन प्रदान करें।

उन्होंने कहा कि अयोध्या वह भूमि है जहां आदर्श आचरण में बदलते हैं। यही वह नगरी है जहां से श्री राम ने अपनी जीवन यात्रा शुरू की थी। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि अयोध्या ने दुनिया को दिखाया कि कैसे एक व्यक्ति, समाज और उसके मूल्यों की शक्ति से पुरुषोत्तम बनता है। उन्होंने स्मरण किया कि जब श्री राम वनवास के लिए अयोध्या से निकले थे, तो वे युवराज राम थे, लेकिन जब वे लौटे, तो वे 'मर्यादा पुरुषोत्तम' बनकर लौटे। श्री राम के मर्यादा पुरुषोत्तम बनने में महर्षि वशिष्ठ का ज्ञान, महर्षि विश्वामित्र की दीक्षा, महर्षि अगस्त्य का मार्गदर्शन, निषादराज की मित्रता, माता शबरी का स्नेह और भक्त हनुमान की भक्ति, सभी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने कहा कि जो लोग केवल वर्तमान के बारे में सोचते हैं, वे आने वाली पीढ़ियों के साथ अन्याय करते हैं। हमें केवल आज के बारे में ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के बारे में भी सोचना चाहिए, क्योंकि राष्ट्र हमसे पहले भी था और हमारे बाद भी रहेगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि हम जीवंत समाज हैं, हमें दूरदृष्टि के साथ काम करना होगा, हमें आने वाले दशकों, आने वाली सदियों को ध्यान में रखना ही होगा। इसके लिए हमें भगवान राम से सीखना होगा-उनके व्यक्तित्व को समझना होगा, उनके आचरण को अपनाना होगा और यह याद रखना होगा कि राम आदर्शों, अनुशासन और जीवन के सर्वोच्च चरित्र के प्रतीक हैं। राम सत्य और वीरता के संगम हैं, धर्म के मार्ग पर चलने के साक्षात स्वरूप हैं, लोक-सुख को सर्वोपरि रखने वाले हैं, धैर्य और क्षमा के सागर हैं, ज्ञान और बुद्धि के शिखर हैं, सौम्यता में दृढ़ता, कृतज्ञता का सर्वोच्च उदाहरण हैं, उत्तम संगति के वरणकर्ता हैं, महाबल में विनम्रता हैं, सत्य का अटूट संकल्प हैं और सजग, अनुशासित एवं निष्कपट मन हैं। उन्होंने कहा कि राम के ये गुण हमें सशक्त, दूरदर्शी और स्थायी भारत के निर्माण में मार्गदर्शन प्रदान करें।

उन्होंने कहा कि राम सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, राम एक मूल्य हैं, एक मर्यादा हैं, एक दिशा हैं। यदि भारत को विकसित बनाना है, अगर समाज को सामर्थ्यवान बनाना है, तो हमें अपने भीतर ''राम'' को जगाना होगा। हमारे हृदय में प्रतिष्ठित करना होगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि ऐसा संकल्प लेने के लिए आज से बेहतर कोई दिन नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि 25 नवंबर

हमारी विरासत पर गर्व का एक और असाधारण क्षण लेकर आया है, जिसका प्रतीक धर्म ध्वज पर अंकित कोविदार वृक्ष है।

उन्होंने कहा कि विकसित भारत की यात्रा को गति देने के लिए ऐसे रथ की आवश्यकता है जिसके पहिए वीरता और धैर्य से संचालित हों, अर्थात चुनौतियों का सामना करने क ा

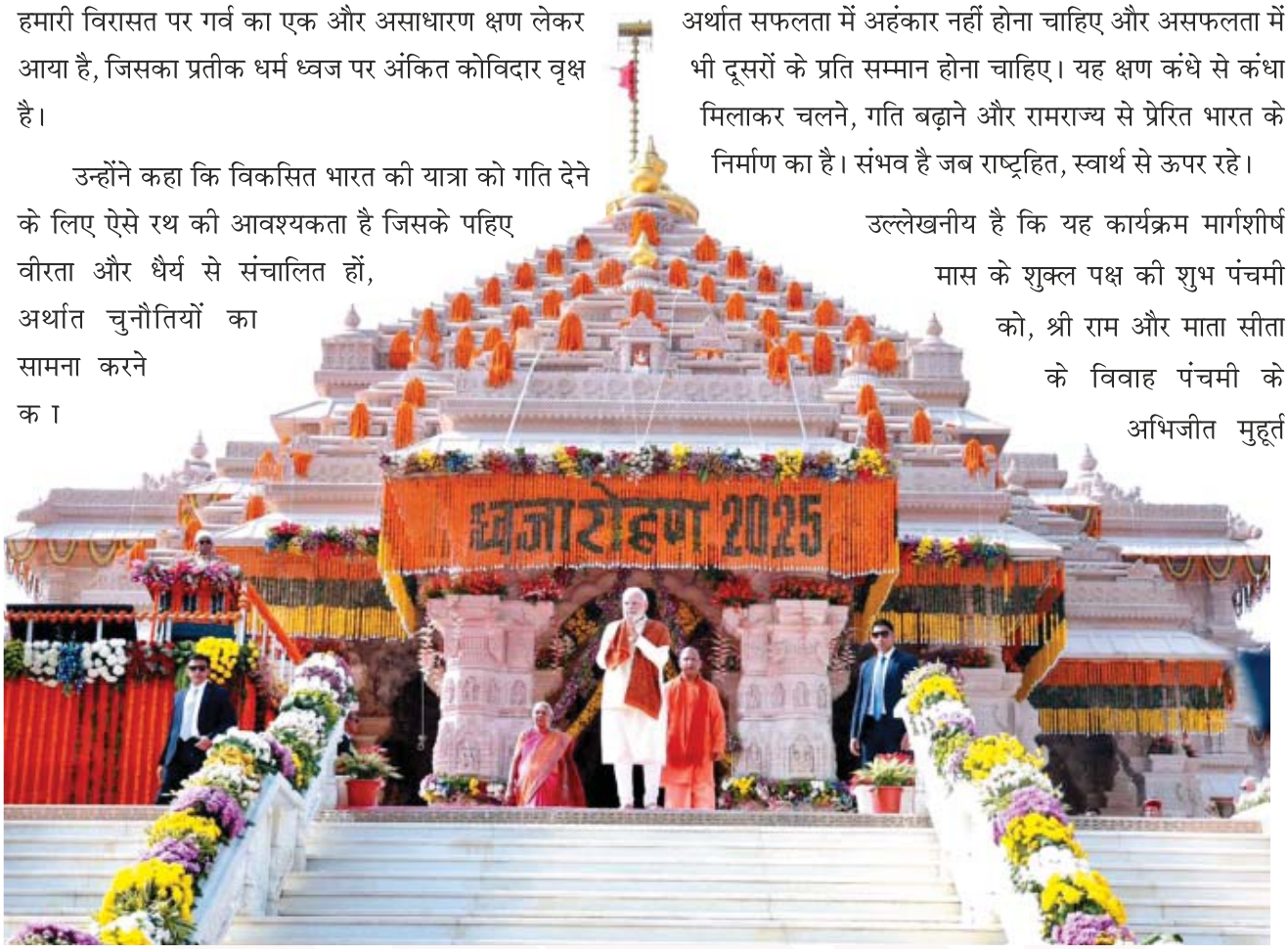

साहस और परिणाम प्राप्त होने तक अडिग रहने का धैर्य। इस रथ का ध्वज सत्य और सर्वोच्च आचरण होना चाहिए, अर्थात नीति, नीयत और नैतिकता से कभी समझौता नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस रथ के घोड़े बल, बुद्धि, अनुशासन और परोपकार होने चाहिए, अर्थात शक्ति, बुद्धि, संयम और दूसरों की सेवा की भावना होनी चाहिए। इस रथ की लगाम क्षमा, करुणा और समता होनी चाहिए, अर्थात सफलता में अहंकार नहीं होना चाहिए और असफलता में भी दूसरों के प्रति सम्मान होना चाहिए। यह क्षण कंधे से कंधा मिलाकर चलने, गति बढ़ाने और रामराज्य से प्रेरित भारत के निर्माण का है। संभव है जब राष्ट्रहित, स्वार्थ से ऊपर रहे।

आने वाली सदियों और सहस्राब्दियों तक, यह धर्म ध्वज भगवान राम के आदर्शों और सिद्धांतों का उद्घोष करेगा कि सत्य स्वयं ब्रह्म का रूप है और सत्य में ही धर्म की स्थापना होती है। यह संदेश देगा कि संसार में कर्म और कर्तव्य को ही प्रधानता देनी चाहिए। यह भेदभाव और पीड़ा से मुक्ति और समाज में शांति और सुख की उपस्थिति की कामना व्यक्त करेगा। यह धर्म ध्वज हमें इस संकल्प के लिए प्रतिबद्ध करेगा कि हमें एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहां कोई गरीब न हो और कोई भी दुखी या असहाय न हो।

उल्लेखनीय है कि यह कार्यक्रम मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की शुभ पंचमी को, श्री राम और माता सीता के विवाह पंचमी के अभिजीत मुहूर्त के साथ दिव्य मिलन के प्रतीक दिवस के रूप में आयोजित किया गया है। दस फुट ऊंचे और बीस फुट लंबे समकोण त्रिभुजाकार ध्वज पर भगवान श्री राम के तेज और पराक्रम का प्रतीक एक दीप्तिमान सूर्य की छवि अंकित है, जिस पर 'ऊँ' अंकित है और कोविदार वृक्ष की छवि भी अंकित है। यह पवित्र भगवा ध्वज राम राज्य के आदर्शों को साकार करते हुए गरिमा, एकता

और सांस्कृतिक निरन्तरता का संदेश देगा। ध्वज पारंपरिक उत्तर भारतीय नागर स्थापत्य शैली में निर्मित शिखर के ऊपर फहराया जाएगा, जबकि मंदिर के चारों ओर निर्मित आठ सौ मीटर का परकोटा, जो दक्षिण भारतीय स्थापत्य परंपरा में डिजाइन किया गया है, मंदिर की स्थापत्य विविधता को प्रदर्शित करता है।

मंदिर परिसर में मुख्य मंदिर की बाहरी दीवारों पर वाल्मीकि रामायण पर आधारित भगवान श्री राम के जीवन से जुड़े 87 जटिल रूप से तराशे गए पत्थर के प्रसंग और परिसर की दीवारों पर भारतीय संस्कृति से जुड़े 79 कांस्य-ढाल वाले प्रसंग अंकित हैं। ये सभी तत्व मिलकर सभी आगंतुकों को सार्थक और शिक्षाप्रद अनुभव प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें भगवान श्री राम के जीवन और भारत की सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री ने 5 अगस्त, 2020 को अयोध्या में राम जन्मभूमि पर राम मंदिर का शिलान्यास किया था तथा रामलला की पूजा-अर्चना की थी। राम मंदिर के निर्माण के लिए भूमि पूजन के पश्चात यह प्रथम अवसर था, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अयोध्या आए थे। दीपोत्सव समारोह के लिए अयोध्या पहुंचने के तुरंत पश्चात वह राम मंदिर गए थे। उन्होंने राम मंदिर के निर्माण कार्य का भी निरीक्षण किया तथा प्रगति की जानकारी ली। ◆

(लेखक लखनऊ वि.वि. में पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष हैं)
मो. : 8750820740

लोकजीवन में रचे-बसे राम

-डॉ. रविशंकर पांडेय

भारतीय संस्कृति के महानायक भगवान श्री राम अयोध्या स्थित अपने नवनिर्मित मंदिर में रामलला के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं।विगत एक वर्ष से अयोध्या के साथ पूरे देश की धर्मप्राण जनता में एक अभूतपूर्व उत्सव और उल्लास का माहौल है। आजकल सोशल मीडिया में श्रीराम को समर्पित तमाम तरह के नित नए भजन देखने और सुनने को मिल रहे हैं। इनमें से एक भजन 'मेरी झोपड़ी के भाग आज जाग जाएंगे, राम आएंगे' विशेष रूप से मुझे आकर्षित करता है। वास्तव में यह भजन देश के आमजन के लोकमानस में रचे-बसे श्रीराम के प्रति उसकी श्रद्धा, भक्ति और समर्पण की एक मार्मिक संवेदना प्रकट करता है। राम यद्यपि चक्रवर्ती राजा दशरथ के पुत्र और अयोध्या के राजकुमार हैं किन्तु देश के लोकमानस में वे सीता के पति और माता कौशल्या के ऐसे पुत्र के रूप में रचे-बसे हैं जो सौतेली मां के कुचक्र के कारण चौदह वर्षों तक वन में भटकते हुए दुर्निवार कष्टों और दु:खों का सामना करने को विवश हुए। इसीलिए समाज की सभी स्त्रियों और माताओं की करुणाजनित सहानुभूति राम और सीता के प्रति अनंत काल से चली आ रही है। इनके लिए राम आज्ञाकारी, एक पत्नीव्रत, संघर्षशील, गरीबनेवाज तथा

अहिल्या व शबरी जैसी असहाय महिलाओं के उद्धारक पहले हैं, राजकुमार और भगवान बाद में। इसीलिए लोक इन्हें आज भी अपनी साधारण सी कुटिया के माध्यम से अपनी स्मृति में स्थायी रूप से बसा लेना चाहता है। भारतीय लोक संस्कृति, लोकजीवन में राम अनंत काल से इतने गहरे रचे-बसे हैं कि जन्म से लेकर मृत्यु तक, सुबह से लेकर शाम तक राम हमारी दिनचर्या में अनिवार्य रूप से समाहित दिखाई देते हैं। राम की लोकव्यापकता अप्रतिम है, अतुलनीय है। इसीलिए अयोध्या के चिरप्रतीक्षित व नवनिर्मित मंदिर में राम के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा में लोक की भागीदारी देखते ही बनती है। देश के विभिन्न हिस्सों से कोई राममंदिर के लिए विशेष अगरबत्ती बना कर भेज रहा है, कोई घंटा बना कर भेज रहा है, कोई रामलला के लिए कपड़े सिलकर भेज रहा है, कोई भोग के लिए चावल तो कोई इत्र भेज रहा है। गोया जिन सामान्य जन को तीर्थ परिषद द्वारा निमंत्रित नहीं भी किया गया है, ऐसे सभी शिल्पकार, श्रमिक और ऋषि संस्कृति से जुड़े लोग अपनी छोटी सी भेंट भेज कर इस महापर्व में परोक्ष रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए लालायित दिखते हैं। अद्भुत है यह श्रद्धा और समर्पण।

वास्तव में राम और सीता के भारतीय लोकमानस और लोकजीवन में इस अद्भुत रचाव-बसाव को समझने के लिए पहले लोक और लोकमानस को समझना जरूरी है। लोक शब्द अपने अर्थ में यद्यपि अत्यंत व्यापक है किन्तु महाभारत में इसे 'जन साधारण' के अर्थ में व्याख्यायित किया गया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि लोक शब्द का अर्थ ग्राम्य या जनपद नहीं है बल्कि गांवों और शहरों की वह समूची आम जनता है जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं हैं। निष्कर्ष यह है कि आमजन के रूप में लोक की परंपरानुमोदित मानसिकता जो किसी शास्त्रीय, शिष्ट संस्कारों अथवा पांडित्य से बंधी नहीं है वही लोकमानस है। यह अतर्क्य, सहज श्रद्धालु, अनुष्ठानी किन्तु अकृत्रिम, अनलंकृत और सहज स्वाभाविक है। लोकमानस की अपनी कुछ विशिष्टताएं हैं। एक तो यह रहस्यशील होता है अर्थात घटित घटनाओं में पराभौतिक शक्तियों का हाथ स्वीकारता है। दूसरी यह कि जीवित और मृत में यह भेद नहीं करता। तीसरा वैशिष्ट्य यह है कि मानवीय गुणों से अनुप्राणित निर्भीक, प्रतिरोधी और पूर्णतया निष्पक्ष होता है।इस लोकमानस की अपनी अलग सांस्कृतिक चेतना होती है, जिसे

लोक संस्कृति कहते हैं। यह अपने को सभ्य, सुसंस्कृत, परिष्कृत और बौद्धिक समझने वाले लोगों से अलग सनातन से चली आ रही परंपरा के प्रवाह में पलने वाली संस्कृति है। लोक-संस्कृति के अंतर्गत लोकगीत, लोककथाएं, कहावतें, रीति-रिवाज,पर्व, त्योहार, व्रत, पूजा, अनुष्ठान, विश्वास, लोकनृत्य, लोक संगीत और लोकभाषा जैसी चीजें आती हैं। रामकथा के सुप्रसिद्ध अध्येता डॉ फादर कामिल बुल्के कहते हैं कि लोक और लोक-संस्कृति की इन विभिन्न विधाओं में राम की स्मृति वाल्मीकि रामायण की रचना से पहले ही विद्यमान थी। यह लोक-संस्कृति भारतीयता की प्राण वायु है। जिस तरह भारत में संस्कृत सहित अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में राम-सीता को लेकर अपनी अपनी कथाएं और आख्यान हैं, वैसे ही सभी लोकभाषाओं व जनजातीय साहित्य में भी तमाम भिन्नताओं सहित राम-सीता के आख्यान आज भी कहे सुने जाते हैं। वाल्मीकि रामायण से भी पूर्व इन्हीं लोकभाषाओं और लोककथाओं में प्रचलित राम के यही विभिन्न आख्यान आज राम और सीता को भारतीय लोकमानस में हजारों सालों से अपने अंदर सहेजे व संजोए हुए है। इन जनजातीय लोकाख्यानों में बिरहोर रामकथा, मुंडारी रामकथा, गढामंडला गोंड जनजातीय रामकथा, कोल जनजातीय रामकथा, भिलोड़ी रामकथा, कमार जनजातीय रामकथा तथा शबर जनजातीय रामकथा आदि महत्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार अपने अपने क्षेत्रों में अपनी लोकभाषाओं में प्रचलित लोकगीतों के माध्यम से आज भी राम और सीता लोकजीवन और लोकमानस में दिन-प्रतिदिन निरंतर विद्यमान और जीवंत बने हुए हैं। मजे की बात यह है कि इन लोकगीतों में वनवासी राम और सीता के प्रति नारी मन की ममता, करुणा और दयालुता की निरंतर एक अजस्र धारा बहती दिखाई देती है। इनमें राम सीता अयोध्या के राजा रानी के रूप में विद्यमान न होकर राजमहल के कुचक्रों से आहत वन वन भटकते बेचारे राम हैं। वे नंगे पांव निबिड़ वन प्रांतर में पत्थरों और वनवासियों के बीच घुल-मिल कर जीवन यापन करने वाले राम हैं। इसी प्रकार सीता जी भले ही राजा जनक की पुत्री व राजा दशरथ की पुत्रवधू हों पर उन्हें भी स्त्री जन्म के सभी तिरस्कार, अपमान और कष्ट सहने पड़े जो एक साधारण स्त्री को भोगने पड़ते हैं। इस प्रसंग में सीता निर्वासन का एक लोकगीत ध्यातव्य है। यह किंचित भाषिक पाठांतर के साथ अवधी, भोजपुरी,

बुंदेली और बघेली बोलियों में मिलता है जो अत्यंत कारुणिक और मार्मिक है – 'एक बन लांघ्यों दुसर बन लांघ्यों तिसरे मां लागिगे पियास। बैइठ भौजी तुम कदम की छइयां मां मैं देखि आवउं बनबास।। लछमन चल देहली अवध की डगरिया सीता बन छाड़ि के हो। कहवां गए लछमन देवरवा हमें न बताइन हो।।' यह लोकगीत किंचित लंबा है जिसमें लक्ष्मण द्वारा सीता को गर्भावस्था के दौरान वन में अकेले छोड़ कर चले जाने का कारुणिक प्रसंग है। इस लोकगीत को सुनकर प्राय: सभी का कंठ अवरुद्ध हो जाता है और बरबस आंखों से आंसू बहने लगते हैं। इन सभी लोकगीतों में राम सीता और लक्ष्मण के प्रति संवेदना का भाव व्यक्त किया गया है। लोकमानस में रचे-बसे ऐसे लोकगीत अत्यंत मार्मिक होते हुए मन को उद्वेलित कर जाते हैं।अवध क्षेत्र के ऐसे ही एक लोकगीत की बानगी और देखिए जिसमें माता कौशल्या के रूप में विश्व की सभी माताएं राम लक्ष्मण और सीता के प्रति सावन भादों की वर्षा को लेकर कितनी चिंतित व परेशान दिखाई देती हैं– 'आज मोहे रघुबर की सुधि आई। कौने बिरछ तरे भीजत होइहैं राम लखन दूनों भाई।। राम बिना मोरी सूनी अयोध्या लखन बिना चतुराई। सीता बिना मोरी सूनी रसोई के मोरा जेवना बनाई।।' इसी प्रकार के तमाम लोकगीत राम सीता और लक्ष्मण की अमर गाथा को हजारों सालों से अपने अंदर सहेजे हुए हैं। लोकमानस कितना सरल, सहज और निर्मल होता है, वहां सांसारिक भेदभाव और सामाजिक विषमता का भाव नहीं है। लोकमानस को यह भी भान नहीं है कि शबरी का आश्रम कहीं और है और गंगा जी वहां से बहुत दूर बहती हैं। मां शबरी भावातिरेक में कहती है कि गंगा जमुनवा से जल भरि लायउं पांव पखारेउं राम हो।

लोकगीतों की भांति उत्तर भारत के विभिन्न अंचलों में आज भी आम जन के मध्य कुछ ऐसे लोकपर्व, व्रत और त्योहार प्रचलित हैं जिनका संबंध राम और सीता से है। अवध और बुंदेलखंड के जनपदों में एक लोकपर्व हलछठ अथवा ललही छठ मनाया जाता है जिसमें महिलाएं पुत्र कल्याण के लिए व्रत रखते हुए पलाश के पत्तों, बेर की झाड़, महुआ और कांसा घास की पूजा करती हैं। इन वनस्पतियों की पूजा के पीछे तर्क यह है कि राम सीता और लक्ष्मण के वनवास से सकुशल अयोध्या वापस

लौटने पर माता कौशल्या ने भावातिरेक में गदगद होकर वनदेवी और इन वनस्पतियों का हृदय से आभार व्यक्त किया और कहा कि इन वनस्पतियों ने मेरे लाड़लों राम लक्ष्मण और बहू सीता को अपने आश्रय व गोद में सुरक्षित रखते हुए वर्षा, शीत तथा घाम से न केवल त्राण दिया बल्कि दिन प्रतिदिन का आहार भी सुलभ कराया है। अत: माता कौशल्या ने सभी पुत्रवती माताओं से यह मार्मिक अपील की है कि जब तक गंगा जमुना में पानी रहेगा तब तक वे ललही छठ के दिन आभार ज्ञापन स्वरूप इन वनस्पतियों की पूजा करती रहें। ज्ञातव्य है कि वचनबद्धता के फलस्वरूप राम सीता चौदह वर्ष वनवास में पलाश व महुआ के पत्तों से पर्णकुटी बनाकर रहे, कुश व कांस की बनी साथरी में सोए, कंद मूल, बेर के फल आदि खाकर पत्तों के दोने में पानी पिया था। कितना मार्मिक प्रसंग है यह। हजारों साल बीत चुके किंतु आज भी ममतामयी कौशल्या माता की यह अपील पुत्रवती माताओं के कानों में गूंजती रहती है। प्रकृति के प्रति यह आभार प्रदर्शन अद्भुत है। जैसे अवधी, भोजपुरी और बुंदेली बोलियों में राम-सीता से संबंधित समय-समय पर गाए जाने वाले संस्कार लोकगीतों की बहुतायत है वैसे ही आदिवासी समाज में भी उनकी बोली भाषा में रामाश्रयी लोकगीतों का प्रचलन कम नहीं है। आखिर इन्हीं आदिवासियों के सहयोग से ही उनके बीच राम सीता का चौदह वर्षीय वनवास जो बीता था। अत: वनवासियों और गिरिवासियों से उनका अपनापन परिजनों जैसा ही प्रगाढ़ है। इन आदिवासी और जनजातीय समुदाय में भी राम और सीता बहुत गहरे रचे बसे हैं। इनके लोकमानस में लोकगीतों के साथ लोकोक्तियां और पहेलियां भी बहुतायत से प्रचलित हैं। उत्तर भारत में प्राय: सभी हिंदी प्रदेशों में विवाह के समय नवविवाहिता जोड़े द्वारा कोहबर में बने देवी देवताओं के पूजन की परंपरा है। घर के किसी अंतरंग कमरे की दीवार पर ऐपन से कई देवी देवताओं के पुतले कलात्मक ढंग से उकेरे जाते हैं जिनकी पूजा करना नवविवाहित जोड़े के लिए पारिवारिक अनुष्ठान के रूप में आवश्यक होता है। इसमें जो पुतले उकेरे जाते हैं उनमें राम-सीता, लक्ष्मण, हनुमान और कुछ स्थानीय देवी देवता, मां दुर्गा व लक्ष्मी होती हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लोकमानस में जितनी लोकव्यापकता और लोक स्वीकृति प्रभु श्रीराम की है उतनी न तो हिन्दू धर्म के तैंतीस कोटि देवताओं में से किसी अन्य की और न कोई पौराणिक व ऐतिहासिक राजपुरुष की है। श्रीराम की इस लोकव्यापकता के अपने कुछ कारण हैं। प्रभु श्रीराम और उनकी भार्या सीता जी का संपूर्ण जीवन संघर्ष और शोक से परिपूर्ण था। जीवन पथ पर संघर्षों से विचलित हुए बिना इन दोनों ने मिलकर मानवीय मूल्यों और उसके आदर्शों को उनकी पराकाष्ठा तक जीकर मर्यादा की एक ऐसी लकीर खींच दी जिसे आज तक कोई लांघ नहीं पाया है। वास्तव में उन्होंने अपने शोक और संघर्ष को लोकहित से जोड़ दिया है। प्रजा की आलोचना को सुनकर प्राणप्रिया पत्नी का परित्याग कर दिया। एक पत्नीव्रती रहते हुए जीवन में दूसरे विवाह की कल्पना तक नहीं की, जबकि उनके पिता के ही तीन रानियां थीं। एक तरफ जहां उनके राज्याभिषेक की तैयारियां चल रही थीं वहीं दूसरे ही क्षण उन्हें चौदह वर्ष कठिन वनवास में जाना पड़ा और उन्होंने सहर्ष उसे स्वीकार किया। राम को इस आदर्श की स्थापना के लिए अपने व्यक्तिगत हितों का बहुत बड़ा बलिदान व त्याग करना पड़ा है।

वन और वनवासी राम को सबसे ज्यादा प्रिय हैं।वन में रहने वाले ऋषि-मुनि भी वहां राम का स्वागत करते हैं किन्तु जो स्नेह वहां के कोल किरातों के मन में राम के प्रति है, वह अद्भुत है। ये किरात जन रामजी के भोजन और उनकी दिनचर्या का बहुत ध्यान रखते हैं। राम निषाद, गीध, शबरी और बंदर-भालुओं को भी अत्यंत प्रिय हैं। ये वास्तव में विपत्ति के समय राम की प्राणपण से सहायता करने वाले हैं। यद्यपि राम राजकुमार थे किन्तु अपनी संघर्ष यात्रा में वे न तो किसी राजा से मिले और न ही किसी राजपुरुष की मदद ली, केवल वानर राज सुग्रीव के अतिरिक्त। अयोध्या लौटने पर बंदर-भालुओं का परिचय कराते हुए गुरु वशिष्ठ से राम कहते हैं कि ये सब मेरे सखा हैं, शोक और संग्राम का सागर पार कराने में इन सबका सहयोग मेरे लिए अविस्मरणीय है। राम दीन-दुखियों और उपेक्षितों के सहायक मात्र नहीं हैं वे स्वयं को उनका सखा कहते हैं।धन्य हैं ऐसे श्री राम जो बिना किसी भेदभाव के सबके लिए मंगलकारी हैं। इसीलिए लोक और लोकमानस ने इन्हें हजारों सालों से अपनी स्मृति में रचा-बसा रखा है। ◆

(लेखक से.नि. पी.सी.एस. अधिकारी हैं)
मो. : 9140852665

अयोध्या धाम : राम मंदिर धर्म ध्वजारोहण : संघर्ष से सिद्धि तक

-विमल किशोर श्रीवास्तव

ध्वज को ऊँचे स्थान पर स्थापित करने का उद्देश्य केवल सजावट नहीं है। प्राचीन शास्त्रों में कहा गया है कि हवा के साथ लहराता ध्वज आकाशीय ऊर्जा का संचरण करता है, यह स्थान को पवित्रता और सुरक्षा प्रदान करता है और मंदिर संकुल को दैवीय स्पंदन से भर देता है। ध्वज का रंग, आकृति और गतिशीलता-ध्यान और साधना को भी प्रेरित करती है।

अयोध्या-यह नाम ही भारतीय संस्कृति के हृदय में पावन स्पंदन उत्पन्न करता है। प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि, धर्म और मर्यादा की प्रेरणा स्थली, और सनातन परंपरा की अनंत धारा का मूल स्रोत। सनातन परंपरा की वह पवित्र भूमि, जहाँ धर्म, इतिहास और आस्था एक-दूसरे में ऐसे गुंफित हैं जैसे नदी और उसका तट। यह वही पवित्र अयोध्या है जहाँ प्रभु श्रीराम ने त्रेता युग में जन्म लिया, तपस्या की और आदर्श जीवन का पथ मानवता को दिखाया। हजारों वर्षों से यह भूमि हिंदू समाज के लिए आध्यात्मिक केंद्र है। यह भूमि धर्म, सत्य और आदर्शों के प्रकाश से जगमगाती है। भारत की सांस्कृतिक चेतना का केंद्र, आस्था का आधार और सभ्यता का प्रतीक रही है। यह भारतीय मनीषा, दर्शन, संस्कृति और अध्यात्म की भी मुख्य धारा का केंद्र रही है। वाल्मीकि रामायण से लेकर तुलसीदास कृत रामचरितमानस तक, करोड़ों भक्तों की प्रार्थनाओं से लेकर संतों की साधना तक यह भूमि सदैव दिव्यता की अनुभूति कराती रही है।

अब जब राम मंदिर के ऊपर धर्म ध्वज का भव्य आरोहण हुआ, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और राज्यपाल की उपस्थिति में तो जब राम मंदिर यह केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि इतिहास के कई पन्नों का पुनर्लेखन था।

इतिहास की धारा में अयोध्या : मूल मंदिर का उल्लेख और प्राचीन गौरव

अयोध्या में स्थित राम जन्मभूमि मंदिर के अस्तित्व के प्रमाण अनेक ऐतिहासिक ग्रंथों, यात्रावृत्तांतों और पुरातात्विक खोजों में प्राप्त होते हैं।

12वीं सदी के लेखा, विदेशी यात्रियों के वर्णन, पुरातात्विक उत्खनन, मंदिर-शैली के अवशेष, इन सभी ने यह प्रमाणित किया कि यहाँ भव्य और प्राचीन मंदिर विद्यमान था।

परंतु इतिहास का एक कठोर अध्याय आरंभ होता है-जब लगभग नौ सौ वर्ष पूर्व अयोध्या धाम, प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि के मूल मंदिर को ध्वंस कर दिया गया और आगे की कई सदियों

तक यह स्थान वैमनस्य, संघर्ष और विश्वास के बीच उलझा रहा। जबकि यह स्थान सदियों से उपासना, ज्ञान और आध्यात्मिक साधना का केंद्र रहा। मंदिर का अस्तित्व केवल पत्थरों की संरचना नहीं था–बल्कि रामकथा और भारतीय संस्कृति का जीता–जागता स्वरूप था।

लगभग नौ सौ वर्ष पूर्व आरंभ हुए संघर्ष न इस भूमि के इतिहास को पीड़ा, धैर्य और असंख्य बलिदानों की गाथा में बदल दिया। यद्यपि इतिहास के इस दु:खद अध्याय में राम जन्मभूमि का प्राचीन मंदिर ध्वस्त किया गया, किंतु हिंदुओं की आस्था को ध्वस्त नहीं किया जा सका और आस्था की लौ सदियों तक अविचल प्रज्ज्वलित रही। यह घटना केवल धार्मिक संरचना को तोड़ना नहीं थी, बल्कि भारतीय संस्कृति के एक मूलाधार पर भी प्रहार था। मूल मंदिर के ध्वंस के पश्चात यह स्थल अनेक शताब्दियों तक संघर्ष और न्याय की प्रतीक्षा में रहा, किंतु जनमानस में रामलला के प्रति श्रद्धा कभी क्षीण नहीं हुई।

संघर्ष और आंदोलन की शौर्यगाथा

मूल मंदिर के विध्वंस के पश्चात हिंदू समाज ने निरंतर इस धाम की मुक्ति के लिये संघर्ष किया। कभी यह संघर्ष सामाजिक प्रयासों के रूप में सामने आया, कभी आंदोलन के रूप में, तो कभी न्यायालयों में सत्य की लड़ाई के रूप में।

19वीं और 20वीं शताब्दी में यह संघर्ष संगठित स्वरूप लेने लगा। अनेक संतों, साधुओं, सामाजिक संगठनों और करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था ने इसे राष्ट्रीय आंदोलन का रूप दे दिया। यह संघर्ष केवल भूमि का संघर्ष नहीं था, बल्कि अपनी संस्कृति, अपने इतिहास और अपने धर्म को पुनर्स्थापित करने का संकल्प था।

हिंदू समाज ने इस पावन भूमि की मुक्ति हेतु अद्‌भुत धैर्य और दृढ़ता के साथ संघर्ष किया। सदियों तक साधु–संतों ने अयोध्या धाम को मुक्त कराने हेतु आंदोलन चलाए।

उन्होंने सत्य, शांति और धर्म के मार्ग पर चलते हुए जन्मभूमि की रक्षा की। साधु–संतों की पदयात्राएँ, सामाजिक आंदोलनों का उदय, ऐतिहासिक तर्क, शोध और सत्य की प्रतिपत्ति–इन सबने इस संघर्ष को युगांतरकारी रूप दिया।

अयोध्या में स्थित राम जन्मभूमि मंदिर के अस्तित्व के प्रमाण अनेक ऐतिहासिक ग्रंथों, यात्रावृतांतों और पुरातात्विक खोजों में प्राप्त होते हैं। 12वीं सदी के लेख, विदेशी यात्रियों के वर्णन, पुरातात्विक उत्खनन, मंदिर-शैली के अवशेष, इन सभी ने यह प्रमाणित किया कि यहाँ एक भव्य और प्राचीन मंदिर विद्यमान था।

न्याय की विजय और पुनर्निर्माण का शुभारंभ

कानूनी संघर्ष कई दशकों तक चला। हजारों दस्तावेज, पुरातात्विक प्रमाण और शोध अदालत में प्रस्तुत किए गए।

अंतत: सर्वोच्च न्यायालय ने इतिहास, साक्ष्यों और न्याय के आधार पर सत्य को प्रतिष्ठित किया और जन्मभूमि को उसका मूल स्वरूप लौटाने का मार्ग प्रशस्त किया। यह निर्णय केवल कानूनी विजय नहीं, बल्कि सत्य की पुनर्स्थापना थी। सर्वोच्च न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णय ने इस भूमि को उसके मूल स्वरूप में पुन: प्रतिष्ठित किया। इसके पश्चात श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का गठन हुआ और भव्य मंदिर निर्माण का महान कार्य आरंभ हुआ।

यह निर्माण केवल वास्तुकला परियोजना नहीं है-यह सांस्कृतिक स्वाभिमान, ऐतिहासिक सत्य और आध्यात्मिक चेतना का पुनर्जन्म है।

धर्म ध्वज का महत्व : आस्था, ऊर्जा और संस्कृति का शाश्वत प्रतीक

भारतीय संस्कृति में ध्वज धर्म का जीवंत रूप माना गया है। ध्वज का उल्लेख वेदों, पुराणों, स्मृतियों और अनेक धर्मग्रंथों में मिलता है। धर्म में ध्वज विजय, संरक्षण, दिव्यता, मर्यादा और दैवीय उपस्थित का प्रतीक माना जाता है।

ध्वज का शास्त्रीय महत्व

वेदों में ध्वज को ''ध्वज: धर्मस्य लक्षणम्'' कहा गया है- अर्थात् ध्वज धर्म का प्रतीक है। पुराणों में मंदिर पर ध्वज फहराना देवता की उपस्थिति, शक्ति और कृपा का सूचक माना गया है। रामायण में स्वयं श्रीराम के रथ पर दिव्य ध्वज स्थापित था, इसलिए धर्म ध्वज राम परंपरा का अनिवार्य अंग माना जाता है।

ध्वज और ऊर्जा का संबंध

ध्वज को ऊँचे स्थान पर स्थापित करने का उद्देश्य केवल सजावट नहीं है। प्राचीन शास्त्रों में कहा गया है कि हवा के साथ लहराता ध्वज आकाशीय ऊर्जा का संचरण करता है, यह स्थान को पवित्रता और सुरक्षा प्रदान करता है और मंदिर संकुल को दैवीय स्पंदन से भर देता है। ध्वज का रंग, आकृति और गतिशीलता-ध्यान और साधना को भी प्रेरित करती है।

शिखर दैवीय ऊर्जा का केंद्र

मंदिर का शिखर वास्तुशास्त्र और शिल्पशास्त्र के अनुसार ऊर्जा का सर्वोच्च केंद्र होता है। ध्वज को शिखर पर फहराने का

अर्थ है कि देवता की कृपा और सुरक्षा पूरे नगर पर रहती है, मंदिर की दिव्यता दूर-दूर तक प्रसारित होती है और भक्तों को दूर से ही मंदिर की उपस्थिति का संकेत मिलता रहता है।

शिखर ध्वज - देवता की ''दृश्य उपस्थिति''

इतिहास में जहाँ-जहाँ मंदिर बने, वहाँ उनके शिखर पर ध्वज देवता की सतत उपस्थिति का प्रतीक रखा गया। ध्वज गिर जाना या न फहराना अशुभ माना जाता है और ध्वज फहरते रहना देवता की कृपा मानी जाती है।

राम मंदिर पर ध्वज- मर्यादा की परंपरा का पुनःस्थापन

श्रीराम के रथ पर लगे हुए ध्वज का वर्णन वाल्मीकि रामायण में मिलता है। अतः राम मंदिर पर धर्म ध्वज का आरोहण राम परंपरा, शौर्य, दया और मर्यादा की पुनर्स्थापना का प्रतीक है।

वैश्विक संदर्भ में मंदिर ध्वज फहराने का महत्व

आज विश्व में लाखों रामभक्त और भारतीय संस्कृति के करोड़ों अनुयायी हैं। ऐसे में मंदिर के शिखर पर ध्वज फहराना केवल भारत का नहीं, बल्कि विश्व का आध्यात्मिक संदेश है। मंदिर के ध्वज के माध्यम से विश्व को यह संदेश मिलता है कि-

धर्म का मूल अहिंसा, शांति, कर्तव्य और करुणा है।

राम संस्कृति विश्व को ''वसुधैव कुटुंबकम्'' और ''सबका कल्याण'' का मंत्र प्रदान करती है।

अंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक पर्यटन को नई दिशा

राम मंदिर का ध्वज दूर से ही आने वाले श्रद्धालुओं के लिए मंडल का केंद्र, आस्था का चिन्ह और संस्कृति का संकेतक बनता है। दुनिया के प्रमुख धार्मिक स्थलों-वेटिकन, तोरई (जापान), तिब्बत के मठों-पर भी ध्वज की परंपरा है। इसी तरह अयोध्या का ध्वज अंतरराष्ट्रीय पहचान बना रहा है।

सांस्कृतिक आत्मविश्वास और भारतीय सॉफ्ट पावर

आज जब विश्व भारतीय संस्कृति की ओर आकर्षित है, तो अयोध्या का धर्म ध्वज-भारत के सांस्कृतिक आत्मविश्वास, वैचारिक शक्ति और सभ्यता की निरंतरता का प्रतीक है।

यह विश्व को बताता है कि भारत केवल आधुनिक विज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि आध्यात्मिक नेतृत्व का भी जनक है।

केंद्र सरकार की भूमिका : राष्ट्रीय धरोहर का पुनर्निर्माण

राम मंदिर और अयोध्या के पुनरुत्थान में केंद्र सरकार ने कई ऐतिहासिक कदम उठाए। संवैधानिक मर्यादा और शांति का वातावरण संवेदनशील विषय होने के बावजूद केंद्र ने शांतिपूर्ण वातावरण बनाकर न्याय प्रक्रिया को सुचारु रूप से आगे बढ़ने दिया। यह आस्था और कानून दोनों की रक्षा थी।

अवसंरचना विकास का स्वर्णिम अध्याय

केंद्र सरकार ने अयोध्या को विश्वस्तरीय धार्मिक नगर बनाने हेतु अनेक परियोजनाएँ आरंभ कीं-

- महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा,

- राष्ट्रीय राजमार्गों का चौड़ीकरण
- रेलवे स्टेशन का विशाल आधुनिकीकरण
- सरयू रिवरफ्रंट का विकास
- तीर्थयात्री सुविधाओं का विस्तार
- अस्पताल, आपातकालीन यातायात सेवाएँ

इन परियोजनाओं ने अयोध्या को आधुनिक, सुव्यवस्थित और अंतरराष्ट्रीय तीर्थ के रूप में स्थापित किया।

अयोध्या के नव-निर्माण में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भूमिका अत्यंत विशिष्ट रही है।

अभेद्य बनती कानून व्यवस्था

योगी सरकार ने अयोध्या को अत्याधुनिक सुरक्षा से सुसज्जित किया। तीन-स्तरीय सुरक्षा ढांचा, स्मार्ट CCTV नेटवर्क, ट्रैफिक कंट्रोल व्यवस्था, तीर्थयात्रियों की सुरक्षित आवाजाही, जिससे लाखों श्रद्धालु दर्शन कर सकें।

अयोध्या का कायाकल्प-एक मॉडल धार्मिक नगर का निर्माण

योगी जी के मार्गदर्शन में-राम पथ, भक्ति पथ, जन्मभूमि पथ, 84 कोसी और 14 कोसी परिक्रमा मार्ग का विकास, सरयू घाटों का दिव्य रूपांतरण, हजारों धर्मशालाओं, पार्किंग और यात्री सहायताओं की व्यवस्था, स्वच्छता और सुंदरीकरण के व्यापक अभियान ने अयोध्या के स्वरूप को विश्वस्तरीय बना दिया।

दीपोत्सव : अयोध्या का वैश्विक गौरव

योगी सरकार द्वारा आयोजित 'दीपोत्सव' ने अयोध्या को वैश्विक नक्शे पर स्थापित किया। लाखों दीपों की उजास से शहर का प्रत्येक कोना प्रकाश में नहाया और यह आयोजन गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ।

मंदिर निर्माण में निरंतर सक्रिय सहयोग-मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने स्वयं कई बार निर्माण स्थल का निरीक्षण किया और प्रशासन, ट्रस्ट, सुरक्षा एजेंसियों और जनता के बीच समन्वय स्थापित किया, ताकि मंदिर निर्माण बिना किसी व्यवधान के पूर्ण हो सके।

धर्म ध्वज का आरोहण : संघर्ष और सिद्धि का सार

900 वर्षों के संघर्ष, दृढ़ता, धैर्य, बलिदान और भक्तिभाव की परिणति-धर्म ध्वज का आरोहण-एक ऐसा क्षण है जिसने इतिहास को फिर से जीवित किया।

ध्वज फहराते समय आकाश में उठने वाली हवाओं के साथ ऐसा प्रतीत हुआ मानो-युगों की तपस्या, साधकों की पुकार, अनगिनत बलिदानों का आह्वान और भक्तों की आकांक्षा सब मिलकर एक स्वर में कह रही हों-

''धर्म पुनः प्रतिष्ठित हुआ है।''

(लेखक से.नि. पुलिस उपाधीक्षक हैं)
मो. : 9936411588

जब प्रभु श्री राम में लीन भये मोदी

–यशोदा श्रीवास्तव

25 नवंबर को अयोध्या में प्रभु श्री राम मंदिर के शिखर पर जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों धर्मध्वज का आरोहण हो रहा था तब अयोध्या अपनी संपूर्णता के आगोश में समाती जा रही थी। सच कहें तो ध्वजारोहण के बाद ही राम नगरी संपूर्ण अयोध्या का रूप धारण कर पाई। इस रोज देश भर में फैले करोड़ों राम भक्त जरूर रोमांचित हुए होंगे। अयोध्या नगरी के रोमांच का तो कोई ओर छोर ही नहीं था।

इस क्षण की बड़ी बात यह थी कि जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी धर्म ध्वजारोहण के बाद करवद्ध ध्वज प्रणाम कर रहे थे तब उनके हाथ की अंगुलियों के कंपन प्रधानमंत्री के राम में लीन हो जाने की गवाही दे रहे थे। प्रधानमंत्री मोदी कट्टर राम भक्त हैं इसमें दो राय नहीं। राम मंदिर के शिलान्यास से लेकर मंदिर के भव्य उद्घाटन और अब उच्च शिखर पर ध्वजारोहण के दौरान राम भक्ति में लीन होना सबसे बड़ा उदाहरण है।

धर्मशास्त्रों में इस बात का साफ उल्लेख है कि साधु-संत जब भक्ति और भाव में डूब जाते हैं तब शरीर के कुछ अंगों में ऐसी हरकतें स्वाभाविक है। जैसे नाभि, भुजा और अंगुलियां आदि। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। तुलसीदास और सूरदास ने स्वयं अपनी रचनाओं में भक्ति के इस चरमोत्कर्ष का उल्लेख किया है। ध्वजारोहण के वक्त प्रधानमंत्री के हाथों में कंपन दर असल प्रभु श्री राम की भक्ति का चरमोत्कर्ष ही था। किसी के प्रति ऐसा भक्तिभाव तत्काल नहीं प्रकट होता और न ही अचानक ही इसका प्रकटीकरण होता। इस तरह का भाव तब प्रकट होता है जब व्यक्ति किसी देवी-देवता अथवा अपने कुल देवता के प्रति सदैव ही सच्चे मन से नमन करता हो, उपासना करता हो। ध्वजारोहण के वक्त दुनिया ने खुली आंखों से देखा

बड़ी बात यह थी कि जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी धर्म ध्वजारोहण के बाद करवद्ध ध्वज प्रणाम कर रहे थे तब उनके हाथ की उंगलियों के कंपन प्रधानमंत्री के राम में लीन हो जाने की गवाही दे रहे थे। प्रधानमंत्री मोदी कट्टर राम भक्त हैं इसमें दो राय नहीं। राम मंदिर के शिलान्यास से लेकर मंदिर के भव्य उद्घाटन और अब उच्च शिखा पर ध्वजारोहण के दौरान राम भक्ति में उनका लीन होना सबसे बड़ा उदाहरण है।

और समझा कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी प्रभु राम के न केवल सच्चे भक्त हैं, बल्कि उनके अंतहीन उपासक भी हैं। नि:संदेह उस कुछ क्षण तक वे आभासी दुनिया से विरत हो गए होंगे और उनमें जरूर कुछ क्षण के लिए ही प्रभु राम की लीलाएं उमड़ घुमड़ रही होंगी। यह ऐसा क्षण रहा होगा जब प्रधानमंत्री मोदी के बंद आंखों से प्रभु श्री राम के वनवास के संपूर्ण 14 वर्ष की एक-एक घटना चल चित्र की तरह आती जाती रही होगी। उन्हें यह भी महसूस हो रहा होगा कि किस कठिन और लंबी लड़ाई के बाद अयोध्या को राजा दशरथ जैसी अयोध्या बना पाया। जिस अयोध्या में पूजा अर्चना और परिक्रमा की इजाजत नहीं थी आज उसी अयोध्या में देश ही नहीं, दुनिया भर के राम भक्तों का मेला लगा रहता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की भक्ति जैसा एक और भी उदाहरण है। पूर्वांचल में तरकुलहा एक जगह है जो गोरखपुर जिले में स्थित है। शहीद बंधु सिंह का नाम कौन नहीं जानता होगा, खासकर वे लोग जिन्हें आजादी की लड़ाई का जरा भी ज्ञान होगा। अंग्रेज हुकूमत को बंधु सिंह की तलाश थी। वे छिपकर तरकुलहा के जंगल में तरकुल के पेड़ पर लंबी कील ठोक कर उसी को दुर्गा स्वरूप मान कर उपासना करते थे। बाद में इस स्थान को तरकुलहा देवी स्थान के रूप में मान्यता मिली जहां महीने भर नवरात्र में देवी की पूजा होती है। यहां दूर-दूर से लोग आते हैं। जनश्रुति के अनुसार मां तरकुलहा देवी की कृपा थी कि अंग्रेज उनका बाल भी बांका नहीं कर सके। वे पकड़े भी गए तो अपनी मर्जी से। गोरखपुर की जेल में उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई थी। तरकुलहा देवी का पराक्रम ऐसा था कि जब जब उन्हें फांसी दी गई, वह रस्सी ही टूट जाती थी। अंतत: बंधु सिंह ने मां तरकुलहा से खुद ही मौत की मन्नत मांगी तब जाकर उनकी फांसी कामयाब हुई।

मोदी जी के राम भक्ति के वर्णन में शहीद बंधु सिंह की दुर्गा भक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करने का उद्देश्य बस यह बताना है कि मनुष्य यदि सच्चे मन और भाव से कहीं भी उपासना करता है तो देवी या देवता अपने भक्तों पर कृपा अवश्य ही बनाए रखते हैं। प्रधानमंत्री मोदी पर भी प्रभु श्री राम की कृपा है तभी तो वे तमाम विकट परिस्थितियों में भी जो ठान लेते हैं, वह कर गुजरते हैं। दुनिया में किसी भी देश की धौंस पट्टी न बर्दाश्त करने वाले भारत के प्रधानमंत्री मोदी नि:संदेह सच्चे राम भक्त हैं। ◆

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)
मो. : 9918955583

योगी की पहल : दुनिया भर के लोग जानें अयोध्या का माहात्म्य

–रवि प्रकाश

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का अयोध्या को वैश्विक पहचान दिलाने का सिलसिला जारी है। वे चाहते हैं कि अयोध्या के माहात्म्य को दुनिया भर के लोग जानें। हाल में ही राम मंदिर के उच्च शिखर पर प्रधानमंत्री मोदी के हाथों धर्म ध्वजारोहण को दुनिया ने देखा और सराहा। अब इसी अयोध्या में विश्वस्तरीय मंदिर संग्रहालय की पहल और इसके लिए अतिरिक्त जमीन उपलब्ध कराने की उनकी घोषणा से देश भर के संत और धार्मिक विद्वानों में खुशी की लहर है। पहले से प्रस्तावित इस संग्रहालय का क्षेत्रफल दोगुना करने का निर्णय लिया गया है। अयोध्या वासियों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की इस पहल की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि यह राम नगरी को सांस्कृतिक राजधानी स्थापित करने की दिशा में बड़ा कदम है।

मालूम हो कि राम मंदिर पर धर्म ध्वजा रोहण के कुछ दिन बाद ही लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कैबिनेट की बैठक में प्रस्तावित विश्व स्तरीय मंदिर संग्रहालय का क्षेत्रफल बढ़ा कर 52.102 एकड़ करने का फैसला किया। यह पहले प्रस्तावित क्षेत्रफल से दो गुना है। संग्रहालय परियोजना का निर्माण और संचालन टाटा संस अपने सीएसआर फंड से करेगा। विश्व स्तरीय मंदिर संग्रहालय के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि टाटा संस ने इस अत्याधुनिक मंदिर संग्रहालय को एक गैर-लाभकारी मॉडल पर विकसित करने की इच्छा जताई है। इसके लिए कम्पनी एक्ट 2013 की धारा 8 के तहत एक गैर लाभकारी एसपीवी बनाया जाएगा, जिसमें केंद्र सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि भी

शामिल होंगे। संग्रहालय संबंधी त्रिपक्षीय एमओयू भारत सरकार, यूपी सरकार और टाटा संस के बीच सितंबर 2024 में ही हस्ताक्षर हो चुका है। क्षेत्रफल का दायरा बढ़ाने के मुख्यमंत्री योगी के फैसले के बाद इस परियोजना पर तेजी से काम शुरू होने की उम्मीद बढ़ गई है।

राम मंदिर पर धर्म ध्वजा रोहण के कुछ दिन बाद ही लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कैबिनेट की बैठक में प्रस्तावित विश्व स्तरीय मंदिर संग्राहालय का क्षेत्रफल बढ़ा कर 52.102 एकड़ करने का फैसला किया। यह पहले प्रस्तावित क्षेत्र फल से दो गुना है। संग्रहालय परियोजना का निर्माण और संचालन टाटा संस अपने सीएसआर फंड से करेगा।

मंदिर संग्रहालय के लिए राज्य सरकार ने पहले अयोध्या के मांझा जमथरा गांव में 25 एकड़ नजूल भूमि उपलब्ध कराने की अनुमति दी थी, लेकिन परियोजना की निर्माण एजेंसी टाटा संस ने संग्रहालय की भव्यता और भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए अधिक भूमि की मांग की थी। इसी आधार पर अब अतिरिक्त 27.102 एकड़ भूमि आवास एवं शहरी नियोजन विभाग से पर्यटन विभाग को हस्तांतरित की जाएगी। इस प्रकार कुल 52.102 एकड़ जमीन पर यह अद्वितीय सांस्कृतिक परिसर आकार लेगा। अयोध्या में विश्वस्तरीय संग्रहालय के लिए अतिरिक्त जमीन मिलने पर उत्साहित संत समाज ने योगी सरकार की तारीफ करते हुए कहा कि अयोध्या के गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जो काम कर रहे हैं, वह धर्म शास्त्र के एक अध्याय स्वरूप है।

सीएम योगी की इस पहल से व्यापारी वर्ग भी प्रसन्न है। उनका मानना है कि अयोध्या में पर्यटक बढ़ने से रोजगार के नए अवसर के द्वार खुलेंगे। इससे अयोध्यावासियों का आर्थिक विकास होना तय है। हालांकि इसकी शुरुआत हो चुकी है।

अयोध्या में विश्व स्तरीय मंदिर संग्रहालय स्थापना के पीछे योगी सरकार की सोच है कि इससे अयोध्या के धार्मिक स्वरूप को भी वैश्विक मान्यता मिलेगी ही, सांस्कृतिक पहचान भी मिलेगी। इससे अयोध्या में स्वरोजगार की संभावना बलवती होगी और दुनिया के अन्य देश भी यहां निवेश करने में आगे बढ़ेंगे। जैसे-जैसे अयोध्या में धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियां बढ़ रही है वैसे-वैसे यहां टूरिस्टों की संख्या में भी इजाफा हुआ है। यह बढ़ोतरी मंदिर निर्माण और उसके उद्घाटन के बाद से निरंतर जारी है। नवंबर महीने में मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण के बाद पर्यटकों की संख्या में और बढ़ोतरी हुई है। मंदिर परिसर में स्थित पर्यटन कार्यालय के अनुसार यहां हर रोज 2 से 4 लाख श्रद्धालु और पर्यटक आ रहे हैं। इनमें ज्यादातर संख्या युवा पीढ़ी, विदेशी पर्यटकों और भारतीय विरासत में रुचि रखने वालों की है । ऐसे लोगों को आकर्षित करने के लिए मंदिर संग्रहालय नया केंद्रीय आकर्षण साबित होगा। इससे शहर की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। मंदिर संग्रहालय में प्रभु श्रीराम के जीवन चरित्र का दर्शन होगा जो बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करेगा। ◆

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)
मो. : 8795087975

राममंदिर पर ध्वजारोहण : संकल्प की सिद्धि

-श्याम नारायण सिंह

मंदिर एक ऐसा पवित्र स्थल, जहां तन-मन को असीम शांति प्राप्त होती है। भारत में मंदिर निर्माण की परंपरा बहुत पुरानी है। वैदिक काल यानि 1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक मंदिर के अस्तित्व के बारे में कम ही जानकारी मिलती है। ऐसा माना जाता है कि उस समय पूजा-पाठ यज्ञ के माध्यम से अग्नि की वेदियों पर किया जाता था। अग्नि अत्यंत पवित्र है। वह पृथ्वी पर ईश्वर का साक्षात रूप है। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पहले के कुछ संरचनाओं के अवशेषों को देखकर यह ज्ञात हुआ कि उस समय मंदिर अस्तित्व में आ गए थे। वे लकड़ी, फूस या ईंटों जैसी सामग्री से बने थे। गुप्त काल में संरचनात्मक मंदिरों की शुरुआत हुई। इस काल में पत्थरों से मंदिरों का निर्माण होना प्रारंभ हुआ। भारत में अनेक स्थल ऐसे हैं जहां पर पौराणिक किवदंतियां जुड़ी हुई हैं। वहां पर अनेक मंदिर बने हैं। पर्वतीय स्थलों पर मंदिर गुफाओं का स्वरुप लिए हैं। धीरे-धीरे मंदिरों की वास्तुकला में उन्नति होती रही और अनेक बड़े मंदिर बेजोड़ शैली से बनाए जाने लगे।

दरअसल मंदिर और अन्य तीर्थ स्थल व्यक्तियों के अंदर आस्था और विश्वास जागृत करते हैं। आस्था और विश्वास जीवन के वे विटामिन हैं जो व्यक्ति को हर तनाव और परेशानी से बचाने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। मंदिरों के शिखर पर फहराने वाली पताका अथवा ध्वजा का भी विशेष महत्व है। दरअसल मंदिरों पर दिखने वाली ध्वजा को देखकर दूर से ही यह ज्ञात हो जाता है कि उस स्थान पर ईश्वर का वास है। मंदिर की ध्वजा वातावरण को शुद्ध एवं पवित्र बनाती है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार कई पवित्र स्थल ईश्वर का निवास स्थान रहे हैं, इसलिए वहां पर मंदिरों का निर्माण कर दिया गया ताकि कलयुग में लोग शांति से अपने आराध्य देव को स्मरण कर सकें और मन को अध्यात्म की शक्ति से ओत-प्रोत कर सकें।

अयोध्या ऐसा पवित्र स्थल है जो राम की जन्मभूमि है। राम एक ऐसे नायक हैं जो अप्रतिम है, मर्यादा का पालन करने वाले हैं और पूरे विश्व को अपने व्यक्तित्व से चौंकाने वाले हैं। श्रीराम एक ऐसा व्यक्तित्व हैं जो असाधारण हैं। मानव होकर उन्होंने मानवीयता को नए और उच्च आयाम दिए हैं। श्रीराम ने मानव रूप में जन्म लेकर मानवीयता की नई परिभाषा गढ़ी और यह बताया कि

दु:खों का सामना करते हुए मुस्कराकर आगे बढ़ना ही जीवन है। श्रीराम ने अपने जीवन से यह बताया कि केवल सुखों की नदी में गोते लगाना ही जीवन का मकसद नहीं है, बल्कि दु:ख के अपार सागर में तैरकर दूसरे लोगों को सुखी करना ही वास्तविक सुख है।

धर्म और जातियों से परे राम अब केवल भारत ही नहीं, अपितु विश्व संस्कृति का पर्याय बन चुके हैं। डॉ. कामिल बुल्के का कहना है कि, ''वेदों में राम का तात्पर्य दशरथ पुत्र श्रीराम नहीं, अपितु कई अन्य रूपों से है।'' रामजन्मभूमि पर मंदिर निर्माण की कहानी बहुत लंबी है। अनेक विवादों के बाद अंतत: यहां पर विशालकाय मंदिर बन ही गया। पांच वर्ष पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर का भूमि पूजन 05 अगस्त, 2020 को किया था। उन्हीं के नेतृत्व में 22 जनवरी, 2024 को गर्भगृह में रामलला की धूमधाम से प्राण-प्रतिष्ठा की गई। मंदिर का निर्माण पूरा होने के बाद 25 नवंबर, 2025 को राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण किया गया। इस तरह यह दिवस भी इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में दर्ज हो गया। राम मंदिर पर ध्वजारोहण 500 वर्षों के संघर्ष, तपस्या और मेहनत का प्रतिफल है। हजारों श्रद्धालु इस खास पल के साक्षी बने। उन्होंने नम आंखों से श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजा को फहरते हुए देखा।

अयोध्या ऐसा पवित्र स्थल है जो राम की जन्मभूमि है। राम एक ऐसे नायक हैं जो अप्रतिम है, मर्यादा का पालन करने वाले हैं और पूरे विश्व को अपने व्यक्तित्व से चौंकाने वाले हैं। श्रीराम एक ऐसा व्यक्तित्व हैं जो असाधारण हैं। मानव होकर उन्होंने मानवीयता को नए और उच्च आयाम दिए हैं। श्रीराम ने मानव रूप में जन्म लेकर मानवीयता की नई परिभाषा गढ़ी और यह बताया कि दु:खों का सामना करते हुए मुस्कराकर आगे बढ़ना ही जीवन है। श्रीराम ने अपने जीवन से यह बताया कि केवल सुखों की नदी में गोते लगाना ही जीवन का मकसद नहीं है, बल्कि दु:ख के अपार सागर में तैरकर दूसरे लोगों को सुखी करना ही वास्तविक सुख है।

राम मंदिर की ध्वज पताका अनेक विशेषताओं से परिपूरित है।

ध्वज को तैयार करने वाले ललित मिश्र-

राम मंदिर के शिखर पर

फहरने वाले ध्वज को इंडोलॉजिस्ट ललित मिश्र ने तैयार किया है। ध्वज केसरिया रंग का है। इसमें सूर्य, ओम और कोविदार पेड़ की आकृति है। ललित मिश्र कहते हैं कि उन्होंने ध्वज का निर्माण करते समय त्रेता युग के ध्वज, रंग, प्रतीक और संरचना का गूढ़ अध्ययन किया। उन्होंने मेवाड़ की रामायण की एक पेंटिंग में अयोध्या का ध्वज देखा था। इसमें अंकित कोविदार की पेड़ की पहचान के लिए उन्होंने दुर्लभ अभिलेखों का अध्ययन किया। यह मंदार और पारिजात पेड़ों का एक हाईब्रिड है । इसे ऋषि कश्यप ने बनाया था। मुख्य ध्वज को 10 कारीगरों ने 25 दिन में तैयार किया। मुख्य राम मंदिर के साथ 7 अन्य ध्वजों का निर्माण पैराशूट बनाने वाले मजबूत नायलान के कपड़ों से किया गया है।

ध्वज के प्रतीकों का महत्व-

ध्वजा का रंग भगवा है। यह रंग त्याग, तपस्या, बलिदान, वीरता और ज्ञान का प्रतीक है। अग्नि का रंग भी ऐसा ही होता है। जिस तरह अग्नि अपने प्रकाश से तिमिर को दूर कर उजाला करती है, उसी तरह भगवा रंग भी अज्ञानता को दूर कर ज्ञान की रोशनी फैलाता है और पवित्रता का बोध कराता है।

सूर्य का चिह्न-ध्वज पर सूर्य अंकित है। यह भगवान श्रीराम के सूर्यवंशी होने का द्योतक है। इसके साथ ही सूर्य का चिह्न यह भी दर्शाता है कि जीवन में ऊष्मा, शक्ति और नई शुरुआत होती रहनी चाहिए। इनसे जीवन को गति और दिशा का बोध होता है।

ओम-ध्वज के केंद्र में ओम स्थित है। यह संपूर्ण सृष्टि का आदि नाद माना जाता है। ऊँ ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जुड़ता है। ऐसा भी माना जाता है कि ऊँ सृष्टि की पहली ध्वनि थी। ऊँ की ध्वनि में असीम शक्तियों का भंडार छिपा हुआ है। इसके अंदर आध्यात्मिक और दिव्य शक्तियां हैं। ये शक्तियां व्यक्ति के दु:ख-तनाव और दर्द को कम करती हैं। उन्हें मानसिक सुकून प्रदान करती हैं और नई राह दिखाती हैं।

कोविदार वृक्ष–कोविदार वृक्ष रामराज्य यानि कि त्रेतायुग में राजकीय वृक्ष था। इसका ध्वज पर चित्रण यह अंकित करता है कि जिस तरह त्रेतायुग में हर ओर सुख–शांति एवं प्रेम का वातावरण था, उसी तरह इक्कीसवीं सदी में भी हर ओर सुख–समृद्धि व्याप्त हो। व्यर्थ के विवाद शांत हों। यह वृक्ष राम राज्य की समृद्ध संस्कृति और गौरवशाली विरासत को भी बताता है।

ध्वजा का तकनीकी और व्यवस्थागत वर्णन

- ध्वज की लंबाई 22 फीट और ऊंचाई 11 फीट है।
- 42 फीट का स्तंभ है।
- शिखर 161 फीट है।

ध्वजा पर डबल सिंथेटिक लेयर है। इससे इस पर सर्दी, गर्मी, वर्षा और नमी का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

यह ध्वजा 60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने पर भी क्षतिग्रस्त नहीं होगी।

ध्वजा फहराने की रस्सी स्टेनलेस स्टील कोर और नायलॉन से बनी है। इससे इसकी मजबूती और अधिक बढ़ जाती है।

ध्वज स्तंभ को एक 360 डिग्री घूमने वाले चैंबर पर रखा जाएगा, जिससे कि ये आसानी से घूम जाए।

यह ध्वजा कम से कम 04 किलोमीटर दूर से नजर आएगी।

तुलसीदास कत रामचरितमानस की निम्नलिखित चौपाई में राम की नगरी की सुंदरता का अद्भुत वर्णन है:–

''ध्वज पताक तोरन पुर छावा।
कहि न जाइ जेहि भांति बनावा।।
सुमनवृष्टि अकास तैं होई।
ब्रह्मानंद मगन सब लोई।।

अर्थात् ध्वज, पताका, तोरण और सजावट के सभी उपकरण सुंदरता से सुसज्जित हैं। जहां–तहां जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। सारा नगर इतना अधिक अप्रतिम लग रहा है कि जैसे स्वयं ही बन गया हो। गगन से प्रसून बरस रहे हैं। सभी परम आनंद में डूबे हुए हैं।

राम मंदिर पर ध्वज पताका फहराने के बाद से अयोध्या नगरी भी अब कुछ ऐसी ही प्रतीत हो रही है। मंदिर की परिपूर्णता

के बाद अब अयोध्या धाम उत्तर प्रदेश की नगरी की आर्थिक वृद्धि का प्रेरक नगर केंद्र बन गया है। अब यह नगरी एक सांस्कृतिक विरासत की पर्यटन नगरी का आर्कषण बिंदु बन गई है। अयोध्या में राम मंदिर के भव्य निर्माण से भारतीय अर्थव्यवस्था को बल मिला है। इसके माध्यम से कृषि आधारित क्षेत्रों में भी वृद्धि के आसार नजर आ रहे हैं। यहां पर रोजगार के माध्यम खुल गए हैं। युवाओं में एक नया जोश और ऊर्जा का सृजन हो रहा है। आने वाली नई पीढ़ी न केवल भारतीय संस्कृति से परिचित हो रही है, अपितु अपने प्रयासों से यहां पर रोजगार के अनेक क्षेत्रों में सृजन के पथ भी बना रही है। नरेंद्र मोदी ने भी ध्वजारोहण के बाद कहा कि, ''यह धर्म ध्वज भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का प्रतीक है। यह संदेश भी है कि प्राण जाए पर वचन न जाए। अब संकल्पों को सिद्धि मिली है। धर्म ध्वज फहराने के मौके पर सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि पूरा विश्व राममय हो गया है।'' राम भारतीय मनीषी की आत्मा हैं। राजधर्म की सबसे आदर्श व्यवस्था वही मानी गई है जब हर ओर 'रामराज्य' स्थापित हो, अर्थात् प्रजा अपने राजा के प्रति पूर्ण निष्ठावान हो। वहीं राजा भी अपनी प्रजा के हित को सर्वोपरि समझे और प्रजा की सुरक्षा एवं उनके हितों के लिए अग्निपथ पर चलने के लिए भी अहर्निश तत्पर हो। राम 'कर्मयोगी' हैं। वे अपने कर्मों से मानवता को यही संदेश देते हैं कि हर दिन अपने कर्त्तव्यपथ पर मुस्कराहट, सत्यनिष्ठा, निस्वार्थ दृष्टिकोण के साथ चलना ही सुखद मार्ग है। इस सुखद मार्ग पर अनेकों बार दुख एवं तनाव के कड़वाहट भरे पल भी आएंगे,

अन्ततः उन चुनौतियों का साहस से सामना करना ही असली विजयद्वार है। अब राममंदिर पर फहरने वाली ध्वजा ने भी इस बात को साबित कर दिया है कि जब तक प्राणियों के मन में धर्म, अध्यात्म, कर्म और करुणा के बीज प्रस्फुटित होते रहेंगे तब तक भारतवर्ष की देवभूमि अपने संस्कारों और विरासत से संपूर्ण विश्व को संदेश देती रहेगी। ◆

(लेखक भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी हैं)

मो. : 7905215332

महानायक राम की नगरी अयोध्या

-विदर्भ कुमार

अयोध्या भारत के उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के तट पर स्थित प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। अयोध्या का प्राचीन नाम साकेत है, यह प्रभु श्री राम की पावन जन्मस्थली के रूप में हिन्दू धर्मावलम्बियों के आस्था की केंद्र है। अयोध्या प्राचीन समय में कोसल राज्य की राजधानी एवं प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण की पृष्ठभूमि का केंद्र थी। प्रभु श्री राम की जन्मस्थली होने के कारण अयोध्या को मोक्षदायिनी एवं हिन्दुओं की प्रमुख तीर्थस्थली के रूप में माना जाता है।

विश्व महानायक राम का नाम युगों-युगों से जन के मन पर छाया हुआ है। राम का नाम चिरंजीवी रहेगा तथा अपनी गरिमा के समस्त वैभवों से विश्व मानस को संत अर्पण प्रदान करता रहेगा। सचमुच राम का नाम कल्पवृक्ष है। वाल्मीकि राम पर काव्य रचना की और आदिकवि की संज्ञा प्राप्त कर अमर हो गए। (आचार्य रविषेण, आचार्य गुणभद्र, आचार्य विमलसूरि तथा स्वयंभू और पम्प ने एक से एक उत्तम भाव प्रवण पुराण एवं काव्य साहित्य में रामचरित लिखे हैं।) संस्कृत के स्वतंत्र महाकवियों तथा मैथिलीशरण गुप्त ने राम पर काव्य रचना की है। दुनिया भर की एक हजार से अधिक विविध भाषाओं में राम की गाथा को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि काल की समस्त सत्ता को ललकार कर और विस्मृति के संपूर्ण उत्पादनों को निरस्कृत कर राम का यह अद्भुत चरित्र लोक मानस में प्रतिक्षण नवीन होकर चिरजीवी हो रहा है।

श्रीराम का चरित्र

श्रीराम का चरित्र वस्तुतः साकार और निराकार, निर्गुण एवं सगुण, अलख तथा लख, अव्यक्त एवं व्यक्त परमेश्वर 'ब्रह्म' का संशयरहित आभामय साकार प्रकटीकरण ही है। गोस्वामी तुलसीदास ने परमेश्वर के इन दोनों शाश्वत स्वरूपों का अत्यन्त स्पष्ट और पुष्ट रेखांकन प्रभु श्रीराम के अवतार वर्णन में किया है-

ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।

सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या कें गोद।।

सनातन धर्म में निर्गुण और सगुण तथा निराकार एवं साकार परमेश्वर के भ्रम का निराकरण मजबूत आध्यात्मिक तर्कशक्ति से किया गया है। यह निराकरण इस धर्म की विशाल वैचारिक पृष्ठभूमि एवं उदारता के साथ इसकी अद्भुत विलक्षण विशेषता भी कही जा सकती है। तत्वतः निराकार परमेश्वर ही भक्तों के प्रेमवश उसके कल्याण हेतु साकार रूप में प्रकट होते हैं-

अगुन अरूप अलख अज जोई।

भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।

निराकार 'ब्रह्म' भक्तों के प्रेमवश तो साकार स्वरूप में प्रकट होते ही हैं, लेकिन वह परमेश्वर लोकरक्षा के लिए भी साकार रूप ग्रहण करते हैं एवं विविध अवतार के माध्यम से अपनी मनोरम लीला के साथ विभिन्न कालखण्ड में इस लोक में अवतरित होते रहते हैं। रामचरितमानस के बालकाण्ड में भगवान शिव माँ पार्वती से इस सत्य को उद्घाटित करते हुए कहते हैं-

जब जब होइ धरम कै हानी।

बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।

करहिं अनीति जाई नहिं बरनी।

सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी।।

तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा।

हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन यही कहता है कि लोकमंगल एवं सज्जनों की रक्षा हेतु निराकार परमेश्वर साकार स्वरूप में अवतार लेकर जगत के कल्याण के साथ अपने

लोक-चरित्र से धर्म और मर्यादा की पुनर्स्थापना करते हैं। भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन के अनुरूप ही प्रभु श्रीराम अपने अवतार की सार्थकता के प्रति संतों को आश्वस्त करते हैं।

एक अन्य कोण से देखा जाए तो राम बहुत ही सौभाग्यशाली व्यक्तित्व हैं। उन्हें पिता, माता, पत्नी, भ्राताओं, गुरुजनों और मित्रों से भरपूर स्नेह व प्रेम मिला था। पिता उन्हें युवराज पद पर आसीन करना चाहते थे। माता कौशल्या का तो उन पर असीम स्नेह था ही। भ्राताओं पर राम का प्रगाढ़ स्नेह है तो भ्राताओं की उन पर परम भक्ति भी है। वचनबद्धता और आज्ञापालन राम के व्यक्तित्व के अन्य शाश्वत रेशे है। यही वजह है कि उनके द्वारा किया हुआ हां अथवा ना अमिट वचन है। जब पिता की आज्ञा पाकर राम वनवासी हो गए, तब भरत ने उन्हें लौटाने के कई प्रयत्न किए, परंतु राम अपनी मर्यादा से विचलित नहीं हुए। उन्होंने भरत को समझाते हुए यहां तक कह दिया कि पूज्य पिता का आदेश मेरे लिए अक्षरशः पालनीय है और तुम्हें भी उसका वैसे ही पालन करना चाहिए। राम का आर्यसूत्र है- शरणागत को अभय इसीलिए वे सीता के अपहरणकर्ता रावण के प्रति भी बड़े उदारमत थे। जब रावण द्वारा तिरस्कृत होकर विभीषण राम की शरण में आया, उस समय वाल्मीकि रामायण के अनुसार सुग्रीव ने राम से कहा, वह शत्रु का अनुज है, इसे शरण नहीं दे। तब राम ने कहा, हे वानर राज! द्वार पर आकर जो शरण मांग रहा है उसे मैं अभय देता हूं। तुम बाहर जाकर उसे ले आओ। चाहे वह विभीषण हो अथवा स्वयं रावण ही क्यों न हो। रावण की मृत्यु के बाद राम ने विभीषण को कहा कि रावण से अब मेरा कोई वैर नहीं। उनका विधि पूर्वक संस्कार करो। जैसा यह तुम्हारा अग्रज होने से आदरणीय है वैसा ही मेरे लिए भी समादरणीय है। इससे स्पष्ट है कि राम का रावण के साथ युद्ध धर्मार्थ था। अपनी स्त्री की रक्षा सामान्य जन का भी धर्म है और फिर राम तो सर्वसमर्थ थे, सुक्षत्रिय थे।

राजधर्म की सुरक्षा, प्रजा का हित एवं स्थापित आदर्शों का अनुसरण राम के लिए परम प्राथमिकता की चीजें थीं। इसीलिए

विश्व महानायक राम का नाम युगो-युगो से जन के मन पर छाया हुआ है। राम का नाम चिरंजीवी रहेगा तथा अपनी गरिमा के समस्त वैभवों से विश्व मानस को संत अर्पण प्रदान करता रहेगा। सचमुच राम का नाम कल्पवृक्ष है। वाल्मीकि ने राम पर काव्य रचना की और आदिकवि की संज्ञा प्राप्त कर अमर हो गए। आचार्य रविषेण, आचार्य गुणभद्र, आचार्य विमलसूरि तथा स्वयंभू और पम्प ने एक से एक उत्तम भाव प्रवण पुराण एवं काव्य साहित्य में रामचरित लिखे हैं। संस्कृत के स्वतंत्र महाकवियों तथा मैथिलीशरण गुप्त ने राम पर काव्य रचना की है। एक हजार से अधिक दुनिया भर की विविध भाषाओं में राम की गाथा को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि काल की समस्त सत्ता को ललकार कर और विस्मृति के संपूर्ण उत्पादनों को निरस्कृत कर राम का यह अद्भूत चरित्र लोक मानस में प्रतिक्षण नवीन होकर चिरजीवी हो रहा है।

कठोर राजधर्म का परीक्षण करने के लिए राम ने वैदेही परित्याग किया। यह भी राम ने सीता की निर्दोषता और अपने कृत्य की घोरता को जानते हुए भी एक राजमहिषी को त्याग दिया ताकि राजपद अमानुषिक अमर्यादा से लांछित न हो। राम समझते थे कि प्रजाजनों का हित करने तथा उनको सत्यमार्ग प्रवर्तित रखने के लिए राजा धर्मशासन का नेतृत्व करने के लिए उत्तरदायी है। राम यह भी जानते थे कि प्रजा यदि राजा में अथवा उसके परिवार में कोई दोष देखती है तो राजा को कठोरता के साथ उसकी शल्यक्रिया करनी पड़ती है। इसलिए जो राजा अपने आदर्शों का स्वरूप समझता है, वह प्रजा के मत की अवहेलना नहीं कर सकता। कहना न होगा कि इस बिंदु पर राम की तस्वीर प्रजा की मान-मर्यादाओं के रक्षक के रूप में उभरती है।वात्सल्य एवं स्नेह शीलता की मूर्ति है। प्रजा के सभी वर्गों में राम का सरल स्वभाव है। निषादराज का आतिथ्य, ऋषियों, महर्षियों के आश्रम दर्शन, वन्यजातियों से मिलना आदि प्रसंग उनके जीवन की निरूपित भूमि हैं। वन में सीता हरण के पश्चात विचरते हुए वे शबरी के आश्रम में जाते हैं। शबरी तपस्विनी है। राम ने उसे अतीत अनागत का ज्ञान रखने वाली कहा है। उसने राम को पम्पा तट पर उत्पन्न होने वाले विविध प्रकार के फल संचित कर भेंट किए। इससे न केवल नगर जनपदों में, अपितु सुदूर गहन वन्य भूमियों में भी राम के प्रति लोगों का स्नेहभाव सूचित होता है। यदि एक रावण ने उनके साथ वैर-विरोध किया तो क्या? संपूर्ण मानव जाति, वीर जटायु और देवगण भी राम के मित्रत्व को गर्व योग्य समझते थे।सचमुच राम शब्द सत्य, शौर्य, दया, तप और त्याग का वाचक है। वाल्मीकि उनके लिए छन्द लिखते है और वशिष्ठ उन्हें इक्ष्वाकु कुल शिरोमणि कहते हैं। राम के राज्य का स्मरण भारतीयों के आदर्श शासनकला की अविलुप्त स्मृति है। जहां चोर नहीं, विधवा नहीं, मूर्ख नहीं, आत्महत्या नहीं और न ही अल्पायु लोगों के मानस में राम राज्य का खींचा हुआ ऐसा अमार्जनीय चित्र है, जिसकी प्राप्ति के लिए भारतीयों के मन-प्राण उत्कंठित है। राम प्रजा के सांस्कृतिक जनक हैं। वे अपना सुख-चैन प्रजा के सुख पर उत्सर्ग करने को सदा तत्पर हैं। लेकिन आश्चर्य सत्य यह है कि जानकी और राम के जीवन में सुख-शांति है कहीं दिखाई नहीं देती। केवल दुख ही दुख है, विषाद ही विषाद है। इस पर भी उनकी महानता यह है कि उन्होंने विषाद को प्रसाद के रूप में स्वीकार किया है। विषाद को प्रसाद बनाने को लोकोत्तर साधना में सीता का तो संपूर्ण जीवन ही समर्पित रहा।यदि राम की जीवन-यात्रा का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट होता है

कि उनके जीवन में गति ही गति है। बाल्यकाल में ही महर्षि विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करने उनके साथ चल पड़ना इस गतिशीलता का शुभारंभ है। वनवास की आज्ञा को राम लोक कल्याण के उदात्त परिप्रेक्ष्य में आकर जीवन का स्वर्णिम अवसर मानते हैं। राज्य और वनवास में अयनशील राम को कोई अंतर दिखाई नहीं देता।

उनके अनुसार वनवास में लोक कल्याण की जो संभावना है, वह संभवत राज्य के पालन में नहीं है। यही गतिशीलता राम के जीवन की मौलिक चेतना है, जिसे आदिकवि ने राम काव्य लिखा। राम का व्यक्तित्व करुणा का सागर है। उनके हाथ में शस्त्र का होना इस बात का प्रमाण है कि वह शस्त्र केवल लोक कल्याण और लोक मर्यादा के लिए है, न कि अन्य कार्य के लिए। राम का तो कोई भी कार्य जनहित में ही होगा इसलिए उनके कंधे पर तीर कमान का होना अत्याचारों से लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए है। राम जब अत्याचारी पर बाण चलाते हैं। तब भी उनका हृदय करुणा से भरा होता है। लेकिन रावण का वध करके राम ने त्रेता युग के लोगों को अत्याचार, और बुराई से मुक्ति अवश्य दिलायी। राम 14 वर्ष वनवास पर रहे लेकिन अयोध्या का भूगोल विवाद शून्य रहा। पत्थर आपस में टकराए नहीं थे। शरणागत को वह अभय प्रदान करता है। राम के आदर्श प्रवहमान हैं।

राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, इसलिए राम का स्मरण भारतीय संस्कृति के देवी अंशों का कीर्तन है। यह आत्मा को प्रसन्न-विमल करने की क्षार रहित महौषधि है और मंगल स्तुतियों का प्रथम पाठ है। अत: यदि हम राम के आदर्शों को जीवन में डालकर अपने अंत: प्रदेश में प्रकाश का सच्चा संधि स्थल बना लेते है तो जीवन मंगलमय हो जाता है। ◆

(लेखक अधिवक्ता हैं)
मो. : 7607354095

अयोध्या में अध्यात्म और विकास का संगम

-डॉ. अजय कुमार मिश्रा

5 अगस्त, 2020 को अयोध्या में श्री राम मंदिर के निर्माण के लिए भूमिपूजन का कार्य हुआ और 25 नवम्बर, 2025 को यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या नगरी में धर्मध्वजा का आरोहण कर मंदिर के कार्य को पूर्ण होने की औपचारिक घोषणा की। इसी के साथ अयोध्या और श्री राम मंदिर ने एक भव्य स्वरुप सामने आया। लोगों का आगमन मंदिर को देखने के लिए तेजी से हो रहा है। परिणाम स्वरुप आधुनिक आर्थिक विकास को भी गति प्राप्त हो रही है। स्वयं उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ ने यह परिकल्पना वर्षों पहले की थी कि मंदिर निर्माण से न केवल आध्यात्मिक विकास होगा बल्कि आर्थिक विकास को भी तेजी से गति मिलेगी। अयोध्या की नवीनतम पहचान आधुनिक आर्थिक रूप में भी सुदृढ़ बनेगी। राम मंदिर के निर्माण के पश्चात् अयोध्या उत्तर प्रदेश की आर्थिक वृद्धि के प्रमुख प्रेरक केंद्र के रूप में उभर कर सामने आई है। देखा जाय तो अयोध्या आध्यात्मिक और आधुनिक विकास दोनों के वैश्विक प्रतीक के रूप में विराजमान है, जिसका सीधा लाभ आम जन मानस को हो रहा है।

वर्ष 2023 में मंदिर निर्माण का कार्य पूर्ण होने के पहले अयोध्या में लगभग 5.73 करोड़ श्रद्धालुओं का आगमन हुआ था ये श्रद्धालु न केवल भारत के विभिन्न राज्यों से थे बल्कि दुनिया के कई देशों से अयोध्या धाम आये थे। जिससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिला बल्कि विभिन्न तरह के रोजगारों का सृजन भी हुआ। श्री राम मंदिर के निर्माण के बाद अयोध्या में आने वाले लोगों की संख्या में कई गुना इजाफा हुआ। जनवरी 2025 से जून 2025 के मध्य लगभग 23 करोड़ लोग अयोध्या पहुंचे, जिससे विकास की गति को बल मिला। वर्तमान वर्ष के अंत तक

अयोध्या में आने वाले लोगों की संख्या 50 करोड़ तक पहुंचना अपेक्षित है। इससे न केवल आर्थिक विकास, रोजगार का विकास हो रहा बल्कि प्रत्येक तबके के लोगों को वृहद रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। अयोध्या जिसे वर्षों से उपेक्षा का शिकार होना पड़ा था, मोदी और योगी ने उसे आज शीर्ष तक ले जाने का कार्य किया है, जिससे चहुंमुखी विकास दिखाई दे रहा है। वर्तमान में अयोध्या जाने पर आपको न केवल इसका नवीनतम स्वरुप दिखेगा बल्कि प्रत्येक छोटी बड़ी बातों का ध्यान रखकर इसका निर्माण और क्षेत्र का विकास भी दिखाई देगा।

उत्तर प्रदेश तेजी से बढ़ते हुए राज्य की वन-ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यस्था के रोडमैप में अयोध्या जीएसडीपी में लगभग 1.5 प्रतिशत योगदान करके अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और यह संभव हो पाया है तो उत्तर प्रदेश के मुखियां का अयोध्या के प्रति विजन निर्धारित करके लगातार कार्य करना। अयोध्या में व्यापक निवेश से शहर की सड़कें, सार्वजानिक सुविधाओं और कनेक्टिविटी का नया स्वरूप की देन केंद्र और राज्य सरकार के दोनों मुखिया है। आज अयोध्या के साथ-साथ उत्तर प्रदेश के कई आस्था और आध्यात्मिक केंद्र का विकास हो रहा जिससे प्रदेश में पर्यटन तेजी से बढ़ रहा है उन सभी में अयोध्या का विशेष स्थान है और विकास की वास्तविक मूर्त देखने को अब मिलने भी लगा है।

तेजी से बढ़ते हुए राज्य की वन-ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यस्था रोडमैप में अयोध्या जीएसडीपी में लगभग 1.5 प्रतिशत योगदान करके महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और यह संभव हो पाया है। उत्तर प्रदेश के मुखिया के अयोध्या के प्रति विजन निर्धारित करके लगातार कार्य करने से। अयोध्या में व्यापक निवेश से शहर की सड़कें, सार्वजनिक सुविधाओं और कनेक्टिविटी को नया स्वरूप मिला है। इसकी देन केंद्र और राज्य सरकार के मुखिया है। आज अयोध्या के साथ-साथ उत्तर प्रदेश में आस्था और आध्यात्मिक केंद्र का भी विकास हो रहा, जिससे प्रदेश में पर्यटन तेजी से बढ़ रहा है। उन सभी में अयोध्या का विशेष स्थान है। विकास का वास्तविक मूर्त रूप देखने को अब मिलने भी लगा है। अकेले राममंदिर आधारित पर्यटन से प्रदेश को प्रत्येक वर्ष 4 लाख करोड़ की अतिरिक्त आमदनी का अनुमान है। अयोध्या के रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट और हवाई कनेक्टविटी को आधुनिक स्वरूप में तकनीकी के साथ तेजी से बढ़ाया जा रहा है, जिससे कि पर्यटकों को किसी भी तरह की असुविधा का सामना न करना पड़े। विगत के वर्षों में अयोध्या में हास्पिटेलिटी, परिवहन, रियल स्टेट क्षेत्र का तेजी से विकास हुआ है और होटल, गेस्ट हाउस की संख्या में भी व्यापक वृद्धि हुई है। इनकी वृद्धि से न केवल रोजगार के नए अवसरों का तेजी से सृजन हुआ है, बल्कि नव व्यवसाय भी तेजी से बढ़ रहा है। यह बहुस्तरीय आर्थिक परिवर्तन को बढ़ावा भी दे रहा है।

उत्तर प्रदेश सरकार के मुखिया योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश को वर्ष 2029 तक वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की दिशा में तेजी से कार्य कर रहे हैं। इस उद्देश्य में अयोध्या को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है और उसी अनुरूप कार्य हो भी रहा है। मुख्यमंत्री योगी की प्रतिबद्धता को उन्हीं के शब्दों में समझा जा सकता है। उन्होंने कहा है कि ''आज जिस सुनियोजित एवं तीव्र गति से अयोध्या धाम का विकास हो रहा है, वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के दृढ़संकल्प, इच्छाशक्ति एवं दूरदर्शिता के बिना संभव नहीं था। दुनिया धर्मनगरी अयोध्या धाम की ओर उत्सुकता के साथ देख रही है। पूरा विश्व भव्य, दिव्य, नव्य अयोध्या का साक्षात्कार कर रहा है।'' उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ अयोध्या के साथ साथ पूरे प्रदेश के विकास के लिए पूर्ण रूप से न केवल प्रतिबद्ध हैं, बल्कि लगातार कार्य कर रहे हैं।

अयोध्या के विकास के लिए महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, अयोध्याधाम रेलवे स्टेशन, शहर में विभिन्न पथ और सड़कों का निर्माण, सांस्कृतिक विकास, आध्यात्मिक विकास, आधुनिक अयोध्या, स्वच्छ अयोध्या, सक्षम अयोध्या, आयुष्मान अयोध्या, सुन्दर अयोध्या बनाने के लिए विभिन्न योजनाओं का क्रियान्यवन किया जा रहा है। अधिकांशत: पूर्ण हो गयी है, जबकि कुछ पर कार्य भी चल रहा है। आधुनिक और भव्य अयोध्या सभी को सुविधाओं के साथ आकर्षित कर रही है। (अयोध्या में 159 निवेश परियोजनाएं है जिनमें 8594 करोड़ के निवेश का अनुमान है।) अयोध्या के लिए नई टाउनशिप, भव्य प्रवेश द्वार, मल्टी लेवल पार्किंग, 84 कोसी परिक्रमा मार्ग, ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे, रिंगरोड, एयरपोर्ट, मंदिर संग्रहालय, ऊर्जा संयंत्र, होटल और आधुनिक नागरिक सुविधाएँ को मास्टर प्लान में शामिल कर तेजी से अयोध्या को नवीन स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार ने विजन 2047 के अपने लक्ष्य में अयोध्या को ज्ञान, उत्सव, तीर्थ-अनुकूल ढांचे, विविध पर्यटन, ऐतिहासिक सर्किट, हेरिटेज वॉक और सौर ऊर्जा आधारित शहर के रूप में विकसित करने पर फोकस किया है। किये गए कार्यों और भविष्य की प्रस्तावित योजनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ''अयोध्या धाम आध्यात्मिक और आधुनिक विकास का प्रतीक'' बन रहा है, जिसका सीधा लाभ आम जन मानस को प्राप्त हो रहा है और भविष्य में थी बड़े पैमाने पर प्राप्त होगा। यह तभी संभव हुआ है जब देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ दूरदर्शिता का परिचय देकर नियोजित ढंग से अयोध्याधाम का विकास लगातार कर रहे हैं। ◆

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)
मो. : 9335226715

अनंतकाल तक एकता और धार्मिक विश्वास की अलख जगायेगा "धर्मध्वज"

–सुधा मिश्रा

25 नवम्बर, 2025 का दिन इतिहास के पन्नों में न केवल अमर हो गया है, बल्कि उसकी वैश्विक गूंज ने पुनः देश की धार्मिक छवि को सबके सामने रखने में सफलता प्राप्त की है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या नगरी में धर्मध्वजा का आरोहण कर न केवल मंदिर के कार्य को पूर्ण होने की घोषणा की बल्कि हिन्दू धर्म की एकता और विश्वास से वैश्विक आबादी को पुनः अवगत कराया। करोड़ों श्रद्धालुओं ने भगवान राम के बालस्वरूप का दर्शन करके अपने जीवन में प्रकाश का संचार किया है। 5 अगस्त, 2020 को मंदिर के निर्माण के लिए भूमिपूजन किया गया था। उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ ने मंदिर निर्माण और अयोध्या के विकास के लिए न केवल कठिन परिश्रम किया, बल्कि हर छोटी बड़ी बातों को ध्यान में रखकर मंदिर निर्माण और कार्यपूर्ति के लिए लगातार कार्य किया है। उनकी प्रतिबद्धता को देखकर कोई भी कह सकता है कि वास्तव में वे हिन्दू धर्म के सच्चे और प्रभावशाली नेतृत्वकर्ता है, जिन पर न केवल उत्तर प्रदेश के करोड़ों लोग भरोसा करते है बल्कि देश के हर कोने में उनके समर्थक और प्रशंसक मिल जायेंगे।

धर्मध्वज 11 गुणे 22 यानि की 242 फीट का है और इसका आकार समकोण त्रिभुज जैसा है। इस धर्मध्वज को बनाने में विशेष योग्यता और उच्चकोटि की सामग्री का प्रयोग किया गया है। धर्मध्वज को तीन परतों वाले कपड़े से तैयार किया गया है जिसमे बाहरी परत पैराशूट फैब्रिक की है, शीर्ष परत रेशम की और किनारे पर सुनहरे बार्डर का उपयोग किया गया है। इसके भीतर एक मजबूत अस्तर दिया गया है

ताकि ऊंचाई पर तेज हवाओं में भी ध्वज सुदृढ़ बना रहे। जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने धर्मध्वजा का आरोहण किया तो लोगों का मन हर्षित हो गया। कई लोग भावुक भी हो गए, जिनमें स्वयं प्रधानमंत्री जी भी थे। इस धर्म ध्वज का रंग भगवा है जिस पर सूर्य चिन्ह, ऊँ और कोविदार वृक्ष अंकित है। इनकी उपस्थिति रामराज्य के इतिहास से जुड़ी है जहाँ सूर्य चिन्ह प्रभु श्री राम जी के सूर्यवंशी होने का प्रतीक है वही यह चिन्ह तेज, ओज, और अदम्य साहस का भी प्रतीक है। ऊँ सम्पूर्ण सृष्टि का आदि नाम है और यह ऊर्जा, चेतना और दिव्यता का न केवल सर्वश्रेष्ठ रूप है बल्कि मंदिर में स्थापित आध्यात्मिक शक्ति का प्रतिनिधित्व भी करता है। यदि हम कोविदार वृक्ष की बात करें तो इसकी पहचान त्रेतायुग में रामराज्य में यह अयोध्या का राजकीय वृक्ष के रूप में सर्वत्र विदित था।

धर्मध्वज का आरोहण इस बात की घोषणा है कि श्री राम मंदिर अब औपचारिक रूप से पूर्ण हो गया है। इस मंदिर की छवि को संजोये और वास्तविक छवि देखने के लिए न जाने कितने लोगों ने अपने जीवन को बलिदान कर दिया। कितने लोग इस उम्मीद और आकांक्षा में अपना जीवन व्यतीत कर गए कि "राम कब आयेंगे?" देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ ने देश के करोड़ों हिन्दुओं और हिन्दू धर्म में विश्वास रखने वाले दुनियाभर में फैले लोगों के समक्ष बहुप्रतीक्षित श्री राम मंदिर को न केवल मूर्तरूप में ले आये, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि हम जितना सोच सकते हैं, उससे भी कही अधिक कर सकते हैं। इतिहास के पन्नों में इन दोनों लोगो का नाम सुनहरे अक्षरों में अंकित हो गया, जिसकी साक्षी सम्पूर्ण वैश्विक आबादी बनी।

धर्मध्वज 11 गुणे 22 यानि की 242 फीट का है और इसका आकार समकोण त्रिभुज जैसा है। इस धर्मध्वज को बनाने में विशेष योग्यता और उच्चकोटि की सामग्री का प्रयोग किया गया है। धर्मध्वज को तीन परतों वाले कपड़े से तैयार किया गया है जिसमे बाहरी परत पैराशूट फैब्रिक की है, शीर्ष परत रेशम की और किनारे पर सुनहरे बार्डर का उपयोग किया गया है। इसके भीतर एक मजबूत अस्तर दिया गया है ताकि ऊंचाई पर तेज हवाओं में भी ध्वज सुदृढ़ बना रहें। जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने धर्मध्वज को लहराया तो लोगों के मन को धर्मध्वज ने मोहित कर लिया, कई लोग भावुक भी हो गए जिनमे स्वयं प्रधानमंत्री भी थे। इस धर्म ध्वज का रंग भगवा है जिस पर सूर्य चिन्ह, ऊँ का प्रतीक और कोविदार वृक्ष अंकित है ये तीनों की उपस्थिति रामराज्य के इतिहास से जुड़ी है जहाँ सूर्य चिन्ह प्रभु श्री राम जी के सूर्यवंशी होने का प्रतीक है वही यह चिन्ह तेज, ओज, और अदम्य साहस का भी प्रतीक है।

इस धर्मध्वज की खास बात यह भी है कि यह संस्कृति और धरोहर का प्रतीक है। इसके अनुष्ठान की शुरुआत अभिजीत मुहूर्त में की गई। साथ ही मंदिर परिसर के प्रत्येक भाग में शंख, वैदिक मन्त्र घंटियों की ध्वनि से पूरे वातावरण को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान किया गया। ध्वजारोहण समारोह में आधुनिक तकनीक के उपयोग ने धरोहर और नवाचार का सहज संगम स्वरूप भी प्रदर्शित किया है। धर्मध्वज के निर्माण के पीछे वाल्मीकि रामायण में वर्णित विवरणों को आधार बनाकर आधुनिकी तकनीकी का प्रयोग करके मूर्त स्वरुप प्रदान किया गया है। धर्मध्वज के प्रभावशाली कार्यक्रम में न केवल देश के गणमान्य लोग उपस्थित रहे, बल्कि लाइव प्रसारण द्वारा दुनिया ने हिन्दू धर्म, भारत की एकता और अखंडता को पुनः महसूस कराया है। अयोध्या के श्री राम लला के मंदिर को महज एक मंदिर नहीं कहा जा सकता। यह नई सदी में हिन्दू एकता और धार्मिक विकास के प्रचारक के रूप में भी इसकी मान्यता विद्यमान रहेगी। धर्मध्वज श्री राम मंदिर के मुख्य शिखर पर देश के यशस्वी प्रधानमंत्री द्वारा फहराया गया है और अब इसकी विद्य मानता अनूठी अलख को लगातार जागृत कर रही है,

जिससे न केवल आध्यामिक चेतना का विकास जन मानस में हो रहा है बल्कि प्रभु श्री राम के गुणों को जनता अपने जीवन में आत्मसात कर रही है। इस धर्मध्वज की खास बात यह भी है कि किसी भी मौसम में लगभग चार किलोमीटर दूर से इसे लोग आसानी से अपनी आँखों से देख सकते हैं जबकि इसका निर्माण में किया गया इस तरह से है कि सामान्य मौसम में इसे 27 किलोमीटर दूर से भी इसे देखा जा सकता है।

इसके निर्माण में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि यह भारी तूफान को झेल सके। हवा के अनुरूप घूम सके और किसी भी परिस्थिति में यह उलझे नहीं। यह धर्म ध्वज 360 डिग्री घूमने वाली प्रणाली पर स्थापित किया गया है और यह 60 किमी प्रति घंटे की हवा की गति को सहन कर सकता है। इसे बनाने में प्रयोग किये गए रंग केसरिया को इसलिए समाहित किया गया है कि यह बलिदान, तपस्या और धर्म का प्रतीक है। (ध्वज का सहायक मस्तूल 42 फीट ऊँचा है, जिसमें दस फीट संरचना में जड़ा हुआ है और 32 फीट ऊपर दिखाई देता है।)

अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण के पूरा होने की घोषणा धर्मध्वज के माध्यम से हो गयी है। यह मंदिर न केवल आदर्शों और वचनों की पूर्ति के ऐतिहासिक प्रमाण का कार्य करेगी बल्कि बिखरते हुए समाज को एकजुट करने और धार्मिक प्रेरणा देने का कार्य युगों-युगों तक करेगा। भावी पीढ़ी को हिन्दू और धर्म का ज्ञान इस मंदिर के माध्यम से प्राप्त होता रहेगा। साथ ही देश की वैश्विक छवि भी इससे बनेगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ समेत उन सभी लोगों को इसका श्रेय जायेगा, जिन्होंने इस मंदिर के निर्माण में किसी न किसी रूप में अपना योगदान दिया है। इतिहास के पन्नों में मंदिर निर्माण की सम्पूर्ण कार्य प्रणाली जहाँ दर्ज हो गयी है वहीं नरेन्द्र मोदी और योगी आदित्यनाथ का नाम भी सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो गया। ◆

(लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं)
मो. : 8090005531

भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का प्रतीक है धर्म ध्वज

–प्रदीप उपाध्याय

अयोध्या धाम में विवाह पंचमी के अवसर पर अभिजीत मुहूर्त में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राम मंदिर के उन्नत शिखर पर धर्म ध्वजा का आरोहण किया। इसके साथ ही अयोध्या में राम जन्म भूमि पर भव्य राम मंदिर के निर्माण का सदियों पुराना संकल्प सिद्ध हुआ। यह धर्म ध्वज नयी अयोध्या के भव्य एवं दिव्य स्वरूप का मनोहारी प्रकटीकरण है। इस मौके पर पीएम नरेन्द्र मोदी ने कहा कि अयोध्या वह भूमि है, जहां आदर्श आचरण में बदलते हैं। यह पल कंधे से कंधा मिलाकर चलने का है। हमें अब वह भारत बनाना है जो राम राज्य से प्रभावित होगा। अब संकल्पों को सिद्धि मिली है। उत्तर प्रदेश की भूमि सचमुच देवस्थली कहे जाने योग्य है। राम की जन्मभूमि अयोध्या, कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा, भगवान शिव का दिव्य स्थल काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, गौतम बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी और

निर्वाण स्थली कुशीनगर, सारनाथ, विंध्याचल धाम सरीखे शक्तिपीठ उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ स्थल हैं। एक साथ इतने तीर्थ स्थल संभवत: अन्य किसी राज्य में नहीं होंगे।

राम मंदिर को लेकर राम भक्तों की पांच सौ साल की प्रतीक्षा का यह सुखद अंत था। प्रधानमंत्री मोदी के हाथों से ध्वजा आरोहण का क्षण ऐतिहासिक पल था। इस विशिष्ट अनुष्ठान के अंतर्गत योगिनी पूजन, क्षेत्रपाल पूजन, वास्तु पूजन, नवग्रह पूजन और प्रधान मंडल के रूप में रामभक्त मंडल तथा अन्य समस्त मंडलों का आवाहन एवं पूजन किया गया। अरणि मंथन से अग्निकुंड में मंत्रोच्चार के साथ अग्नि की स्थापना की गयी। मुख्य यजमान अनिल मिश्र ने सपत्नीक पूजन एवं अर्चन किया। दूसरे दिन एक हजार तुलसी पत्र से भगवान श्रीराम का सहस्त्र नामार्चन हुआ। तीसरे दिन विष्णु सहस्त्रनाम एवं गणेश अथर्वशीर्ष की आहुतियां पूर्ण की गयीं। चौथे दिन पूज्य देवी देवताओं के पूजनोपरान्त ध्वज स्तवन पूजन के साथ आरोहित किए जाने वाले ध्वज के अधिवास कराए गए। औषधि अधिवास, गंधाधिवास, शार्करा अधिवास, जलाधिवास कराया गया। मुख्य आचार्य चन्द्रभान शर्मा, उप आचार्य रविन्द्र पैठणे व आचार्य पंकज शर्मा ने पूजन अर्चन सम्पन्न कराया। आचार्य इन्द्रदेव मिश्र तथा आचार्य पंकज कौशिक की देखरेख में पूजन व्यवस्था संचालित की गयी। अयोध्या में फहरा रहा धर्म ध्वज प्रभु श्रीराम की अनंत ऊर्जा एवं दिव्य प्रताप के रूप में प्रतिस्थापित प्रतीत होता है। धर्म ध्वजा का भगवा रंग इसपर रचित सूर्यवंश की ख्याति, वर्णित ॐ शब्द, अंकित कोविदार वृक्ष राम राज्य की कीर्ति को प्रदर्शित करता है। यह धर्म ध्वज संकल्प से सिद्धि, सफलता के यशोगान तथा संघर्ष से सृजन की अद्भुत गाथा माना जा सकता है, धर्म ध्वजा सदियों से चले आ रहे सपनों का साकार स्वरूप है। इतना ही नहीं, यह महान संतों की साधना और सामाजिक सहभागिता की सार्थक परिणति है। उम्मीद की जानी चाहिए कि यह धर्म ध्वज सहस्त्र शताब्दियों तक प्रभु राम के आदर्शों एवं सिद्धांतों का उद्घोष करता रहेगा।

राम मंदिर को लेकर राम भक्तों की पांच सौ साल की प्रतीक्षा का यह सुखद अंत था। प्रधानमंत्री मोदी के हाथों में ध्वजा सौंपने का क्षण ऐतिहासिक पल था। इस विशिष्ट अनुष्ठान के अंतर्गत योगिनी पूजन, क्षेत्रपाल पूजन, वास्तु पूजन, नवग्रह पूजन और प्रधान मंडल के रूप में रामभक्त मंडल तथा अन्य समस्त मंडलों का आवाहन एवं पूजन किया गया।

कानपुर आर्डिनेंस पैराशूट फैक्ट्री में बना यह धर्मध्वज खास क्वालिटी का है। पैराशूट कपड़े के ध्वज के रंग पर बारिश का असर नहीं होगा। इस ध्वज को तैयार करने के साथ इसकी खास डिजाइन कानपुर की पैराशूट फैक्ट्री में उकेरी गयी। राम मंदिर के मुख्य तल से 191 फीट की ऊंचाई पर यह लहरा रहा है। इसमें 44 फीट का ध्वज दंड भी शामिल है। धर्म ध्वज पर अंकित कोविदार वृक्ष मंदार एवं पारिजात दोनों गुणों का समुच्चय है। कचनार का औषधीय गुण भी है। यह रघुकुल की सत्ता का प्रतीक है। जिसके बारे में कहा जाता है कि वह स्वयं धूप में खड़े होकर दूसरों को छाया प्रदान करते हैं। सूर्य संकल्प का प्रतीक है जो बताता है कि कार्य की सिद्धि स्वयं के भरोसे होती है। धर्मध्वजा को आर्डिनेंस फैक्ट्री में विश्वस्तरीय पैराशूट के कपड़े से बनाया गया है। धूप, बारिश, आंधी, हवा समेत अन्य प्राकृतिक अवस्थाओं का इस उच्च कोटि के नायलान पैराशूट कपड़े पर कम असर पड़ेगा। इसके रंगों पर तीन वर्षों तक कोई खास प्रभाव नहीं पड़ने वाला है। इसकी डिजाइन ओपीएफ टीम ने उकेरी है। इसका वजन तकरीबन ढाई किलोग्राम है। गौरतलब है कि राम मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने केंद्र सरकार से उपयुक्त ध्वज की मांग की थी। रक्षा मंत्रालय की ओपीएफ टीम ने इसे तैयार किया है।

न सिर्फ राम मंदिर बल्कि अनेक प्रमुख मंदिरों में काफी ऊंचाई पर धर्म ध्वज लहरा रहे हैं, जो देश की आध्यात्मिक चेतना, धार्मिक आस्था, आर्थिक समृद्धि एवं सामाजिक समरसता का बखान करते हैं। सदियों से मंदिर हमारी आस्था एवं प्रगति के

प्रमुख बिंदु रहे। इतिहास गवाह है कि आताताइयों एवं आक्रांताओं ने अनेक बार आक्रमण किए, हमारे प्रमुख मंदिरों को तोड़ा, यहां उपलब्ध रत्न एवं आभूषणों को लूटा, हमारा मान मर्दन करने की कोशिश की, लेकिन वे हमारे मनोबल को नहीं तोड़ पाए। उत्तर भारत के असंख्य मंदिरों को विदेशी आतताइयों एवं

आक्रांताओं ने कई बार निशाना बनाया, लेकिन विंध्य की पहाड़ियों के उस पार दक्षिण दिशा में बने मंदिरों तक वे नहीं पहुंच सके। दक्षिण भारत में आज भी अनेक विशालकाय एवं प्राचीन मंदिर मौजूद हैं जो अपनी भव्यता एवं पुरातनता के कारण जनमानस को आकर्षित करते हैं, प्रतिवर्ष हजारों नहीं बल्कि लाखों श्रद्धालु यहां आते हैं तथा दर्शन पूजन करते हैं। जहां तक ऊंचाई पर स्थित धर्मध्वजा का सवाल है तो पंजाब के अमृतसर में स्थित अतारी सीमा मंदिर का जिक्र किया जा सकता है। इसकी ऊंचाई 418 फीट है। भारत-पाक सीमा पर गुरुद्वारा और मंदिरों से जुड़े क्षेत्र में यह स्थित है। इसकी स्थापना 2023 में की गयी है। इसी प्रकार झारखंड स्थित रांची के पहाड़ी शिव मंदिर का उल्लेख किया जा सकता है जहां 293 फीट की ऊंचाई पर धर्मध्वजा फहरा रही है। यह भगवान शिव को समर्पित ऐतिहासिक मंदिर है। 2016 में स्थापित इस मंदिर में सेनानियों के लिए ध्वजारोहण किया जाता है। कर्नाटक के बेलगांवी में बेलगांवी किला मंदिर परिसर है। यहां 361 फीट की ऊंचाई पर धर्म ध्वज लहरा रहा है। किला झील के पास यह ऐतिहासिक मंदिर क्षेत्र है। इसकी स्थापना 2018 में की गयी और यह स्थानीय मंदिरों से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार महाराष्ट्र के पुणे निगड़ी क्षेत्र में भक्ति शक्ति परिसर में कृष्ण मंदिर बना हुआ है। यहां धर्म ध्वजा 351 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह भक्ति शक्ति उद्यान में स्थित है और इसे 2018 में बनाया गया है।

अयोध्या में राम मंदिर के ध्वजारोहण के अवसर पर गोरक्षपीठाधीश्वर एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना था कि ध्वजारोहण उस सत्य का उद्घोष है कि धर्म का प्रकाश अमर है। उन्होंने कहा कि राम राज्य के मूल्य कालजयी हैं। राम मंदिर पर फहराता केसरिया धर्म ध्वज मर्यादा, सत्य, न्याय और राष्ट्र धर्म का प्रतीक है। यह विकसित भारत की संकल्पना है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिराजू। सुफल सुकल शुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू। उन्होंने कहा कि एक समय था, जब अयोध्या संघर्ष और

बदहाली का शिकार हो चुकी थी पर अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अयोध्या उत्सवों की वैश्विक राजधानी बन रही है। रामलला की पावन नगरी आस्था व अर्थव्यवस्था के नए युग में प्रवेश कर चुकी है। यह धर्म पथ, राम पथ, भक्ति पथ, पंच कोसी, चौदह कोसी और चौरासी कोसी परिक्रमा के माध्यम से श्रद्धालुओं और भक्तों के मन मस्तिष्क में नया सम्मान एवं स्नेह अर्जित कर रही है। सरयू का अविरल प्रवाह अयोध्या की कीर्तिगाथा का यशोगान है। महर्षि वाल्मीकि अंतर्राष्ट्रीय एयर पोर्ट, अयोध्या रेलवे स्टेशन तथा बस अड्डा देश-दुनिया के नागरिकों एवं पर्यटकों को बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान कर रहे हैं। देश की पहली सोलर सिटी के रूप में नयी अयोध्या का दर्शन हो रहा है। अयोध्या का भव्य दीपोत्सव इसकी नयी पहचान है। एक साथ लाखों दीए जलाए जाते हैं, जिसके प्रकाश में अयोध्या जगमगा उठती है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक मोहन भागवत ने इस अवसर पर कहा कि आज हम सबके लिए सार्थकता का दिवस है। राम राज्य का ध्वज जो कभी अयोध्या में फहराता था, सम्पूर्ण विश्व में अपने आलोक से सुख समृद्धि एवं शांति प्रदान करता था, वह ध्वज आज फिर ऊपर चढ़ते हुए और शिखर पर विराजमान होते हमने देखा है। इसी देह में देखा है। उन्होंने अतीत के कालखंड का स्मरण करते हुए कहा कि कितने ही लोगों ने प्रयास किए, अपने प्राण अर्पित किए आज उनकी स्वर्गस्थ आत्मा तृप्त हुई होगी। अशोक सिंहल, महंत राम चंद्र दास, महंत अवेद्यनाथ समेत कितने संतों, गृहस्थों, युवकों, राम भक्तों ने पसीना बहाया, अपने जान की परवाह न करके लम्बा आंदोलन चलाया, आज वे सभी प्रसन्न होंगे। उन्होंने कहा कि मंदिर निर्माण की शास्त्रीय प्रक्रिया पूर्ण हो गयी और यह ऐतिहासिक पूर्णत्व का क्षण है। आज का दिन कृतार्थ होने का दिन है।

अयोध्या में राम मंदिर के ध्वजारोहण के अवसर पर गोरक्षपीठाधीष्वर एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना था कि ध्वजारोहण उस सत्य का उद्घोष है कि धर्म का प्रकाश अमर है। उन्होंने कहा कि राम राज्य के मूल्य कालजयी हैं। राम मंदिर पर फहराता केसरिया धर्म ध्वज मर्यादा, सत्य, न्याय और राष्ट्र धर्म का प्रतीक है। यह विकसित भारत की संकल्पना है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिराजू। सुफल सुकल शुभ साधन साजू। राम तुम्हहि अवलोकत आजू। उन्होंने कहा कि एक समय था जब अयोध्या संघर्ष और बदहाली का शिकार हो चुकी थी पर अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अयोध्या उत्सवों की वैश्विक राजधानी बन रही है।

आज हमारे वे चिरसंचित संकल्प पूरे हुए, जिनका सपना सदियों तक हमारे पुरखे देखते रहे। उन्होंने देशवासियों का आह्वान किया कि अब हमें मिलजुलकर आगे बढ़ना है और आत्मनिर्भर भारत बनाने का संकल्प पूरा करना है। उन्होंने कहा कि 2047 में जब हम आजादी के सौ साल का जश्न मना रहे होंगे तो हमारा राष्ट्र विकसित राष्ट्र की कतार में शामिल हो चुका होगा। जो अपनी ऐतिहासिक विरासत, सांस्कृतिक धरोहर और धर्मिक आस्था को संजोकर विश्व के सामने नयी मिसाल पेश कर रहा होगा। विश्व बंधुत्व एवं मानवता के कल्याण का उद्घोष कर रहा होगा। हमारी पौराणिक मान्यता रही है सर्वे भवन्तु सुखिनः। राम और कृष्ण हमारे महापुरुष ही नहीं बल्कि प्रातःस्मरणीय आराध्य देव हैं जो सदियों से हमारी प्रेरणा में रचे-बसे हैं। राम ने मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर असत्य पर सत्य की विजय का उदाहरण पेश किया तो लीलाधारी कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के रण में मोहग्रस्त अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। उन्हें मोह से उबरने तथा निष्काम कर्म की प्रेरणा दी। शिव हमारे जीवन में योग एवं तप का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारी पौराणिक आस्था का सूत्रवाक्य है सत्यम् शिवम् सुंदरम्। ऐसे में दिव्य धाम अयोध्या में अहर्निश फहरा रहा धर्मध्वज हमारे लिए सतत आस्था, उल्लास एवं श्रद्धा का सम्यक हेतु है। ◆

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)
मो. : 9695232888

राम मंदिर पर लहराया आस्था का विजय ध्वज

–प्रज्ञा पांडेय

भगवान राम ने राम-रावण के युद्ध के दौरान जिस ध्वजा को सत्यशीलता और दृढ़ता का प्रतीक कहा, वह ध्वजा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच उनके मंदिर के शिखर पर लहराने लगी। शिखर पर कलश स्थापना भी हो गया और इसी के साथ राम मंदिर निर्माण पूर्णता को प्राप्त हो गया। नवनिर्मित मंदिर में अखंड ब्रह्मांड नायक भगवान श्रीराम की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा भी हो चुकी है। 25 नवंबर को मंदिर के शिखर पर धर्मध्वजा का आरोहण किया गया और कलश स्थापित कर दिया गया। रामनगरी में इस आयोजन को देश-विदेश के करोड़ों राम भक्तों की अटूट आस्था की विजय के दूसरे महापर्व के रूप में देखा गया। 25 नवंबर को ही विवाह पंचमी थी। इस नाते भी इस महोत्सव पर हर आम और खास की नजर बनी रही। धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व के इस आयोजन ने देश-दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा।

किसी भी मंदिर के शिखर पर वैसे भी धर्म ध्वज लहराना महज रस्म अदायगी नहीं है, बल्कि इसका अपना विशेष धार्मिक महत्व है। सनातन धर्म में मंदिर के शिखर को दैवीय ऊर्जा का सर्वोच्च प्रवेश द्वार माना जाता है। धर्म ग्रंथों में मंदिर पर फहरते धर्मध्वज को ब्रह्मांडीय ऊर्जा और मंदिर के गर्भगृह के बीच के संपर्क सूत्र के रूप में देखा जाता है। एक तरह से यह मंदिर में भगवान की मौजूदगी का सुस्पष्ट संकेतक भी है। इसे मंदिर का रक्षक भी माना जाता है। ध्वज मंदिर और उसके आस-पास के क्षेत्र को न केवल नकारात्मक शक्तियों से सुरक्षित रखता है, बल्कि वातावरण में सकारात्मकता और शुभता का संचार भी करता है। वैसे भी ध्वजारोहण मंदिर के निर्माण कार्य की पूर्णता का अंतिम और सबसे अहम प्रतीक है, जो यह बताता है कि मंदिर अब भक्तों के लिए दैवीय चेतना का केंद्र बन चुका है। इसमें संदेह नहीं कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की जन्मस्थली

अयोध्या ने एक बार पुनः इतिहास रचा है। हालांकि इतिहास रचने का काम अयोध्या अपने स्थापना काल से ही करती आ रही है। यह सप्तपुरियों में से एक है। भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र की खोज है। उनके मनोनुरूप ही धरती के इस भूभाग की वशिष्ठ और वैवस्वत मनु ने तलाश की थी क्योंकि भगवान विष्णु रामावतार उस भूमि पर लेना चाहते थे जो संस्कारों से पूर्ण हो। अयोध्या में चक्रवर्ती सम्राटों, महाराजाओं और राजाओं की गौरवशाली परंपरा रही है, इसलिए भी अयोध्या का विशेष महत्व है। उस परम पावन धरा पर भगवान राम का भव्य दिव्य मंदिर बना और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण कर मंदिर को पूर्णता प्रदान की। इसी के साथ सनातन धर्म में आस्था रखने वाले देश-विदेश के करोड़ों रामभक्तों का राममंदिर निर्माण का पांच सदी पुराना संकल्प भी पूरा हो गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तो यहां तक कह दिया कि सदियों के घाव और दर्द आज भर रहे हैं।

किसी भी मंदिर के शिखर पर वैसे भी धर्म ध्वज लहराना महज रस्म अदायगी नहीं है, बल्कि इसका अपना विशेष धार्मिक महत्व है। सनातन धर्म में मंदिर के शिखर को दैवीय ऊर्जा का सर्वोच्च प्रवेश द्वार माना जाता है। धर्म ग्रंथों में मंदिर पर फहरते धर्मध्वज को ब्रह्मांडीय ऊर्जा और मंदिर के गर्भगृह के बीच के संपर्क सूत्र के रूप में देखा जाता है। एक तरह से यह मंदिर में भगवान की मौजूदगी का सुस्पष्ट संकेतक भी है। इसे मंदिर का रक्षक भी माना जाता है। ध्वज मंदिर और उसके आस-पास के क्षेत्र को न केवल नकारात्मक शक्तियों से सुरक्षित रखता है, बल्कि वातावरण में सकारात्मकता और शुभता का संचार भी करता है। वैसे भी ध्वजारोहण मंदिर के निर्माण कार्य की पूर्णता का अंतिम और सबसे अहम प्रतीक है जो यह बताता है कि मंदिर अब भक्तों के लिए दैवीय चेतना का केंद्र बन चुका है।

जिस अयोध्या में कभी युद्ध नहीं हुआ और जहां के महापराक्रमी राजाओं ने कभी पराजित होना नहीं सीखा, उसी अयोध्या में मुगलकाल में आराध्य राम के मंदिर को तोड़कर सनातन धर्म को नष्ट करने का वज्रघाती आसुरी षड़यंत्र हुआ। राम मंदिर के लिए आस-पास के राजाओं, सिख धर्मगुरुओं, नाथपंथी योगियों, नागा संन्यासियों और वैरागियों ने अपने स्तर पर भारी संघर्ष किया। लाखों लोगों ने अपने जीवन की आहुति दी। बड़ा राम मंदिर आंदोलन हुआ। उसमें भी अयोध्या और सरयू कारसेवकों के रक्त से रंजित हुई। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर राम मंदिर का भव्य और दिव्य निर्माण हुआ। इस कार्यक्रम से कई दिन पूर्व से अयोध्या के मंदिरों में रामधुन आरंभ हो गई थी। इस बीच निषादराज चौराहे का लोकार्पण भी हुआ। मंदिर में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा कराने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब अयोध्या पहुंचे और उन्होंने रोड शो किया तो अयोध्या की जनता ने जय श्रीराम और जय हनुमान के उदघोष के साथ उनका स्वागत किया। उनके काफिले पर पुष्प वर्षा की।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष-बिंदु की साक्षी बन रही है। श्री राम जन्मभूमि मंदिर के शिखर ध्वजारोहण उत्सव का यह क्षण अद्वितीय और अलौकिक है। पवित्र ध्वज इस बात का सबूत होगा कि असत्य पर आखिरकार सत्य की जीत होती है। उन्होंने विश्वास जताया कि आज जिस तरह राम मंदिर का निर्माण पूर्ण हुआ है, उसी तरह वर्ष 2047 तक भारत को विकसित देश बनाने का हम भारतीयों का संकल्प अवश्य पूरा होगा।

मंदिर के शिखर पर फहराए गए त्रिकोणात्मक धर्म ध्वज पर भगवान श्री राम की प्रतिभा और वीरता का प्रतीक चमकते सूर्य की तस्वीर है। इस पर कोविदार वृक्ष की तस्वीर के साथ ओम लिखा है। यह भगवा ध्वज रामराज्य के आदर्शों का परिचायक होने के साथ ही मानवीय गरिमा, एकता और सांस्कृतिक निरंतरता का संदेशवाहक भी है। यह धर्म ध्वज पारंपरिक उत्तर भारतीय नागर शैली में बने मंदिर

शिखर पर फहराया गया। मंदिर के चारों ओर बना 800 मीटर का परकोटा मंदिर की शिल्प विविधता की बानगी है।

मुख्य मंदिर की बाहरी दीवारों पर वाल्मीकि रामायण पर आधारित भगवान श्री राम के जीवन से जुड़े 87 प्रसंग अगर पत्थरों पर उकेरे गए हैं तो घेरे की दीवारों पर भारतीय संस्कृति से संबद्ध 79 कांस्य-ढाल वाले प्रसंग भी अंकित किए गए हैं। राममंदिर में महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, महर्षि वाल्मीकि, देवी अहिल्या, निषादराज गुह और माता शबरी के मंदिर भी बनाए गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राम मंदिर के साथ ही वहां भी शीश झुकाए और दर्शन किया। माता अन्नपूर्णा के भी दर्शन किये।

अयोध्या में श्री राम मंदिर ध्वजारोहण समारोह में 500 से अधिक स्थानीय कलाकारों ने अपनी मनभावन प्रस्तुतियों से वहां उपस्थित जन समुदाय के दिलों पर राज किया। समारोह को लेकर रामनगरी हर्ष और उल्लास में रही। संस्कृति विभाग की ओर से 24 और 25 नवंबर को विभिन्न विधाओं के स्थानीय कलाकारों ने मनभावन प्रस्तुतियां दीं।

प्रधानमंत्री के एक भारत, श्रेष्ठ भारत के मंत्र को साकार करते हुए अयोध्या के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग विधाओं की सांस्कृतिक झलकियां निरंतर गूंजती रहीं, जो शहर की प्राचीन परंपराओं को नए आयाम देती दिखाई दीं। उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए लोक कलाकारों ने रंगारंग प्रस्तुति दी। अयोध्या धाम में मंचों पर पर ब्रज, अवध, बुंदेलखंड, पूर्वांचल और तराई क्षेत्रों की विविध लोक परंपराओं के संगम दृष्टिगोचर हुए। मथुरा के मयूर नृत्य, झांसी के राई नृत्य, अयोध्या के फरूवाही, बधावा और करवाहा नृत्य, लखनऊ के अवधी लोकनृत्य ने जहां समां बांधा, वहीं, सोनभद्र के करमा और बारह सिंहा, प्रयागराज के ढेढ़िया, आजमगढ़ के धोबिया, गोरखपुर के वनटांगिया लोकनृत्य देख लोग दांतों तले अंगुली दबाने को विवश हुए। भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय की ओर से दक्ष कलाकारों ने शहनाई, सारंगी, पखावज, बांसुरी, सरोद और सितार की सुरमयी प्रस्तुति दी तो सूफी गायन, भजन गायन, ब्रज के लोक गायन, भजन गायन के रंग भी वहां देखने-सुनने को मिले। कथक तथा विभिन्न लोक नृत्यों की मनोहारी प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। उत्तर प्रदेश की लोक-संस्कृति के विविध रंगों, परंपराओं, संगीत, नृत्य और क्षेत्रीय लोककला ने दुनिया का ध्यान अपनी

ओर आकृष्ट किया। संस्कृति विभाग से जुड़े कलाकारों ने अयोध्या धाम के महर्षि वाल्मीकि हवाई अड्डा, शंख चौराहा, भवदीय चौराहा, चूड़ामणि चौराहा, लता चौक, राम की पैड़ी पर अपनी प्रस्तुति देकर ध्वजारोहण कार्यक्रम में पधारे श्रद्धालुओं का भरपूर मनोरंजन किया। उन्हें अध्यात्म और संस्कृति की पावन सरयू में गोते लगाने को विवश किया।

अयोध्या में धर्म ध्वजा फहराए जाने का मुस्लिम समाज ने भी तहे दिल से स्वागत किया। बाबरी मस्जिद के सबसे पुराने मुद्दई हाशिम अंसारी के बेटे इकबाल अंसारी, स्थानीय मौलवी लियाकत अली खान, नूर आलम आदि ने ध्वजारोहण समारोह की प्रशंसा की और हिंदुओं-मुस्लिमों को मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा भी दी। राम मंदिर के पास ही टेंट की दुकान चलाने वाले शोएब खान ने कहा कि अयोध्या बढ़ रही है, संवर रही है। जब किसी भी शहर का विकास हो रहा हो तो सबका भला होता है, इसलिये बाकियों की तरह उन्हें भी फायदा होगा।

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण समारोह में शामिल होने के लिए सोनभद्र से पहुंचे आदिवासी और वनवासी समुदाय के प्रतिनिधियों का यहां भव्य स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राम मंदिर तोड़ने पर सिख गुरुओं के विरोध का जिक्र करते हुए कहा कि वर्ष 1510 से 1515 के बीच गुरु नानक देव अयोध्या धाम में श्री राम जन्मभूमि मंदिर के दर्शन करने गए थे। बाद में वर्ष 1528 में विदेशी आक्रांता बाबर के सैनिक ने उस मंदिर को तोड़ दिया था। उस समय बाबर के अत्याचारों को देखते हुए गुरु नानक देव ने बाबर को जाबर कहा था और उसके जुल्मों का कड़ा विरोध किया था। जब भी अयोध्या में राम जन्मभूमि के

लिए संघर्ष हुआ तो सिख गुरुओं, सिख योद्धाओं, निहंगों, संतों, राजाओं, आम नागरिकों, माताओं और बहनों ने अपना बलिदान देने में कभी संकोच नहीं किया।

मुख्यमंत्री ने बेहद पते की बात कही कि साम्राज्य आए और गए। पीढ़ियां आईं और गईं, लेकिन केवल आस्था ही हमेशा बनी रही। और वही आस्था एक बार फिर 500 साल बाद अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि पर भगवान राम के भव्य मंदिर के निर्माण को पूरा करने के इस महान यज्ञ की गवाह बनी है।

ध्वजारोहण समारोह को संबोधित करते हुए संघ प्रमुख मोहन भागवत ने तो यहां तक कह दिया कि राम मंदिर के लिए बलिदान देने वालों की आत्मा को आज ध्वजारोहण के बाद शांति मिली होगी। अयोध्या में राम मंदिर पर फहराया गया ध्वज उन सिद्धांतों का प्रतीक है जो व्यक्ति, परिवार और दुनिया भर में सद्भाव की प्रेरणा देते हैं। ध्वजारोहण को देश के साधु-संतों ने भावपूर्ण, ऐतिहासिक और सनातन गौरव का क्षण करार देते हुए इसे सनातन आस्था की वैश्विक प्रतिष्ठा का साक्ष्य बताया है। साधु-संतों की मानें तो धर्म ध्वजा का आरोहण भारतवर्ष की आध्यात्मिक विरासत को और भी मजबूत करता है तथा संपूर्ण विश्व में सनातन आस्था की महिमा को प्रखरता से स्थापित करता है।

अयोध्या में धर्म ध्वजा फहराए जाने का मुस्लिम समाज ने भी तहे दिल से स्वागत किया। बाबरी मस्जिद के सबसे पुराने मुद्दई हाशिम अंसारी के बेटे इकबाल अंसारी, स्थानीय मौलवी लियाकत अली खान, नूर आलम आदि ने ध्वजारोहण समारोह की प्रशंसा की और हिंदुओं-मुस्लिमों को मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा भी दी।

तारीखें गवाह हैं कि सदियों के संघर्ष और करोड़ों राम भक्तों की अटूट आस्था के बाद, इस भव्य मंदिर का निर्माण हुआ है। इसके शिखर पर लहराते भगवा ध्वज ने सत्य और धर्म की विजय और राम भक्तों की भावनाओं के सम्मान पर अपनी मुहर लगायी है। राम मंदिर के मुख्य शिखर पर फहराया जाने वाला यह धर्म ध्वज भी विशेष है, जिसे शास्त्रों और भगवान राम की सूर्यवंशी परंपरा के अनुरूप तैयार किया गया है। ध्वज का रंग केसरिया है। इस पर सूर्य देव का प्रतीक चिह्न अंकित है। जो भगवान राम के सूर्यवंशी होने की शाश्वत ऊर्जा और महिमा का प्रतिनिधित्व करता है। ध्वज मंदिर में विराजित देवता की महिमा और शक्ति का प्रतीक होता है। राम मंदिर पर लगा यह ध्वज मंदिर की ऊंचाई के साथ-साथ श्रद्धा की ऊंचाई का भी परिचायक है। गरुड़ पुराण में लिखा है कि मंदिर पर लगा ध्वज भगवान की उपस्थिति को दर्शाता है और उससे आसपास का क्षेत्र पवित्र हो जाता है। यही कारण है कि मंदिरों में ध्वज लगाने को अत्यंत शुभ माना जाता है। उसके दर्शन मात्र से देव प्रतिमा के दर्शन का पुण्य प्राप्त हो जाता है। देवर्षि नारद, सूत जी महाराज ने भी कमोवेश ऐसी ही व्यवस्था दी है।

जिस तरह भगवान राम का नाम उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण है, उसी तरह उनके मंदिर में फहराने वाली धर्मध्वजा भी बेहद महत्वपूर्ण है। राम स्वयं विग्रहवान धर्म है तो उनके मंदिर पर लहराने वाली ध्वजा की आध्यात्मिकता का क्या कहना? अयोध्या राम मंदिर पर फहराने वाली भगवा ध्वजा रामराज्य की परिकल्पना का प्रतीक है। इस ध्वज पर राम राज्य के राजकीय चिह्न कोविदार वृक्ष, सूर्यवंश के प्रतीक भगवान सूर्य और समन्वय के प्रतीक ऊँकार को अंकित किया गया है। इस ध्वज को पैराशूट फैब्रिक से बनाया गया है। इसे फहराने के लिए नायलॉन और रेशम मिश्रित मोटी रस्सी का प्रयोग किया गया है। ऐसा इसलिए किया गया है कि यह विशेष मौसम का सामना कर सके। ध्वज दंड कांस्य धातु का बना है। इसका वजन 5,500 किलोग्राम है। इसमें एक चक्र भी है, जिससे यह 360 डिग्री पर घूम सके और हवा की दिशा को दिखा सके।

सनातन धर्म में भगवा ध्वज ईश्वर की संप्रभुता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि त्रिभुजाकार ध्वज तीनों लोको पृथ्वी, आकाश और पाताल का परिचायक है। ज्योतिष ग्रंथों और वास्तु शास्त्र में त्रिभुजाकार ध्वज को अत्यंत शुभ, शक्ति और

विजय का प्रतीक माना गया है त्रिभुज का आकार शक्ति, ऊर्जा और विजय का प्रतिनिधित्व करता है। हिंदू मंदिरों के शिखर पर मुख्य रूप से लगने वाले त्रिभुजाकार ध्वज वहां दिव्य शक्तियों की उपस्थिति और भक्तों की आस्था की विजय का संकेत देते हैं।

प्राचीन काल से ही भगवा (केसरिया) रंग के त्रिकोणीय झंडे का उपयोग सूर्य उपासना में किया जाता था। सूर्य ग्रहों के राजा और शक्ति का कारक है। त्रिकोणीय केसरिया या भगवा ध्वज का संबंध सूर्य, गुरु और मंगल से होता है। सूर्य जहां शक्ति, साहस और नेतृत्व का प्रतिनिधि ग्रह है, वहीं गुरु धर्म और त्याग के कारक हैं। त्रिभुज का चिह्न साहस, धैर्य और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता का परिचायक है। ये गुण मंगल ग्रह से जुड़े हुए हैं। यही त्रिभुज अगर ध्वज की बजाय व्यक्ति की हथेली पर हो तो उसके अपने नफा-नुकसान हैं। सूर्य पर्वत पर बना त्रिभुज व्यक्ति को प्रसिद्धि, सम्मान और सफलता दिलाता है जबकि मंगल पर्वत पर बना त्रिभुज साहसी और किसी भी परिस्थिति का डटकर सामना करने में सक्षम बनाता है। मस्तिष्क रेखा पर स्थित त्रिभुज तीव्र बुद्धि और उच्च शिक्षा में सफलता का सूचक है।

ध्वज पताका सुरक्षा कवच की तरह काम करती है, जो मंदिर और उसके भक्तों को बुरी शक्तियों से बचाती है और देवताओं के आशीर्वाद को आकर्षित करती है। यह विजय का प्रतीक है। जिस प्रकार मंदिर की ध्वज पताका दूर से दिखाई देती है, उसी प्रकार ध्वज अर्पण करने से मनुष्य को जीवन के हर क्षेत्र में विजय और यश की प्राप्ति होती है। ज्योतिष ग्रंथों में कहा गया है कि ध्वजा में नवग्रह निवास करते हैं, इसलिए ध्वजा श्रद्धालु भक्तों के लिए रक्षा कवच का काम करती है।

लगभग सभी मंदिरों पर फहराया जाने वाला त्रिभुजाकार ध्वज ब्रह्मांडीय ऊर्जा, शक्ति और विजय का एक शक्तिशाली प्रतीक है। वास्तु शास्त्र के अनुसार भी ध्वजा शुभता का प्रतीकहै। घर पर ध्वजा लगाने से नकारात्मक ऊर्जा का नाश तो होता ही है साथ ही घर को बुरी नजर भी नहीं लगती है। घर के उत्तर-पश्चिम यानी वायव्य कोण में यदि ध्वजा लगाई जाती है तो राहु दोष से मुक्ति मिलती है। वायव्य कोण में राहु का निवास माना गया है। ज्योतिष के अनुसार राहु को रोग, शोक व दोष का कारक माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि यदि घर के इस कोने में किसी भी तरह का वास्तुदोष हो या न भी हो, तब भी ध्वजा लगाने से घर में रहने वाले सदस्यों के रोग, शोक व दोष का नाश होता है और घर की सुख व समृद्धि बढ़ती है।

मंदिर की पताका आध्यात्मिक शक्ति, सुरक्षा और विजय का प्रतीक है, जो भक्तों के लिए सकारात्मक ऊर्जा और आशीर्वाद को आकृष्ट करती है। पताका मंदिर के शिखर पर लगा विशिष्ट पहचान चिह्न होती है। यह मंदिर परिसर की पवित्रता दिव्यता को इंगित करती है और वातावरण में सकारात्मक व आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार करती है। ध्वज पताका सुरक्षा कवच की तरह काम करती है, जो मंदिर और उसके भक्तों को बुरी शक्तियों से बचाती है और देवताओं के आशीर्वाद को आकर्षित करती है। यह विजय का प्रतीक है। जिस प्रकार मंदिर की ध्वज पताका दूर से दिखाई देती है, उसी प्रकार ध्वज अर्पण करने से मनुष्य को जीवन के हर क्षेत्र में विजय और यश की प्राप्ति होती है। ज्योतिष ग्रंथों में कहा गया है कि ध्वजा में नवग्रह निवास करते हैं, इसलिए ध्वजा श्रद्धालु भक्तों के लिए रक्षा कवच का काम करती है।

कहते हैं कि देवासुर संग्राम में देवताओं ने अपने-अपने रथों पर जिन-जिन चिह्नों को लगाया, वे उनके ध्वज कहलाये। तभी से ध्वजा लगाने की परम्परा शुरू हुई। जिस देवता का जो वाहन है, वही उनकी ध्वजा पर भी अंकित होता है। विष्णुजी की ध्वजा का दंड सोने व ध्वज पीले रंग का होता है। उस पर गरुड़ का चिह्न अंकित होता है। शिवजी की ध्वजा का दंड चांदी व ध्वज सफेद रंग का होता है। उस पर वृषभ का चिह्न अंकित होता है। ब्रह्माजी की ध्वजा का दंड तांबे व ध्वज पद्मवर्ण का होता है। उस पर कमल का चिह्न अंकित होता है। गणेश जी की ध्वजा

का दंड तांबे या हाथी दांत का होता है जबकि ध्वज सफेद रंग का होता है। उस पर मूषक का चिह्न अंकित होता है। वहीं, सूर्यनारायण की ध्वजा का दण्ड सोने का व ध्वज पचरंगी होता है। उस पर आकाश का चिह्न अंकित होता है। मां गौरी की ध्वजा का दंड तांबे व ध्वज बीरबहूटी के समान रक्तवर्णी होता है। उस पर गोधा का चिह्न होता है। भगवती दुर्गा की ध्वजा का दंड सर्वधातु व ध्वज लाल रंग का होता है। उस पर सिंह का चिह्न अंकित होता है। भगवती चामुण्डा की ध्वजा का दंड लोहे व ध्वज नीले रंग का होता है। उस पर मुण्डमाला अंकित होती है। देवसेनापति कार्तिकेय की ध्वजा का दंड त्रिलौह होता है जबकि ध्वज चित्रवर्णी होता है। उस पर मयूर का चिह्न अंकित होता है। बलदेवजी की ध्वजा का दंड चांदी का व ध्वज सफेद रंग का होता है। उस पर हल का चिह्न अंकित होता है। कामदेव की ध्वजा का दंड त्रिलौह का (सोना, चांदी, तांबा मिश्रित) और ध्वज लाल रंग का होता है। उस पर मकर का चिह्न अंकित होता है। यमराज की ध्वजा का डंडा लोहे व ध्वज कृष्ण वर्ण का होता है। उस पर महिष (भैंसे) का चिह्न अंकित होता है। इन्द्र की ध्वजा का दंड सोने व ध्वज अनेक रंग का होता है। उस पर हाथी का चिह्न अंकित होता है। अग्नि की ध्वजा का दंड सोने का होता है जबकि ध्वज अनेक रंग का होता है। उस पर मेष का चिह्न अंकित होता है। वायु की ध्वजा का दंड लोहे व ध्वज काले रंग का होता है। उस पर हिरण का चिह्न अंकित होता है। धनपति कुबेर की ध्वजा का दंड मणियों व ध्वज लाल रंग का होता है। उस पर मनुष्य के पैर का चिह्न अंकित होता है। वरुण की ध्वजा पर कच्छप चिह्न होता है। ऋषियों की ध्वजा पर कुश का चिह्न अंकित होता है।

नारद-विष्णु पुराण में कहा गया है कि भगवान विष्णु के मन्दिर में ध्वजा चढ़ाने का महत्व यह है कि जितने क्षणों तक ध्वजा की पताका वायु के वेग से फहराती है, ध्वजा चढ़ाने वाले मनुष्य की उतनी ही पाप राशियां नष्ट हो जाती हैं। जब पाप नष्ट हो जाते हैं तो पुण्य का पलड़ा भारी हो जाता है और मनुष्य की मनचाही वस्तु उसे प्राप्त हो जाती है। मंदिर में ध्वजा चढ़ाने से मनुष्य की सम्पत्ति की सदा वृद्धि होती रहती है। ध्वजारोपण से मनुष्य इस लोक में सभी प्रकार के सुख भोग कर परम गति को प्राप्त होता है। जिस प्रकार मन्दिर की ध्वजा दूर से ही दिखाई पड़ जाती है, उसी प्रकार ध्वज अर्पण करने से मनुष्य हर क्षेत्र में

विजयी होता है और उसकी यश-पताका चारों ओर फहरती है। झंडे पर रंगों, प्रतीकों का चुनाव अक्सर उस मंदिर में विराजमान देवता के अनुरूप होता है। पूजा करने आने वाले श्रद्धालु जब उस ध्वज को देखते हैं तो उन्हें अपने भीतर विराजमान दैवीय शक्ति का स्मरण हो आता है। अर्जुन के रथ पर कपिध्वज लगा था जो हनुमान जी की शक्ति और आशीर्वाद का प्रतिनिधित्व करता था। सिर्फ हिंदू धर्म में ही नहीं, बल्कि अन्य बहुत सी संस्कृतियों में भी झंडा फहराना जीत के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। शीर्ष पर स्थित झंडा महज सजावटी वस्तु नहीं बल्कि विजय का प्रतीक है। सनातन धर्म से संबंधित स्थानों और मंदिरों में त्याग का प्रतीक भगवा झंडा लगाया जाता है। भगवा ध्वज अहंकार को त्यागने और स्वयं को परमात्मा के प्रति समर्पित करने की प्रेरणा देता है। गौरवशाली भगवा ध्वज को देखकर, मनुष्य व्यक्तिगत इच्छाओं और अहंकार पर काबू पाने की आवश्यकता को स्वीकार करना शुरू कर देते हैं व विनम्र और निःस्वार्थ जीवन के मार्ग पर चलते हैं। एक मंदिर के ऊपर का झंडा और ध्वज स्तंभ को पृथ्वी और ब्रह्मांड के बीच की कड़ी माना जाता है। जब मंदिर के शिखर पर झंडा फहराता है तो इसे स्वर्ग से पृथ्वी और इस क्षेत्र में रहने वाले भक्तों के लिए दिव्य ऊर्जा और आशीर्वाद के निरंतर प्रवाह के रूप में देखा जाता है। बड़े-बुजुर्ग अक्सर यह कहते हैं कि प्राचीन काल में, जब किसी प्रकार का कोई मानचित्र नहीं था, ऑनलाइन उपकरण नहीं थे तब यही झंडे दिशा बोध कराते थे। मंदिर दूर स्थित थे, लेकिन झंडे ऊंचे फहराए जाते थे, ताकि लोग अपनी तीर्थयात्रा और यात्रा के दौरान उन्हें आसानी से ढूंढ सकें।

भगवा ध्वज भारत की सनातन संस्कृति की धरोहर का सांस्कृतिक दूत है। धर्म ध्वजा केसरिया, भगवा या नारंगी रंग की होती है। सांस्कृतिक समग्रता और राष्ट्रीय एकता उसमें समाहित है। आदि काल से वैदिक संस्कृति, सनातन संस्कृति, हिंदू संस्कृति, आर्य संस्कृति, भारतीय संस्कृति को एक दूसरे का पर्याय माना गया है। समस्त मांगलिक कार्यों, उत्सवों, पर्वों, घरों, मंदिरों, देवालयों, वृक्षों, रथों और वाहनों पर भगवा ध्वज या केसरिया पताकाएं फहराई जाती रही हैं। भगवा ध्वज में तीन तत्व ध्वजा, पताका (डोरी) और डंडा होते हैं, जिन्हें आधिभौतिक, आध्यात्मिक, आधिदैविक ईश्वरीय स्वरूप माना गया है। ऐसी मान्यता है कि ध्वजा परम पुरुषार्थ को प्राप्त कराती है एवं सभी प्रकार से रक्षा करती है।

भगवा रंग भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। उसके बिना भारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वेद, उपनिषद, पुराण श्रुति इसका यशगान करते हैं। संतगण इसकी ओंकार, निराकार या साकार की तरह पूजा-अर्चना करते हैं। शायद यही कारण है कि देवस्थानों पर सिंदूरी रंग का ही प्रयोग होता है। इसी आस्था से अनुप्राणित होकर हिंदू नारियां सुहाग के प्रतीक के रूप में इसी रंग से मांग भरती हैं। साधुगण, वैरागी, त्यागी, तपस्वी भगवा वस्त्र धारण करते हैं। देश के मठ-मंदिरों ने ही प्राचीन काल से हमारा धर्म, हमारी अस्मिता संभालकर रखी है। सनातन धर्म में कोई भी शुभ कार्य करने से पूर्व यह मंत्र पढ़ा जाता है- मंगलम भगवान विष्णु, मंगलम गरुड ध्वजः मंगलम पुण्डरीकाक्षः, मंगलाय तनो हरिः। चाहे गृह प्रवेश हो, पाणिग्रहण संस्कार हो या अन्य कोई हिंदू रीति-रिवाज, पूजा पर्व, उत्सव हो घर के शिखर पर ध्वजा फहराई जाती है और भगवान विष्णु से प्रार्थना की जाती है कि प्रभु हम सब का मंगल करें। भगवान गरुड़ द्वारा रक्षित एवं सेवित ध्वजा हमारा मंगल करें। हमारे ऊपर आने वाली विघ्न-बाधाएं दूर करें।

वास्तु पुरूष सिद्धांत पर गौर करें तो घर की छत जातक की कुण्डली का बारहवां भाव कहलाती है। इस भाव से व्यक्ति के आर्थिक नुकसान, धन हानि और शैय्या सुख देखा जाता है। कालपुरुष सिद्धांत के अनुसार कुण्डली के बारहवें भाव में बुध और राहु अत्यधिक बुरा प्रभाव देते हैं। दूसरी ओर केतु और शुक्र बारहवें भाव में सर्वश्रेष्ठ प्रभाव देते हैं। कभी-कभी व्यक्ति के जीवन में ऐसी स्थिति आ जाती है जिससे आर्थिक समस्याओं और दुर्भाग्य से दो-चार होना पड़ता है जिसके तहत व्यक्ति कंगाल हो जाता है। यह स्थिति कुण्डली में राहू, केतु, शनि और मंगल के कारण आती है। ऐसे में वायव्य कोण में लगा ध्वज लोगों को संबल देता है और उनका रक्षा कवच बनता है। ◆

(लेखिका स्वतंत्र विचारक हैं)
मो. : 7459998968

अयोध्या को मिल रही वैश्विक पहचान

–सीमा राय

वर्ष 2025 का दीपोत्सव न सिर्फ भव्यता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक बना बल्कि इस बार के दीपोत्सव ने तकनीकी प्रबंधन का भी अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। पहली बार दीपोत्सव में महाकुंभ के तर्ज पर एआई कैमरों से इतने बड़े पैमाने पर निगरानी की गई। श्रद्धालुओं की सुरक्षा और भीड़ नियंत्रण के लिए पूरे मेला क्षेत्र में 11 आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) कैमरे तैनात किए गये। एआई कैमरे भीड़ का हेड काउंट करने के साथ ही संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान भी कर रहे थे। इस बार के आयोजन में अयोध्या डेवलपमेंट अथॉरिटी, पर्यटन-संस्कृति विभाग की कुल मिलाकर 22 झांकियां जैसे ही राम पथ से गुजरीं, श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। सजीव पात्रों और आधुनिक तकनीक से सजी इन झांकियों ने श्रीराम के जीवन और रामायण के सातों कांडों बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधा कांड, सुंदरकांड, लंका कांड और उत्तरकांड को साकार कर दिया। हर झांकी अपनी कथा कहती नजर आई, कहीं राम जन्म का उल्लास था, तो कहीं लंका विजय का पराक्रम।

जैसे ही पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने ढोल नगाड़े बजाकर साकेत महाविद्यालय परिसर से झांकियों को जय श्री राम का ध्वज लहराकर रवाना किया, पूरा वातावरण जय श्रीराम के उद्घोष से गूंज उठा। इन झांकियों के राम पथ पर पहुंचते ही लगा मानो त्रेता युग का वैभव और मर्यादा वर्तमान में लौट आई हो। सांस्कृतिक शोभायात्रा के दौरान पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि ''सीएम योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में 2017 से लगातार भगवान राम की

श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या से बढ़े रोजगार के अवसर

अयोध्या में वर्ष 2017 से दीपोत्सव प्रारंभ हुआ। इस बीच यहां 1,78,32,717 भारतीय एवं 25,141 विदेशी पर्यटक अयोध्या पहुंचे। इस प्रकार वर्ष 2017 में कुल 1,78,57,858 श्रद्धालुओं ने रामनगरी में दर्शन-पूजन किया। दीपोत्सव के दूसरे वर्ष 2018 में 1,95,34,824 भारतीय एवं 28,335 विदेशी नागरिकों ने रामनगरी में दर्शन किया। इस प्रकार कुल मिलाकर 1,95,63,159 लोगों ने वर्ष 2018 में अयोध्या में दर्शन-पूजन किया। ऐसे ही वर्ष 2019 में 2,04,63,403 भारतीय एवं 38,321 विदेशी मिलाकर कुल 2,04,91,724 श्रद्धालुओं ने अयोध्या में दर्शन किया। वर्ष 2020 में कोरोना के कारण पर्यटकों की संख्या में कमी देखने को मिली। इस साल 61,93,537 भारतीय एवं 2,611 विदेशी मिलाकर कुल 61,96,148 सैलानी अयोध्या पहुंचे। वहीं वर्ष 2021 में 1,57,43,359 भारतीय एवं 31 विदेशी पर्यटकों ने अयोध्या में दर्शन पूजन किया। 2021 में कुल 1,57,43,390 श्रद्धालु अयोध्या दर्शन के लिए आए। इसी क्रम में वर्ष 2022 में 2,39,09,014 भारतीय एवं 1465 विदेशी पर्यटक अयोध्या पहुंचे। कुल मिलाकर 2,39,10,479 पर्यटक अयोध्या दर्शन के लिए यहां पहुंचे। वर्ष 2023 में भारतीय 5,75,62,428 और 8468 विदेशी पर्यटक आए। इस तरह कुल 5,75,70,896 श्रद्धालु अयोध्या दर्शन के लिए पहुंचे। इसके बाद 2024 में 16,43,93,474 भारतीय और 26048 विदेशी श्रद्धालु आए। इस तरह कुल 16,44,19,522 लोगों ने अयोध्या दर्शन किए। वहीं, 2025 में जनवरी से जून तक 23,81,64,744 भारतीय और 49,993 विदेशी समेत कुल 23,82,14,737 श्रद्धालु अयोध्या दर्शन के लिए पहुंचे।

पावन धरती पर दीपोत्सव का कार्यक्रम दिव्यता, भव्यता, अलौकिकता के साथ मनाया जा रहा है। हर बार हम अपना ही रिकॉर्ड तोड़कर नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। हमारा देश राम राज्य की संकल्पना को साकार कर विश्व की अगुवाई करेगा और विकसित देश बनेगा।''

पुष्प वर्षा और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरु वशिष्ठ के साथ, भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न व हनुमान जी का पूजन और वंदन किया तो साक्षात त्रेता युग का आभास हुआ। स्वर्ण सिंहासन, रथ, अश्व और सुसज्जित राजसभा ने त्रेता कालीन रामराज्य को सजीव कर दिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सबसे पहले राम, लक्ष्मण, मां सीता और हनुमान जी को माला पहनाई। आगे आगे राम, उनके पीछे माता सीता, लक्ष्मण और हनुमान रथ पर सवार हुए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्वयं रथ को खींचकर आगे बढ़ाया, संतों ने भी उनका सहयोग किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भगवान श्रीराम की आरती की, फिर प्रतीकात्मक राज्याभिषेक कर उनका आशीर्वाद लिया। इसके बाद कैबिनेट मंत्री सूर्य प्रताप शाही, जयवीर सिंह और राकेश सचान ने मंच पर पहुंचकर राम दरबार का पूजन-अर्चन किया।

सूचना विभाग की झांकियों में योगी सरकार की उपलब्धियों का चित्रण किया गया। प्रयागराज महाकुंभ, काशी कॉरिडोर, डिफेंस कॉरिडोर, प्रधानमंत्री आवास योजना, मुख्यमंत्री आवास योजना, स्वच्छ और हरित उत्तर प्रदेश, आत्मनिर्भर नारी, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना, आयुष्मान कैशलेस जैसी योजनाओं की झलक देखने को मिली। इन झांकियों ने विकास और संस्कृति के अनोखे संगम को प्रदर्शित किया। जहां आधुनिक उत्तर प्रदेश,

राम राज्य की भावना के अनुरूप आगे बढ़ता दिखाई दिया। जैसे-जैसे झांकियां राम पथ से गुजरीं, श्रद्धालुओं ने जगह-जगह पुष्प वर्षा की, दीप जलाए और आरती उतारी। कलाकारों के समूह रास्ते भर ढोल-नगाड़ों और लोक नृत्यों के माध्यम से माहौल को भक्तिमय बनाते रहे। हरियाणा का फाग, केरल की कथककली, राजस्थान का झूमर, पंजाब का भांगड़ा, ओडिशा का संबलपुरी, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश की लोक कलाओं ने आयोजन को राष्ट्रीय स्वरूप दे दिया। पूरा मार्ग भक्ति, संगीत और उल्लास से थिरक उठा।

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग की ओर से राम की पैड़ी पर

1100 स्वदेशी ड्रोन ने आकाश में रामायण के विविध प्रसंगों की झलकियां पेश कीं। संगीत व रोशनी से सजे लेजर शो में प्रभु श्रीराम के जीवन व आदर्शों को आधुनिक तकनीक के माध्यम से चित्रित किया गया। इसमें जय श्रीराम, धनुर्धारी श्रीराम, श्रीराम संग मां सीता, भैया लक्ष्मण, संकट मोचन हनुमान जी, पुष्पक विमान, श्रीराम जन्मभूमि मंदिर जैसी अनेक मनमोहक आकृतियां शामिल रहीं। राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की प्रोफेसर के निर्देशन में राम की पैड़ी पर पारंपरिक चौक पूरन शैली में स्वास्तिक बनाया गया, जिसने श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। प्रोफेसर डॉ. सरिता द्विवेदी (रंगोली प्रमुख) के नेतृत्व में प्रोफेसर्स और छात्र छात्राओं ने मिलकर कई आकर्षक कलाकृतियां बनाईं। दीपों से सजी इन कलाकृतियों ने दीपोत्सव की शोभा को और भी निखार दिया। कर्मकांड की तैयारी में जुटे संस्कृत से एम.ए. के विद्यार्थी करन पांडे ने बताया कि हर साल से ज्यादा धूमधाम से इस बार दीपोत्सव मनाया गया। योगी आदित्यनाथ के सीएम बनने के बाद हमारा सनातन लगातार मजबूत हुआ है। हमें गर्व है कि सीएम ने रामकथा पार्क में आकर हमारा उत्साह बढ़ाया। करन इस समय अयोध्या के गुरुकुल में रहकर संस्कृत की पढ़ाई कर रहे हैं।

अयोध्या में उमड़े श्रद्धालुओं को राम की पैड़ी, धर्मपथ और सरयू घाट के दिव्य नजारे ने मंत्रमुग्ध कर दिया। कई विदेशी पर्यटक अपने कैमरों में दीपोत्सव की हर झलक कैद करते रहे। दीपोत्सव से उत्साहित होकर उन्होंने जय श्रीराम का उद्घोष किया। पोलैंड से आई सिवोना ने कहा कि वे अपने दोस्तों के साथ पहली बार अयोध्या आई हैं। यहां के लोग हमेशा मुस्कुराते रहते हैं। बहुत खुशमिजाज और फ्रैंडली हैं। अयोध्या भले ही दिल्ली जैसा बड़ा शहर नहीं है, लेकिन यहां आकर हमें बहुत शांति और प्रसन्नता मिली।

योगी सरकार ने रामनगरी में अपना पुराना सभी रिकॉर्ड तोड़ दिया। योगी सरकार के नौवें दीपोत्सव में अयोध्या ने फिर से नए रिकॉर्ड बनाए। दीपोत्सव 2025 में 26,17,215 (26 लाख, 17 हजार 215) दीप प्रज्ज्वलित किए गए। वहीं दूसरा रिकॉर्ड सरयू मैया की आरती का रहा, जहां एक साथ 2128 वेदाचार्यों, अर्चकों व साधकों ने सरयू मैया की आरती की। ड्रोन से की गई

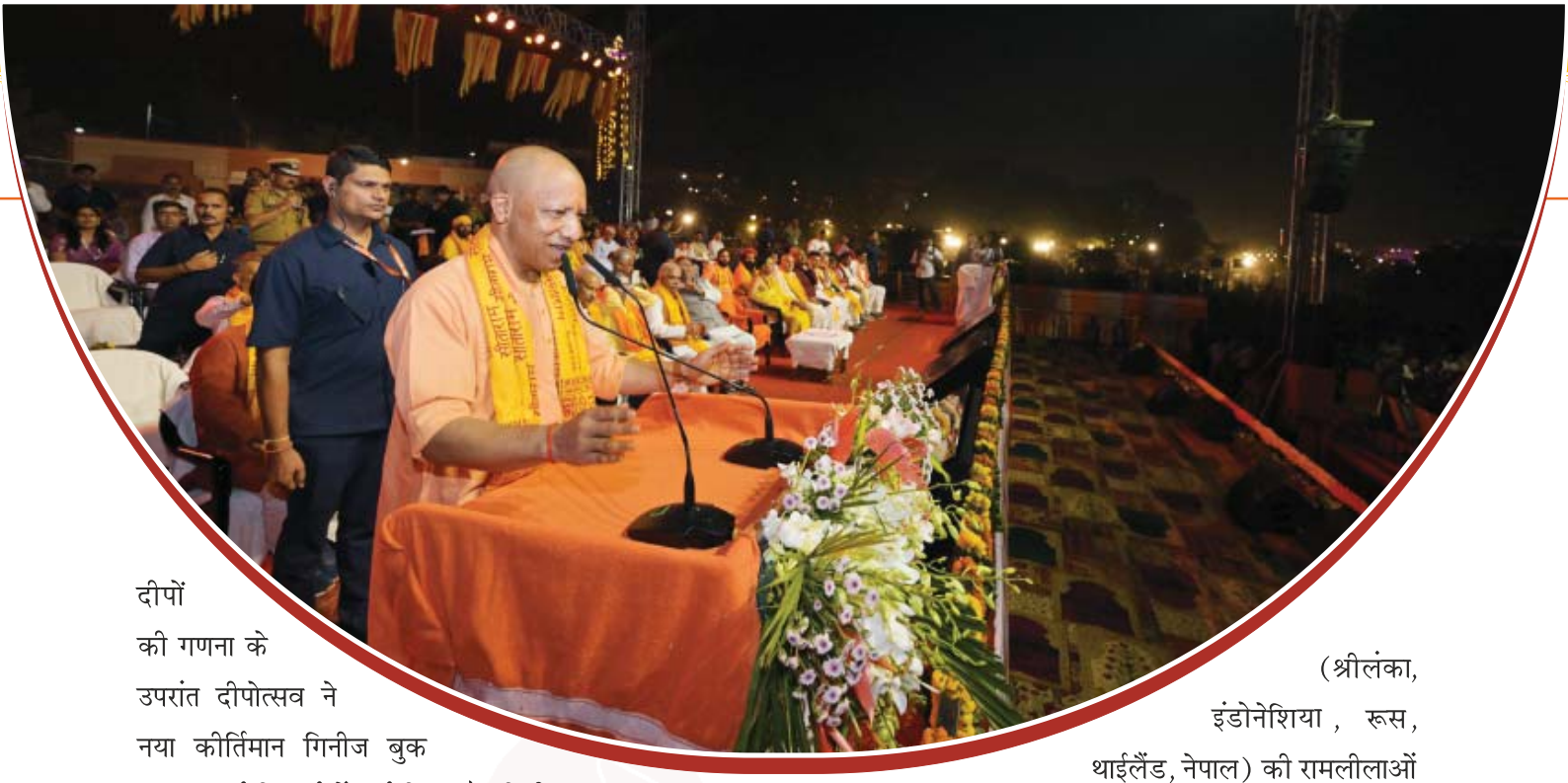

दीपों की गणना के उपरांत दीपोत्सव ने नया कीर्तिमान गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के प्रतिनिधि की तरफ से नए रिकार्ड की घोषणा की गई। दीपोत्सव पर रामनगरी अयोध्या के घर-घर, मठ-मंदिर, आश्रम, चौराहों, भवनों समेत हर जगह दीप प्रज्ज्वलित किए गए। राम की पैड़ी समेत 56 घाटों पर 26,17,215 दीप जलाए गए। इसके लिए डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों, इंटर कॉलेजों व स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़े 32 हजार से अधिक स्वयंसेवकों ने दीप बिछाए और तेल बाती डालकर दीप प्रज्ज्वलन में महती भूमिका निभाई।

श्रीराम मंदिर के प्रमुख द्वार पर तोरण द्वार बनाए गए। कई कुंतल फूलों से पूरी अयोध्या नगरी सजाई गई। शोभायात्रा में 22 झांकियां निकलीं। रूस, थाईलैंड, इंडोनेशिया, नेपाल और श्रीलंका के कलाकारों ने रामलीला का मंचन किया। देश-विदेश व प्रदेश के 2 हजार से अधिक कलाकारों की प्रतिभा को रामनगरी में मंच मिला। चौराहों पर रंगोली बनाकर समृद्धि की कामना की गई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, भगवान श्री राम लला के मंदिर भी पहुंचे। वहां उन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का पूजन-अर्चन किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दीपोत्सव में रामलीलाओं का मंचन देखा। अयोध्या में पांच देशों (श्रीलंका, इंडोनेशिया, रूस, थाईलैंड, नेपाल) की रामलीलाओं का मंचन किया गया। इसके साथ ही मेजबान उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों के कलाकारों ने भी रामलीला का मंचन किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंच से विभिन्न प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित भी किया।

पूर्व सांसद डॉ. रामविलास वेदांती महाराज ने कहा कि अयोध्या में ऐसा दीपोत्सव कभी कोई सोच भी नहीं सकता था। लेकिन योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री बनकर असंभव को संभव बना दिया। उनसे पहले कई मुख्यमंत्री हुए, पर किसी ने अयोध्या में ऐसे भक्ति-महोत्सव का स्वप्न तक नहीं देखा। लोग सैफई महोत्सव करवाते रहे और अपने घरों को सजाते रहे, पर योगी जी ने अयोध्या में दीपोत्सव का शुभारंभ किया। हर वर्ष दीपों की संख्या बढ़ रही है। योगी जी ने विश्व भर के हिंदुओं का मस्तक गर्व से ऊंचा किया है।

जगतगुरु रामानुजाचार्य डॉ. राघवाचार्य जी महाराज ने कहा कि पिछली सरकारों ने अयोध्या को अंधकार में धकेल दिया था। लोग अयोध्या का नाम लेने से कतराते थे। आज वही अयोध्या प्रकाश की राजधानी बन गई है। योगी जी सादगी और सिद्धांत की जीवंत मूर्ति हैं। पहले के मुख्यमंत्री अयोध्या देखना नहीं चाहते थे, पर योगी जी लगभग हर महीने अयोध्या पहुंच कर संतों का हाल जानते हैं। सम्राट विक्रमादित्य ने कभी अयोध्या को सजाया था, योगी जी ने विक्रमादित्य की ही परंपरा को पुनर्जीवित किया है।

जगतगुरु श्री राम दिनेशाचार्य महाराज जी ने कहा कि हम अक्सर राम की पैड़ी पर कल्पना भर करते थे कि मां सरयू दीप जला रही हैं और श्रीराम की प्रतीक्षा कर रही हैं। योगी जी के नेतृत्व में वह कल्पना साकार हुई है। अब लगता है कि शरीर से हम कलियुग में हैं, पर मन और आत्मा से त्रेता युग में जी रहे हैं।

श्री जगद्गुरु रामानुजाचार्य श्रीधराचार्य जी महाराज ने कहा कि यह हमारा परम सौभाग्य है कि कलियुग में त्रेता का स्मरण हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या के नए युग की शुरुआत की और योगी जी ने उसे भक्ति के शिखर पर पहुंचाया। पहले अयोध्या नीरस थी, अब हर गली-गली राम नाम से गूंज रही है। जो लोग कभी अयोध्या नहीं आना चाहते थे, वे आज तिलक और जनेऊ के साथ अपनी पहचान पर गर्व कर रहे हैं।

जगतगुरु वासुदेवाचार्य जी महाराज ने कहा कि प्रभु श्रीराम सूर्यवंश में अवतरित हुए और राम मंदिर का निर्माण सूर्य के पर्याय आदित्यनाथ के काल में हुआ, यह सूर्य कृपा का जीवंत प्रतीक है। योगी आदित्यनाथ मां सरयू के लिए भगीरथ की भूमिका निभा रहे हैं।

उन्होंने गोलियां चलाईं, हम अयोध्या में दीप जला रहे हैं-योगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पहली बार वर्ष 2017 में दीपोत्सव में 1,71,000 दीप जलाए गए थे। वहीं आज नौवें दीपोत्सव पर केवल अयोध्या धाम में 26 लाख से अधिक दीप प्रज्ज्वलित किये गये। अगर पूरे प्रदेश भर में गणना की जाए तो 1 करोड़ 51 लाख से अधिक दीप अकेले दीपोत्सव के अवसर पर प्रज्ज्वलित किये गये। सनातन धर्म 500 वर्षों तक लगातार संघर्ष करता रहा। उस संघर्ष की परिधि अयोध्या में है और उन्हीं संकल्पनाओं की परिणिति स्वरूप अयोध्या में भव्य और दिव्य मंदिर का निर्माण हुआ है। हमें यह विस्मृत नहीं करना चाहिए कि इसी अयोध्या में राम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान कांग्रेस ने न्यायालय में भगवान श्रीराम को मिथक बताया था। कांग्रेस ने शपथ पत्र में दिया था कि भगवान श्रीराम काल्पनिक हैं। समाजवादी पार्टी ने रामभक्तों पर अयोध्या में गोलियां चलाई थीं। यह वही लोग हैं, जो मुगलों की कब्र पर जाकर सजदा करते हैं, लेकिन जब अयोध्या में रामलला विराजमान होने के कार्यक्रम में उन्हें निमंत्रण दिया जाता है, तो निमंत्रण को ठुकरा देते हैं। हमें उनके इस दोहरे चरित्र का स्मरण रखना होगा कि कैसे भारत की सनातन आस्था को ये अपमानित करते रहे हैं और किस प्रकार के शब्दों का प्रयोग करते रहे हैं। कभी राम के अस्तित्व पर ही प्रश्न खड़ा करते थे तो कभी एक आक्रांता की कब्र पर जाकर सजदा करने का कार्य करते थे। इन्होंने भारत की आस्था को अपमानित करने के लिए कोई भी कोर-कसर नहीं छोड़ी। यह वही लोग हैं जिन्होंने राम मंदिर आंदोलन के दौरान अयोध्या धाम में मंदिर का निर्माण न हो, इसके लिए अपने अधिवक्ताओं को विरोध में खड़ा किया था, ताकि वे राम मंदिर के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर सकें। उन्होंने गोलियां चलाईं, हम अयोध्या में दीप जला रहे हैं। उन्होंने ताले लगवाए और आप पूज्य संतों के आशीर्वाद से अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर निर्मित हो गया है। यह रामभक्तों के संकल्पों का प्रतिफल है। उन्होंने अयोध्या की पहचान को मिटाया था, अयोध्या को फैजाबाद बनाया था। वहीं, हम लोगों ने अयोध्या की पहचान को अयोध्या के साथ जोड़कर इसे फिर से अयोध्या धाम बनाने का कार्य किया है। आस्था को कोई राजनीति कैद नहीं कर सकती। यह वही लोग हैं जो अंग्रेजों की ''फूट डालो और राज करो'' की नीति को अपनाकर आज भी जातीय विद्वेष पैदा करने का काम कर रहे हैं। हमें जाति-जाति के बीच में लड़ाने का काम कर रहे हैं। सदियों तक विदेशी आक्रांताओं ने भारत भूमि को अपवित्र करने के लिए सारे यत्न किए, सारे षड्यंत्र रचे। आस्था के प्रतीकों को तोड़ा गया, अपमानित किया गया, आस्था खंडित हुई, लेकिन श्रद्धा डिगी नहीं, वह अचल रही।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्या में पहले कुछ चंद हजार श्रद्धालु आते थे, तो अव्यवस्था और गंदगी का अंबार दिखाई देता था। अब हर वर्ष 6 करोड़ से लेकर 10 करोड़ श्रद्धालु अकेले अयोध्या धाम में आ रहे हैं। यह अयोध्या अब वही है, जिसे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संकल्पों के अनुरूप हमने विकसित किया है। हमने तय किया कि यह अयोध्या अब दुनिया की वैश्विक आध्यात्मिक राजधानी के रूप में अपने आप को स्थापित करेगी और भारत की आस्था की राजधानी के रूप में भी स्थापित होगी। वर्ष 1949 में जब रामभक्तों ने एक प्रयास किया कि रामलला भी आजादी के साथ विराजमान हों, तो मूर्ति हटाने का हुक्म जारी हो गया और कहा गया, मामला शांत करो, मामला शांत करो, लेकिन भक्तों ने कहा, कोई भी मूर्ति को राम जन्मभूमि से हटा नहीं सकता। वर्ष 1950 से लेकर 1980 तक मंदिर को ताले में बंद किया गया। वर्ष 1986 तक यही स्थिति बनी रही। रामलला की जन्मभूमि में ही भगवान रामलला को कैद करके रखने का प्रयास हुआ। कौन थे वे लोग जो आस्था को इस कदर कैद करने का कार्य कर रहे थे? परंतु हम सब इस बारे में जानते हैं, भारत की आस्था, सनातनी आस्था बिना रुके, बिना झुके, बिना थके निरंतर अपने संघर्ष के पथ पर आगे बढ़ती गई। सत्य और न्याय ने धर्म स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त किया। आज जब रामलला अपने स्वयं के भव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं, तब कोई भी ऐसा देश या दुनिया का सनातन धर्मावलंबी नहीं होगा, जिसका मन गौरव के साथ आनंदित न हुआ हो। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं, जो अयोध्या आए और श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण की आधारशिला रखी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने देश भर में भगवान राम से जुड़े सभी आराध्य स्थलों का दर्शन किया और फिर 22 जनवरी 2024 को श्रीराम जन्मभूमि पर भगवान श्रीराम को विराजमान करके सनातन आस्था को सम्मान देने का कार्य किया। भारत की सनातन आस्था को मिल रहा यह सम्मान उन्हीं संकल्पनाओं के दृढ़ अभियान का हिस्सा है।

अयोध्या में देश ही नहीं विदेश से भी आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ रही है। श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या से अयोध्या में रोजगार में भी तेजी से वृद्धि होने लगी है। प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार तेजी से अयोध्या का विकास करने में लगी है। शानदार फोर लेन व सिक्स लेन सड़कों से अयोध्या जुड़ रही है। विश्वस्तरीय हवाई अड्डा व रेलवे स्टेशन के अलावा तमाम अन्य सुविधाएं विकसित होने से अयोध्या पर्यटकों को आकर्षित कर रही है। दीपोत्सव 2025 के इस आयोजन ने यह संदेश दिया कि अयोध्या केवल तीर्थ नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना का हृदय है। लाखों दीपों की रोशनी और झांकियों की भव्यता ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि जब आस्था और विकास साथ चलते हैं, तो परिणाम राम राज्य की झलक जैसा होता है। ◆

(लेखिका स्वतंत्र पत्रकार हैं)
मो. : 9415132728

सनातन धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा का ध्वजारोहण

–राघवेन्द्र प्रताप सिंह

09 नवंबर 2019, 05 अगस्त, 2020 तथा 22 जनवरी, 2024 के उपरांत 25 नवंबर, 2025 का दिवस भी मंगलवार को सनातनधर्मियों के स्वर्णिम इतिहास का अध्याय बन गया। जन्मभूमि पर बने नव्य, भव्य और दिव्य राममंदिर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अभिजित मुहूर्त में 25 नवंबर को ध्वजारोहण किया। इस अनुष्ठान के प्रति उनकी संकल्पबद्धता इसी से प्रतीत होती है कि ध्वजारोहण के बाद ही जलपान किया। हम राम मंदिर के मुख्य शिखर पर लगने वाली ध्वजा को 22 फीट लंबाई और 11 फीट चौड़ाई की माप में बांध सकते हैं, लेकिन सत्य तो यह है कि सनातन धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा की प्रतीक इस पताका से संपूर्ण विश्व के रामभक्त आहलादित हैं। यह ध्वजारोहण न केवल मंदिर की पूर्णता का संकेत है, बल्कि वैश्विक स्तर पर सभी रामभक्तों के लिए पवित्र संदेश भी है।

ध्वजारोहण के दिन मंगलवार को माता सीता और भगवान राम के विवाह की तिथि यानी विवाह पंचमी भी थी। इस विशेष दिवस पर धारण करने के लिए भगवान राम के लिए स्वर्ण जड़ित पीतांबरी के साथ पश्मीना का शाल बनवाया गया। माता सीता के लिए सिल्क की साड़ी तथा अन्य विग्रहों के लिए कर्नाटक से विशेष रूप से कपड़े मंगाए गए। प्रख्यात डिजाइनर अंबेडकरनगर के मनीष तिवारी ने इसकी डिजाइन तैयार की थी। रेशम से बने रामलला व माता सीता के वस्त्रों पर स्वर्ण के तार लगे हैं। सभी भगवत विग्रहों के वस्त्रों पर भिन्न-भिन्न डिजाइन है। सभी के वस्त्र पर सोने के तारे जड़े हैं। सभी देवी देवताओं ने अलग-अलग रंग के पश्मीना शाल धारण किया है। मनीष ने बताया कि हर अवसर पर देश के अलग-अलग प्रांतों के सिल्क से रामलला के वस्त्र तैयार किए जाते हैं।

शिखर सहित 161 फीट ऊंचे मंदिर पर लगा 41 फीट ऊंचा ध्वजदंड 360 डिग्री घूमने वाले चैंबर पर स्थापित है। ध्वजदंड

का दस फीट हिस्सा शिखर के अंदर रहेगा, जिसमें बाल बेयरिंग्स लगी हैं ताकि ध्वज तेज हवा में भी सुरक्षित रहे। मुख्य शिखर के साथ ही पूरक मंदिरों के लिए छोटे ध्वज तैयार हैं। ध्वजाएं बनाने में पैराशूट कपड़े का उपयोग किया गया है। मुख्य शिखर की ध्वजा की लंबाई 22 फीट और चौड़ाई 11 फीट है जबकि उप मंदिरों पर लगने वाली ध्वजा छह फीट लंबाई और चार फीट चौड़ी है। सभी ध्वजाओं का रंग केसरिया है, जो धर्म, त्याग और साहस का प्रतीक है। ध्वजाओं में तीन मुख्य प्रतीकों ऊँ, सूर्य और कोविदार वृक्ष को अंकित किया गया है। सूर्य भगवान राम के सूर्यवंशी वंश होने का प्रतीक है, जो शौर्य, तेज और पराक्रम को दर्शाता है। वहीं ऊँ सनातन संस्कृति के अध्यात्म, अनंतत्व और निरंतर गतिशीलता का परिचायक है, वहीं त्रेता युग के कोविदार वृक्ष का उल्लेख वाल्मीकि रामायण में, विशेष रूप से अयोध्या कांड में कई बार मिलता है। छोटे ध्वजों को भगवान शिव, गणेश, हनुमान, सूर्यदेव, देवी भगवती और देवी अन्नपूर्णा के मंदिर के शिखरों पर फहराया जाएगा।

सनातन संस्कृति के सरोकारों के संदेशों का ध्वजारोहण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगभग 18 महीने बाद एक बार फिर रामलला के समक्ष थे। रामलला के मंदिर निर्माण के संकल्प की पूर्णता के समर्पण को लेकर। 'राम काज कीन्हें बिनु मोहिं कहा विश्राम' के उद्घोष के साथ कोरोना जैसी त्रासदी के बीच पांच अगस्त 2020 को मंदिर के निर्माण की शिला रखकर शुरुआत करने वाले प्रधानमंत्री ने जब मंगलवार को रामलला सरकार के नव्य, दिव्य और भव्य मंदिर पर ध्वजारोहण किया तो संदेश स्पष्ट था कि यह मात्र एक धार्मिक ध्वज नहीं। यह ध्वज सनातन संस्कृति के सरोकारों का संदेश है। सनातनधर्मियों के धैर्य, विवेक, आस्था के प्रति अटूट संकल्प का प्रतीक है। स्मरण कीजिए प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि यह सिर्फ एक देवमंदिर नहीं है। भारत की दृष्टि का, भारत के दर्शन का, भारत के दिग्दर्शन का मंदिर है। यह राम के रूप में राष्ट्र की चेतना का मंदिर है। यह ध्वजा विश्व को यह समझाने का प्रयास भी है कि राम सनातन संस्कृति के प्रतीक पुरुष हैं। इसलिए न तो कभी राम को भारत की आत्मा से अलग किया जा सकता है और न सनातन संस्कृति को। कोई भी शक्ति न तो सनातन की चेतना को शांत कर सकती है और न इसके प्रवाह को रोक सकती है। यह विश्व को चिरकाल तक यह समझाएगी और सावधान भी करेगी कि न तो राम को भारत की आत्मा से अलग किया जा सकता है और सनातन को। यह ध्वजा पांच सदी तक चले संघर्ष के परिणाम तक पहुंचने की प्रतीक होगी। प्रतीक

होगी रामभक्तों के बलिदान की। अयोध्या या अजुध्या नाम के उस भाव की सार्थकता बताने की जो समझाती है, इसके साथ युद्ध करना संभव नहीं है। यह अजेय है और अजेय रहेगी। जिन्हें विश्वास न हो तो आज के संदर्भ में ही देख सकते हैं। जो लोग अयोध्या की संस्कृति और पहचान से टकराए। राम और राम मंदिर पर ही नहीं, त्रेतायुग में अयोध्या के अस्तित्व पर सवाल उठाए। वे आज कहां पड़े हैं। जिन्होंने अयोध्या और राम के अस्तित्व के प्रति समर्पण का संकल्प लिया। इसके सत्य के साथ खड़े होकर संघर्ष किया वे आज किस शिखर पर खड़े हैं। ध्वजा सनातन में छिपे इस भाव को भी समझाने का प्रतीक होगी कि न राम ने किसी से भेदभाव किया और न सनातन संस्कृति इसकी अनुमति देती है। जिसे विश्वास न हो वह राम की सुग्रीव, जामवंत, निषादराज से मित्रता और शबरी के जूठे बेर खाने की कथा गौर करे। प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के विकास और सनातनी चेतना के विस्तार के 1000 साल के एजेंडे की रूपरेखा रखी थी। मंदिर के शिखर पर लहराती यह ध्वजा उस एजेंडे का निरंतर स्मरण भी कराएगी।

राम मंदिर की यह यात्रा बताती है कि आस्था से बड़ा कोई बल नहीं, सत्य से दीर्घ कोई परंपरा नहीं, और धर्म से दृढ़ कोई संस्कृति नहीं। मंदिर का निर्माण, प्राणप्रतिष्ठा और ध्वजारोहण, इन तीनों ने मिलकर सनातन धर्म की उस निरंतरता को फिर स्थापित किया है जिसे समय ने चुनौती दी थी, लेकिन कभी पराजित नहीं कर पाया। अयोध्या ने एक बार फिर घोषणा की है कि भारत की आत्मा सनातन है। यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्मारक नहीं, बल्कि उन करोड़ों सनातनधर्मियों की विजय का प्रतीक है, जिन्होंने धैर्य, संयम और विश्वास के साथ यह यात्रा पूरी की। शताब्दियों से चली आ रही एक सांस्कृतिक कल्पना अब मूर्त रूप लेकर भारत को उसके मूल स्वरूप की ओर लौटाती दिख रही है।

समय निश्चित रूप से बदलता है। जिस किसी को इस कहावत पर अब भी यकीन न हो उनके लिए नवनिर्मित राममंदिर प्रमाण है। एक दिन था 30 अक्टूबर, 1990 का। तब मंदिर (विवादित ढांचे) पर ध्वजा लगाने चढ़े तीन कारसेवकों को पुलिस की गोलियों से अपने प्राणों की आहुति देकर सनातन संस्कृति के शंखनाद की प्रतीक ध्वजा को इस ढांचे पर लगाने की कीमत चुकानी पड़ी थी। वहीं पर फूलों की बौछार के बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ध्वजारोहण किया। आज से लगभग 35 वर्ष पहले इस स्थान पर लगाया ध्वज इसलिए हटा दिया गया था क्योंकि तब की राजनीति को इस ध्वज का रंग सामाजिक शांति को भंग करने वाला लग रहा था। पर, संघर्ष और सनातन चेतना की ताकत देखिए कि उस ध्वज को हटाने के साथ शुरू हुआ संघर्ष अब प्रधानमंत्री के हाथों ध्वज लगने के स्वप्न को साकार कर रहा है। यह ध्वज लोकशक्ति में छिपी बड़े परिवर्तन की शक्ति का साक्षी है। आज से 35 साल पहले लगाया गया ध्वज तब की राज्य सरकार ने हटा दिया था, आज वहीं पर देश की सरकार के मुखिया ध्वजा लगा चुके हैं।

इस बदलाव के भावों को समझना जरूरी है ताकि यह समझा जा सके कि इन 35 वर्षों में आया परिवर्तन इतना महत्वपूर्ण क्यों है। उस दिन अर्थात 30 अक्टूबर, 1990 को देश भर से अयोध्या में जुटे रामभक्त जिन्हें कारसेवक नाम दिया गया था, इस स्थान पर आकर सिर्फ यह बताना चाहते थे कि यह उनके आराध्य सनातन संस्कृति के प्रतीक भगवान राम का जन्मस्थान है, जिसे मस्जिद बताया जा रहा है। इसलिए वहां उन्हें बेरोकटोक पूजा की अनुमति मिले। आंदोलनकारियों का तर्क था कि सृष्टि के प्रारंभ से ही अपनी उपस्थिति को प्रमाणित करती अयोध्या में त्रेतायुग में जन्मे राम के जन्मस्थान पर यदि कुछ सौ साल के इतिहास वाले अपने स्वामित्व का दावा करते हैं तो वह मानने योग्य नहीं है। पर तब की सरकार को शायद इनके यह तर्क अपनी राजनीति की राह के रोड़े लगे। लिहाजा उसने अयोध्या में परिन्दा को भी पर न मारने देने का ऐलान कर राम की धरती को संग्राम की भूमि बना दिया।

कारसेवकों के संकल्प को तत्कालीन सरकार पुलिस और अर्धसैनिक बलों की शक्ति से भी नहीं रोक पाई। तीन कारसेवकों ने उस ढांचे पर चढ़कर सनातन संस्कृति के प्रतीक भगवा ध्वज

को लगा दिया जिसके भीतर भारतीय चेतना के सर्वोच्च प्रतिनिधि रामलला वर्तमान भारतीय संविधान लागू होने से पहले से स्थापित थे। तब रामलला के विराजित होने के बाद लागू हुए संविधान की आड़ ले मुलायम सिंह यादव की सरकार ने गोलियों से उन कारसेवकों को छलनी कर दिया। सरकार चाहती तो उन कारसेवकों को गिरफ्तार भी कर सकती थी, लेकिन उनका उद्देश्य शायद ढांचा बचाने या शांति स्थापित करने से अधिक एक वर्ग को यह संदेश देना था कि आपकी अहमन्यता बचाने के लिए मुझे रामभक्तों पर गोली चलाने से भी गुरेज नहीं है। मोदी के हाथों लगा ध्वज आने वाली पीढ़ियों को न सिर्फ लोकशाही की शक्ति समझाएगा बल्कि यह भी बताएगा कि सांस्कृतिक चेतना के प्रति समर्पण कितना बड़ा बदलाव कर सकता है। जिस ध्वज को लगाने के लिए लोगों को अपने प्राण गंवाने पड़े, अब वहीं पर प्रधानमंत्री ध्वज लगा चुके हैं।

आंदोलन से ध्वजारोहण की अनूठी बलिदान गाथा आंदोलन, बलिदान, न्याय और धैर्य का विजय प्रतीक है। राम मंदिर के साथ पूर्ण हुई शांतिपूर्ण धैर्य के साथ सत्य की प्रतीक्षा अयोध्या का राम मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि करोड़ों सनातनधर्मियों की आस्था, संघर्ष, कारसेवकों के बलिदान, न्याय और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की वह कथा है, जिसने लगभग पांच दशकों तक देश की राजनीति, समाज और जनभावनाओं को प्रभावित किया। यह यात्रा 16वीं शताब्दी में मंदिर के ध्वंस से शुरू होकर 2024 के भव्य राम मंदिर शिल्प तक पहुंची और 2025 में ध्वजारोहण के साथ पूर्णता की ओर बढ़ी। इस लंबी यात्रा में संघर्ष, आंदोलन, न्यायिक लड़ाई और करोड़ों भक्तों का धैर्य शामिल रहा। यह यात्रा न केवल आंदोलन का वर्णन करती है, बल्कि देश की सांस्कृतिक स्मृति में स्थायी स्थान भी बनाती है। यह गाथा संघर्ष, अदालत और आस्था का संयुक्त दस्तावेज है।

राम जन्मभूमि को लेकर आंदोलन का विस्तार धीरे-धीरे जनभावना में ऐसा समा गया कि यह व्यक्तिगत धार्मिक मांग भर न रहकर पूरे समाज की सांस्कृतिक अस्मिता का प्रतीक बन गया। संतों, सामाजिक संगठनों और आम भक्तों की सहभागिता ने इसे राष्ट्रव्यापी स्वरूप दिया। जन्मभूमि से जुड़ा मामला अंततः न्यायालय की सतर्क प्रक्रिया से गुजरा। लंबी सुनवाई, धाराप्रवाह

बहस और गहन ऐतिहासिक पुरातात्विक विश्लेषण के बाद वह रास्ता खुला जो संघर्ष को समाधान तक ले गया। अंत में न्याय ने वही स्वीकार किया, जिसे करोड़ों लोगों ने सदियों से अपनी आस्था के रूप में जिया था कि रामलला वहीं विराजमान हों, जहां उनका जन्म हुआ था। यह सनातन परंपरा की उस शक्ति का उदाहरण था जो शांतिपूर्ण धैर्य के साथ सत्य की प्रतीक्षा करती है।

भूमिपूजन से लेकर गर्भगृह, मंडप, शिखर और परिक्रमा के निर्माण तक यह प्रक्रिया केवल स्थापत्य कला नहीं थी। यह भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण का उत्सव थी। रामलला के नए मंदिर में विराजमान होने के साथ ही अयोध्या में ऐसा दृश्य बना, जिसे युगों की प्रतीक्षा के बाद पूरा हुआ स्वप्न कहा जा सकता है। प्राणप्रतिष्ठा के भावुक पल ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह मंदिर केवल ईंट-पत्थर का ढांचा नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा में रचे-बसे धर्म का पुनर्प्राणन है। मुख्य शिखर पर भगवा ध्वज का आरोहण मंदिर की पूर्णता का संकेत ही नहीं, बल्कि वह घोषणा है कि सनातन धर्म की परंपराएं आज भी उतनी ही जीवित हैं जितनी रामायण के काल में थीं। ध्वज वह प्रतीक बन गया जिसने यह संदेश दिया कि भारत की सभ्यता किसी बाहरी चुनौती से दबती नहीं, वह संघर्ष करती है, पुनर्जीवित होती है और अंत में पहले से अधिक उज्ज्वल होकर खड़ी रहती है। आज अयोध्या केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि विश्वभर में सनातन संस्कृति का केंद्र बनती जा रही है। नए घाट, धर्मपथ, रामायण संग्रहालय, भक्तिपथ, उन्नत सुविधाएं और मंदिर की भव्यता ने इसे वैश्विक तीर्थ बना दिया है। यह परिवर्तन केवल आधारभूत ढाँचे का नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आत्मविश्वास का प्रतीक है। राम मंदिर की यह यात्रा बताती है कि आस्था से बड़ा कोई बल नहीं, सत्य से दीर्घ कोई परंपरा नहीं, और धर्म से दृढ़ कोई संस्कृति नहीं। मंदिर का निर्माण, प्राणप्रतिष्ठा और ध्वजारोहण, इन तीनों ने मिलकर सनातन धर्म की उस निरंतरता को फिर स्थापित किया है जिसे समय ने चुनौती दी थी, लेकिन कभी पराजित नहीं कर पाया। अयोध्या ने एक बार फिर घोषणा की है कि भारत की आत्मा सनातन है। यह मंदिर केवल धार्मिक स्मारक नहीं, बल्कि उन करोड़ों सनातनधर्मियों की विजय का प्रतीक है, जिन्होंने धैर्य, संयम और विश्वास के साथ यह यात्रा पूरी की। शताब्दियों से चली आ रही सांस्कृतिक कल्पना अब मूर्त रूप लेकर भारत को उसके मूल स्वरूप की ओर लौटाती दिख रही है। इसके लिए सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी को श्रेय देना चाहिए, जिसने इसे अपने घोषणापत्र का अंग बनाकर मूर्त रूप दिया। ◆

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)
मो. : 9454080002

सदियों के संकल्प का ध्वजारोहण

–एस.पी. सिंह

''जहाँ इतिहास की सांझ में भरोसे की नई सुबह उगती है, वहीं अयोध्या अपने भविष्य को सांस्कृतिक आस्था और आधुनिक विकास की साझा रोशनी में पहचानती है।''

जब 'अभिजित मुहूर्त' में राम मंदिर के 191 फीट ऊँचे शिखर पर भगवा ध्वज फहराया गया, तो वह केवल किसी धार्मिक रेखा का समापन नहीं था– वह एक नए अध्याय की शुरुआत का संकेत था। सुबह जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंदिर परिसर के सहायक मंदिरों– जैसे सप्तमंदिर, शेषावतार मंदिर, माता अन्नपूर्णा मंदिर का दर्शन करते हुए आगे बढ़े, तब माहौल श्रद्धा से भर चुका था। मुख्य गर्भगृह में रामलला के सामने उनकी पूजा-अर्चना की तस्वीरें पूरे देश में फैल चुकी थीं। जैसे ही दोपहर करीब 12 बजे, शुभ अभिजित मुहूर्त में उन्होंने और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने मिलकर शिखर पर त्रिकोणीय भगवा ध्वज फहराया जिस पर सूर्य, 'ॐ' और कोविदार वृक्ष का प्रतीक उकेरा था–अयोध्या की हवा में एक ऐसा क्षण आया जिसे इतिहास शायद हमेशा याद रखेगा।

यह ध्वज सिर्फ कपड़ा नहीं था, यह मानो सदियों की वेदना, संकल्प, संघर्ष और गौरव को एक साथ उठा रहा हो। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में उसी भाव को शब्द दिए–500 साल का संकल्प पूरा होने, सांस्कृतिक आत्मगौरव की

पुनर्स्थापना और आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श स्थापित करने की बात कही। उन्होंने कहा ''यह भारत की आत्मा का ध्वज है।''

मंदिर परिसर भी स्वयं एक कहानी बना हुआ था-नागरा शैली में निर्मित मुख्य मंदिर, दक्षिण भारतीय प्रभावों से सजे परकोटा के 800 मीटर लंबे परिक्रमा पथ, पत्थरों पर उकेरी गई 87 रामायण-झलकियाँ, और 79 कांस्य कलाकृतियाँ जो भारतीय लोककथाओं और सांस्कृतिक विविधता को जीवंत कर रही थीं। यह परिसर केवल पूजा का स्थान नहीं, बल्कि एक चलायमान इतिहासालय बन चुका था।

समारोह में उत्तर प्रदेश सरकार की भूमिका भी अत्यंत ही महत्वपूर्ण थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कार्यक्रम को केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि नए युग के आरंभ के रूप में देखा। उन्होंने इसे ''सत्य की अमर ज्योति'' और ''रामराज्य के आदर्शों की प्रतिष्ठा'' का उत्सव कहा। उनकी दृष्टि अयोध्या को केवल तीर्थस्थल के रूप में नहीं, बल्कि विश्वस्तरीय सांस्कृतिक-पर्यटन नगरी के रूप में पुनर्रचित करने पर केंद्रित रही। सड़कों का चौड़ीकरण, रामपथ, भक्तिपथ, जन्मभूमि पथ, सरयू घाटों का सौंदर्य, नए होटलों और सैकड़ों होम-स्टे की व्यवस्था, रेलवे स्टेशन का आधुनिकीकरण, और सबसे बढ़कर-महर्षि वाल्मीकि इंटरनेशनल एयरपोर्ट-ये सभी उस बड़े दृष्टिकोण का हिस्सा थे जिसमें अयोध्या को आधुनिकता और परंपरा का समागम बनाना लक्ष्य था। समारोह खत्म होने के बाद भी अयोध्या की हवा में श्रद्धा और उत्साह के स्वर गूंजते रहे। लोगों के चेहरों पर सिर्फ प्रसन्नता ही नहीं थी, बल्कि वह किसी गहरे, लंबे समय से प्रतीक्षित संतोष की आभा भी थी। ''कोई इसे 500 साल बाद मिली पूर्णता'' कह रहा था, कोई ''भारत की आत्मा की पुर्नस्थापना''। अयोध्या उस दिन केवल एक नगर नहीं रही-वह एक भाव बन गई।

यह ध्वज सिर्फ कपड़ा नहीं थाय यह मानो सदियों की वेदना, संकल्प, संघर्ष और गर्व को एक साथ उठा रहा हो। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में उसी भाव को शब्द दिए-500 साल का संकल्प पूरा होने, सांस्कृतिक आत्मगौरव की पुनर्स्थापना और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक आदर्श स्थापित करने की बात कही। ''यह भारत की आत्मा का ध्वज है''।

अयोध्या-नवउदय: राम ध्वज के आरोहण के साथ भगवा वंश में नए युग की शुरुआत

समारोह के केंद्र में पारंपरिक खड़े थे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। चेहरे पर प्रशासक की दृढ़ता और एक साधु की शांत स्थिरता साथ-साथ। यह वह क्षण था, जब उनकी वर्षों की योजना, राजनीति और उनकी वैचारिक जमीन एक ही ध्वज में सिमटकर ऊपर उठ रही थी। राम मंदिर का निर्माण पूरा होने के बाद यह पहला अवसर था जब ध्वज को औपचारिक रूप से पूरे विश्व के सामने फहराया जा रहा था। इसके पीछे सिर्फ धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि शासन, अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक कूटनीति का बड़ा खाका छिपा था-ऐसा खाका जो योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में आकार ले रहा है।

अयोध्या की यात्रा पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह बदली है. वह किसी भी भारतीय शहर के लिए दुर्लभ परिवर्तन है। 2019 में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले के बाद राम मंदिर निर्माण का रास्ता साफ हुआ। 2020 में मंदिर की नींव डाली गई और 22 जनवरी, 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में मंदिर का प्राण-प्रतिष्ठा समारोह हुआ। इन सभी तारीखों ने अयोध्या को इतिहास के नए अध्याय में डाल दिया। परंतु वास्तविक परिवर्तन 2024 के बाद शुरू हुआ, जब मंदिर बनने के साथ-साथ पूरे शहर को सांस्कृतिक राजधानी के रूप में देखने का दृष्टिकोण स्थापित किया गया और इस दृष्टिकोण का सबसे केंद्रीय चेहरा बने योगी आदित्यनाथ।

योगी आदित्यनाथ की राजनीति को अक्सर ''सांस्कृतिक राष्ट्रवाद'' के चश्मे से देखा जाता रहा है। परंतु अयोध्या को लेकर उनकी दृष्टि केवल धार्मिक नहीं है। वे अयोध्या को एक ''क्लासिकल सिटी मॉडल'' के तहत आधुनिक भारत की आध्यात्मिक राजधानी के रूप में स्थापित करना चाहते हैं- एक

ऐसी राजधानी, जिसमें परंपरा की आत्मा जिंदा रहे और आधुनिकता के संसाधन भी उसे गति दें। राम ध्वज का आरोहण इसी यात्रा की प्रतीकात्मक परिणति है।

दरअसल, योगी आदित्यनाथ अयोध्या को सिर्फ राम मंदिर तक सीमित नहीं रखना चाहते। उनके शासन में अयोध्या धार्मिक स्थल से बढ़कर एक वैश्विक आध्यात्मिक अर्थव्यवस्था का केंद्र बन रही है। पिछले 8 वर्षों में राज्य सरकार ने जिस तेजी से अयोध्या के इंफ्रास्ट्रक्चर को रूपांतरित किया है, वह किसी भी विकसित राष्ट्र के पर्यटन मॉडल से कम नहीं है। 2024 में बने अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे ने विदेशी पर्यटकों की संख्या कई गुना बढ़ा दी है। शहर में लक्जरी होटलों, धर्मशालाओं, सांस्कृतिक परिसरों और घाटों का निर्माण केवल पर्यटन के लिए नहीं, बल्कि 'लिविंग हेरिटेज सिटी' की अवधारणा के लिए किया जा रहा है।

अयोध्या में जो नए मार्ग बने हैं- राम पथ, भक्ति पथ, धर्म पथ-वे केवल सड़कें नहीं हैं। वे शहर के मानस को पुनर्संगठित करने की प्रक्रिया का हिस्सा हैं। योगी आदित्यनाथ के करीबी अधिकारियों के अनुसार इन मार्गों का उद्देश्य यात्रियों को मंदिर तक ले जाना ही नहीं, बल्कि रामायण की कथा-स्मृति को शहर के ताने-बाने में बुन देना है। यही कारण है कि मार्गों के दोनों ओर मूर्तियां, रामायण-प्रेरित झांकियां और सांस्कृतिक प्रतीक लगाए गए हैं। यह अयोध्या को 'थीमैटिक सिटी' बनाने का सुनियोजित प्रयास है।

लेकिन सबसे दिलचस्प बात यह है कि योगी शासन अयोध्या को आर्थिक दृष्टि से भी पुनः स्थापित कर रहा है। स्थानीय लोगों के लिए यह परिवर्तन जीवन-स्तर में सुधार का अवसर बना है। लकड़ी की कारीगरी, मूर्ति-शिल्प, माथे का काम और धार्मिक आभूषण- इन सभी स्थानीय उद्योगों को नए बाजार मिले हैं। आंकड़ों के अनुसार पिछले दो वर्षों में अकेले अयोध्या जिले में लगभग 3 लाख रोजगार प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उत्पन्न हुए हैं। यह सिर्फ धार्मिक पर्यटन का परिणाम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उद्योगों को प्रोत्साहित करने की सरकार की नीति का फल है।

यही वह बिंदु है, जहाँ योगी आदित्यनाथ का विजन अन्य मुख्यमंत्रियों से अलग दिखाई देता है। वे अयोध्या को एक 'स्पिरिचुअल इकोनॉमी' के रूप में विकसित कर रहे हैं- एक ऐसी अर्थव्यवस्था, जिसमें श्रद्धा और व्यवसाय दोनों एक-दूसरे को सहारा देते हैं। मंदिर परिसर में प्रतिदिन आने वाले लोगों की संख्या ने स्थानीय छोटे व्यापारियों से लेकर बड़े होटल समूहों तक को नई ऊर्जा दी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अयोध्या अब उस सूची में शामिल होने लगी है, जहाँ काशी, मक्का, वेटिकन सिटी और क्योटो जैसे शहर आते हैं।

लेकिन यह यात्रा इतनी सहज नहीं रही। अयोध्या को बदलने के लिए केवल निर्माण पर्याप्त नहीं था, इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रशासनिक दृढ़ता दोनों आवश्यक थीं। योगी सरकार ने भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास, मूल ढांचे के संरक्षण और सुरक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने में लगातार काम किया। शुरुआती विरोध, भूमि मूल्य में अप्रत्याशित वृद्धि, और स्थानीय असंतोष जैसे मुद्दों को संभालना आसान नहीं था। परंतु सरकार ने संवाद और पुनर्वास पैकेजों के सहारे इन चुनौतियों को काफी हद तक नियंत्रित किया।

राम ध्वज के आरोहण का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि यह केवल मंदिर निर्माण के पूरा होने का प्रतीक नहीं है। यह योगी आदित्यनाथ के उस सपने का संकेत है, जिसमें अयोध्या भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में उभरती है। इस सपने में धार्मिक आस्था को आधुनिकता, तकनीक और आर्थिक विकास के साथ जोड़ा गया है। समारोह में योगी आदित्यनाथ का वह वाक्य उल्लेखनीय था जिसमें उन्होंने कहा-

''अयोध्या अब केवल इतिहास की भूमि नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा है।''

उनके इस कथन में राजनीतिक संदेश भी छिपा हुआ था। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि वे अयोध्या को उत्तर प्रदेश की नई पहचान बनाना चाहते हैं- एक ऐसी पहचान जिसमें राज्य की छवि केवल अपराध और पिछड़ेपन से नहीं बल्कि संस्कृति, पर्यटन और आर्थिक विकास से जुड़ी हो।

ध्वज आरोहण समारोह समाप्त होने के बाद भी लोगों की भीड़ मंदिर परिसर से नहीं हटी। सभी के चेहरों पर एक तरह का हल्का गर्व दिखाई दे रहा था। यह केवल धार्मिक भावना का

परिणाम नहीं था, बल्कि यह एक राष्ट्र की सांस्कृतिक स्मृति को पुनर्जीवित देखने की अनुभूति थी। अयोध्या अब केवल मंदिर नहीं, बल्कि एक विचार बन चुकी है-और इस विचार का शिल्पकार बनने का श्रेय योगी आदित्यनाथ को जाता है।

राम ध्वज आरोहण और योगी आदित्यनाथ का सांस्कृतिक-राजनीतिक मॉडल

राम ध्वज के फहरने के बाद मंदिर परिसर कुछ देर तक जैसे स्थिर हो गया था। हवा में वह ध्वज जिस तरह फैलकर लहरा रहा था, ऐसा लगता था जैसे सदियों की कहानी अपनी आवाज पाने लगी हो। परंतु यह क्षण केवल भावनात्मक नहीं था, यह राजनीति, शासन और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का वह मुकाम था, जिसकी तैयारी योगी आदित्यनाथ ने लंबे समय से की थी। अयोध्या का यह रूप किसी संयोग से नहीं बना, बल्कि योजनाओं, रणनीतियों और दृढ़ प्रशासनिक फैसलों की लगातार प्रक्रिया के बाद सामने आया है।

अयोध्या की यात्रा पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह बदली है. वह किसी भी भारतीय शहर के लिए दुर्लभ परिवर्तन है। 2019 में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले के बाद राम मंदिर निर्माण का रास्ता साफ हुआ। 2020 में मंदिर की नींव डाली गई, और 22 जनवरी, 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में मंदिर का प्राण-प्रतिष्ठा समारोह हुआ। इन सभी तारीखों ने अयोध्या को इतिहास के एक नए अध्याय में डाल दिया। परंतु वास्तविक परिवर्तन 2024 के बाद शुरू हुआ जब मंदिर बनने के साथ-साथ पूरे शहर कोएक सांस्कृतिक राजधानी के रूप में देखने का दृष्टिकोण स्थापित किया गया। और इस दृष्टिकोण का सबसे केंद्रीय चेहरा बने योगी आदित्यनाथ।

22 जनवरी, 2024 की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या में तेजी से बदलती स्थितियों ने केंद्र और राज्य की सरकारों दोनों को दिखा दिया था कि इस शहर की संभावनाएँ धार्मिक पर्यटन की सीमाओं से कहीं अधिक हैं। रोजाना आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या, होटल इंडस्ट्री में उछाल, स्थानीय बाजारों में रौनक और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मीडिया की निरंतर मौजूदगी ने यह स्पष्ट कर दिया कि अयोध्या पूर्ण आर्थिक उत्तरदायित्व और अवसरों का केंद्र बन चुकी है। यही वह बिंदु है जहाँ योगी आदित्यनाथ का विजन अपनी ठोस आकृति लेने लगा। योगी आदित्यनाथ इस परिवर्तन को केवल भौतिक विकास तक सीमित नहीं रखना चाहते थे। वे अयोध्या को एक 'लिविंग सिविलाइजेशन' में बदलने की इच्छा रखते हैं- एक ऐसा नगर जहाँ इतिहास झुककर वर्तमान से बात करे और वर्तमान गर्व के साथ भविष्य को सौंप सके। मंदिर परिसर का निर्माण, उसका भव्य डिजाइन और ध्वजारोहण समारोह इन सभी बातों के केंद्र में थे, लेकिन इन्हें टिकाऊ भविष्य के लिए सक्रिय बनाना ही वास्तविक चुनौती थी।

मंदिर परिसर के बाहर फैले निर्माण कार्यों में एक ऐसी आधुनिकता दिखाई देती है, जो किसी भी पारंपरिक धार्मिक नगर से बिल्कुल अलग है। चौड़ी सड़कें, संगठित पार्किंग, हाई-टेक सुरक्षा, और दिव्य प्रकाश व्यवस्था के साथ अयोध्या आज वैश्विक धार्मिक केंद्र की आकृति ग्रहण कर रही है। यह परिवर्तन सुव्यवस्थित योजनाओं और तेज प्रशासनिक निष्पादन के कारण संभव हुआ है। उदाहरण के तौर पर 2024 और 2025 के बीच जिस गति से राम पथ और जन्मभूमि पथ का विस्तार हुआ, उसमें शहरी विकास मंत्रालय के अधिकारियों ने इसे ''रिकॉर्ड ब्रेकिंग अर्बन प्रोजेक्ट'' बताया था।

इस समझ के साथ ही अयोध्या में पर्यटन प्रबंधन को अलग स्तर पर स्थापित किया गया है। मंदिर परिसर में प्रवेश और निकास के लिए अलग-अलग मार्ग बनाए गए हैं, पार्किंग को बहुपरत बनाया गया है। श्रद्धालुओं के लिए अलग योजनाएँ तैयार की गई हैं। इस मॉडल को आगे चलकर काशी और मथुरा में भी लागू करने की तैयारी है।

ध्वजारोहण के समय उपस्थित संत समाज, रामायण मंडली, कलाकार और स्थानीय समुदाय के लोग इस पूरे पुनर्जागरण का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा थे। योगी आदित्यनाथ ने

बार-बार यह कहा है कि अयोध्या किसी एक संस्था, संगठन या सरकार का प्रोजेक्ट नहीं है, यह समाज के हर वर्ग की भावनाओं और सहभागिता से संभव हुआ है। मंदिर परिसर में कार्यरत मजदूरों, शिल्पकारों और इंजीनियरों को सम्मानित करने का निर्णय इसी सोच का परिणाम था। यह संदेश सीधा था-अयोध्या सिर्फ मंदिर नहीं, बल्कि श्रम और समर्पण का सामूहिक प्रयास है।

राम मंदिर के भीतर स्थापित रामलला की मूर्ति, उसकी दिव्य चमक और वास्तुशिल्प देखने लायक है। मंदिर की मेहराबें, स्तंभ, शिल्प और प्रकाश व्यवस्था सब कुछ एक अनूठी आध्यात्मिक चरित्र रचते हैं। इन सभी के पीछे सोमनाथ, काशी विश्वनाथ और मीनाक्षी मंदिर जैसे भव्य भारतीय मंदिरों की वास्तु-परंपरा को आधुनिक इंजीनियरिंग के साथ जोड़ने की बड़ी योजना थी। यह मंदिर भारत की आध्यात्मिक इतिहास और तकनीकी आधुनिकता का संगम है। योगी आदित्यनाथ मानते हैं कि यह मंदिर भविष्य की पीढ़ियों को यह सिखाएगा कि परंपरा और तकनीक विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकती हैं। लेकिन विकास और भव्यता के इस दौर में एक महत्वपूर्ण चुनौती भी उभरती है- जनसुविधाओं का विस्तार। मंदिर खुलने से पहले प्रतिदिन लगभग 15-20 हजार श्रद्धालु अयोध्या आते थे, परन्तु 2024 के बाद यह संख्या लाखों तक पहुँच गई। शहर का ढांचा इतनी बड़ी संख्या को समायोजित करने के लिए तैयार नहीं था। यही कारण है कि 2025 में राज्य सरकार ने अयोध्या में एक 'स्मार्ट मोबिलिटी प्लान' लागू किया। ई-रिक्शा, बैटरी बसें और 'फुटफॉल प्रेडिक्शन सिस्टम' जैसे नए प्रयोग इसी योजना का हिस्सा थे। इस योजना को देखने आए देशों में जापान, थाईलैंड और नेपाल भी शामिल थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि अयोध्या केवल भारतीय नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मॉडल बनने की ओर अग्रसर है।

आर्थिक दृष्टि से इस परिवर्तन का सबसे बड़ा प्रभाव स्थानीय जनता पर पड़ा है। फल-फूल रहे होटलों, बाजारों और

ट्रैवल सेवाओं की वजह से स्थानीय आय में कई गुना वृद्धि हुई है। मंदिर के आसपास के क्षेत्रों में व्यावसायिक गतिविधियों को नई रफ्तार मिली है। इससे अयोध्या उन शहरों की श्रेणी में शामिल हो चुकी है, जो 'रिलिजियस टूरिज्म' से सबसे अधिक आर्थिक लाभ कमाते हैं। राज्य के आंकड़ों के अनुसार 2025 में अयोध्या की वजह से उत्तर प्रदेश को पर्यटन क्षेत्र में 30 प्रतिशत की अतिरिक्त आय हुई है।

अयोध्या का सांस्कृतिक पुनर्जागरण और योगी आदित्यनाथ की दीर्घकालिक नीति-दृष्टि : एक शहर, जो अब दर्शन और दस्तावेज दोनों है।

अयोध्या में होने वाले आयोजनों का स्वरूप पिछले कुछ वर्षों में जिस तेजी से बदल रहा है, वह उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक प्राथमिकताओं का बेहद स्पष्ट संकेत देता है। राम मंदिर निर्माण के बाद से इस शहर ने न केवल अपनी खोई पहचान पाई, बल्कि भारत के सांस्कृतिक भविष्य की धुरी बनने की शुरुआत भी कर दी।

ध्वजारोहण समारोह इसका सबसे हालिया और सबसे प्रतीकात्मक उदाहरण है- एक ऐसा क्षण जहाँ परंपरा, आस्था और आधुनिक प्रशासनिक दृष्टि एक ही मंच पर दिखाई देती है।

अयोध्या धीरे-धीरे एक ऐसे भूगोल में बदल रही है जिसे केवल यात्रा नहीं, बल्कि अनुभव कहा जाएगा। शहर के केंद्र से लेकर सरयू तट तक फैली हलचल, सर्किट हाउस, चौड़ी सड़कें, इलेक्ट्रिक बसें, पैदल मार्ग, डिजिटल साइनेज, प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षाकवच-ये सब मिलकर एक ऐसे स्थान का रूप गढ़ रहे हैं, जहाँ श्रद्धालु सिर्फ भक्ति लेकर नहीं लौटते, बल्कि प्रशासनिक कुशलता और सांस्कृतिक गौरव की याद भी साथ ले जाते हैं। यह परिवर्तन किसी एक रात में नहीं हुआ। इसके पीछे वर्षों का राजनीतिक संकल्प, नौकरशाही का समर्पण और जनता की आस्था का अदृश्य सहयोग है।

योगी आदित्यनाथ का विजन अक्सर राजनीतिक विमर्श में

एक पंक्ति में समेट दिया जाता है- कि वे अयोध्या को वैश्विक धार्मिक राजधानी बनाना चाहते हैं, लेकिन इस बयान के पीछे गहरी रणनीति है। उनके लिए अयोध्या मात्र धार्मिक नगर नहीं, बल्कि ''सांस्कृतिक शक्ति'' और ''आर्थिक ऊर्जा'' का वह संगम है जो उत्तर भारत की अर्थव्यवस्था को नई रफ्तार दे सकता है। राम मंदिर का निर्माण उनके दृष्टिकोण का आरंभ था, अंत नहीं। मंदिर परिसर, राम पथ, जन सुविधाएँ और शहर की कनेक्टिविटी, ये सब उनके बड़े विजन के छोटे-छोटे अंश हैं जिन्हें एक-दूसरे से जोड़कर देखा जाए तभी इनका अर्थ खुलता है।

पर्यटन को रोजगार की रीढ़ बनाने का विचार अयोध्या में पूरी मजबूती से लागू किया गया। 2018 में जहाँ यहाँ आने वाले वार्षिक पर्यटकों की संख्या कुछ लाखों में थी, वहीं 2024 और 2025 में यह कई करोड़ के पार पहुँच चुकी है। इस असाधारण उछाल के पीछे सरकार की वह नीति है जिसमें धार्मिक पर्यटन को स्थानीय अर्थव्यवस्था से सीधे जोड़ने की कोशिश की गई। दुकानदारों, फेरीवालों, पुरोहितों, होमस्टे चलाने वाले परिवारों, युवा गाइडों और हस्तशिल्प व्यवसायों के लिए नयी संभावनाएँ खुलीं। कई ऐसे परिवार जो पीढ़ियों से मामूली आय पर निर्भर थे, अब स्थिर आर्थिक आधार पा रहे हैं।

अंततः राम ध्वज की यह उड़ान एक शहर की सीमाओं से कहीं आगे जाती है। यह उन मूल्यों का स्मरण कराती है जिन पर भारत की सांस्कृतिक चेतना टिकी है- धर्म, अनुशासन, करुणा और एकता। अयोध्या का यह नवउदय बताता है कि जब कोई समाज अपनी जड़ों को पहचानकर भविष्य की ओर बढ़ता है, तो उसका उत्थान केवल भौतिक नहीं होता, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक विस्तार भी बन जाता है। ◆

(लेखक शिक्षाविद् हैं)
मो. : 9456037283

संकल्प पूर्णता का शंखनाद

–सुनीता उपाध्याय

अयोध्या में 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राम मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजा फहराई। इसके साथ ही अयोध्या में राम जन्म भूमि पर राम मंदिर के निर्माण का सदियों पुराना संकल्प पूर्ण होने का शंखनाद हुआ। यह धर्म ध्वज नूतन अयोध्या के भव्य एवं दिव्य स्वरूप का अभिनव प्रकटीकरण है। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि अयोध्या वह भूमि है, जहां आदर्श आचरण में बदलते हैं। उन्होंने कहा कि यह पल साथ मिलकर चलने का है। हमें अब वह भारत बनाना है जो राम राज्य से प्रभावित होगा। हमें आजादी के सौ साल पूरे होने तक विकसित एवं आत्मनिर्भर भारत बनाना है। डबल इंजन की सरकार के कार्यकाल में उत्तर प्रदेश ने अपनी गौरवमयी ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को संजोते हुए पर्यटन खास तौर पर धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में अभूतपूर्व पहचान बनाई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दूरदर्शी नीतियों और प्रभावी क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप प्रदेश के प्रमुख पर्यटन एवं तीर्थस्थलों ने वैश्विक आकर्षण के नए आयाम छुए हैं। बेहतर सड़क नेटवर्क, अत्याधुनिक सुविधाएं, स्वच्छता, सुरक्षा और सुंन्दरीकरण के समन्वित प्रयासों ने उत्तर प्रदेश को भारत के प्रमुख पर्यटन गंतव्यों की श्रेणी में सम्मिलित किया है। काशी, अयोध्या, प्रयागराज, मथुरा–वृंदावन जैसे प्राचीन और सर्वोच्च धार्मिक धरोहरों के साथ–साथ बलरामपुर, सहारनपुर, गोरखपुर, जौनपुर और गाजीपुर जैसे नगरों में भी धर्मिक स्थलों का भव्य पुनरुद्धार हुआ है। बीते एक दशक के दौरान परम्परा और आधुनिकता का ऐसा संतुलित समागम प्रस्तुत हुआ है जिसने श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों दोनों के अनुभवों को समृद्ध किया है। हाल ही में नवरात्र के दौरान सहारनपुर स्थित मां शाकुंभरी देवी धाम और मीरजापुर स्थित विंध्यवासिनी धाम में दो करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का आगमन इस आध्यात्मिक समृद्धि और प्रदेश में पर्यटन के बढ़ते आकर्षण का प्रमाण है। आज उत्तर प्रदेश न केवल आस्था, संस्कृति और विरासत का संरक्षक है बल्कि पर्यटन, व्यापार, निवेश और रोजगार सृजन के नए अवसरों का भी तेजी से केंद्र बनता जा रहा है। उत्तर प्रदेश की पावन भूमि देवस्थली कही जानी चाहिए। त्रेतायुगीन प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या, कृष्ण जन्मभूमि मथुरा, आदिदेव भगवान शिव का दिव्य स्थल काशी विश्वनाथ धाम, गौतम बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी और निर्वाण स्थली कुशीनगर, सारनाथ बौद्ध तीर्थस्थल एवं विंध्याचल धाम सरीखो शक्तिपीठ उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ स्थल माने जा सकते हैं। एक साथ इतने तीर्थ स्थल संभवत: अन्य किसी राज्य में नहीं होंगे।

अयोध्या में फहरा रहा धर्म ध्वज प्रभु श्रीराम की अनंत ऊर्जा एवं दिव्य प्रताप के रूप में प्रतिस्थापित प्रतीत होता है। धर्म ध्वजा का भगवा रंग, इस पर रचित सूर्यवंश की ख्याति, वर्णित ओम शब्द, अंकित कोविदार वृक्ष राम राज्य की कीर्ति को प्रदर्शित करता है। यह धर्म ध्वज संकल्प से सिद्धि, सफलता के यशोगान तथा संघर्ष से सृजन की अद्भुत गाथा माना जा सकता है। यह धर्म ध्वजा सदियों से चले आ रहे सपनों का साकार स्वरूप है। यह महान संतों की साधना

और सामाजिक सहभागिता की सार्थक परिणति है। उम्मीद की जानी चाहिए कि यह धर्म ध्वज अनेक शताब्दियों तक प्रभु श्रीराम के आदर्शों एवं सिद्धांतों का उद्घोष करता रहेगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दूरदर्शी नीतियों और प्रभावी क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप प्रदेश के प्रमुख पर्यटन एवं तीर्थस्थलों ने वैश्विक आकर्षण के नए आयाम छुए हैं। बेहतर सड़क नेटवर्क, अत्याधुनिक सुविधाएं, स्वच्छता, सुरक्षा और सुंन्दरीकरण के समन्वित प्रयासों ने उत्तर प्रदेश को भारत के प्रमुख पर्यटन गंतव्यों की श्रेणी में सम्मिलित किया है। काशी, अयोध्या, प्रयागराज, मथुरा-वृंदावन जैसे प्राचीन और सर्वोच्च धार्मिक धरोहरों के साथ-साथ बलरामपुर, सहारनपुर, गोरखपुर, जौनपुर और गाजीपुर जैसे नगरों में भी धर्मिक स्थलों का भव्य पुनरुद्धार हुआ है।

अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण ऐतिहासिक घटना है। गत 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में आयोजित भव्य समारोह में मर्यादा पुरुषोत्तम राम की प्रतिमा का प्राण प्रतिष्ठा समारोह समूचे विधि विधान के साथ आयोजित किया गया था और अब ध्वजारोहण किया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इन दोनों समारोहों में उपस्थित रहे। उनके अलावा हजारों गणमान्य नागरिकों एवं अतिथियों की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही। अयोध्या में पांच शताब्दियों की सुदीर्घ प्रतीक्षा के बाद यह ऐतिहासिक संयोग बना है। हमारी पौराणिक मान्यताओं के अनुरूप राम हमारी चेतना में समाये हुए हैं। वे आदिकवि वाल्मीकि कृत रामायण तथा गोस्वामी तुलसीदास की अमर रचना राम चरित मानस के प्रमुख पात्र ही नहीं हैं जो अयोध्या में रघुकुल वंश में जन्मे और उनकी कीर्तिगाथा आज भी गाई जा रही है। वे अयोध्या नरेश महाराज दशरथ एवं महारानी कौशल्या के ज्येष्ठ पुत्र, लक्ष्मण-भरत और शत्रुघ्न के वरिष्ठ भ्राता तथा गुरु वशिष्ठ एवं महर्षि विश्वामित्र के शिष्य मात्र नहीं थे, जिन्होंने धनुष भंग किया, रावण को युद्ध में पराजित किया तथा अयोध्या में सैकड़ों वर्षों तक शासन किया। ध्वजारोहण के इस ऐतिहासिक पल में अयोध्या ही नहीं, बल्कि समूचा देश राममय हो गया। चारों ओर राम नाम की अनुगूंज अलौकिक छटा बिखेर रही थी। राम हमारी चेतना में समाए हैं, वे हमारी सांस्कृतिक , बौद्धिक एवं आध्यात्मिक चेतना के मूलाधार हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार मनु और शतरूपा ने वर्षों की घोर तपस्या के बाद सृष्टि के पालनकर्ता विष्णु से यह वरदान पाया था कि ईश्वर त्रेता युग में उनके अंश से जन्म लेंगे। वे मानव मात्र के रूप में धरती पर आएंगे तथा समस्त मानव जाति के कष्ट एवं संताप को हरेंगे। यही मनु और शतरूपा रघुकुल में दशरथ और कौशल्या कहलाये जिनके अंश से पुत्रेष्टि यज्ञ के बाद राम ने जन्म लिया। जो लोग मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के प्रति आस्था से अभिसिंचित हैं और उन्हें अपने नायक के रूप में देखते हैं, उनके लिए पांच सौ वर्षों की यह सुदीर्घ प्रतीक्षा का सुखद अंत था। उनके सदियों से चिरसंचित सपने

साकार हुए। स्वाधीनता संग्राम सेनानी, प्रखर चिंतक, राजनीतिज्ञ तथा समाजवादी राजनेता डॉ. राम मनोहर लोहिया ने अपने चर्चित आलेख पूर्ण मर्यादा का स्वप्न के अंतर्गत लिखा है कि राम, कृष्ण और शिव भारत में पूर्णता के तीन महान स्वप्न हैं। सबका रास्ता अलग-अलग है। राम की पूर्णता मर्यादित व्यक्तित्व में है, कृष्ण की उन्मुक्त या सम्पूर्ण व्यक्तित्व में और शिव की असीमित व्यक्तित्व में लेकिन हर एक पूर्ण है। किसी एक का एक या दूसरे से अधिक या कम पूर्ण होने का कोई सवाल नहीं उठता। भारत में शैव और वैष्णव दो प्रमुख परम्पराएं हैं। ईश्वर के सगुण तथा निर्गुण रूप की आराधना की जाती है। सगुण उपासकों के बीच राम और कृष्ण की उपासना का विधान है। दरअसल यह विष्णु के ही अवतार हैं जो त्रेता और द्वापर युग में हुए। शिव अहर्निश हैं, घोर तपस्या में लीन, सृष्टि के संहारकर्ता, नीलकंठ, अपनी जटाओं में जीवन दायिनी गंगा को समाये हुए। शिव राम के प्रिय हैं और राम शिव के प्रति अगाध श्रद्धा और भक्ति भाव से ओत-प्रोत नजर आते हैं। राम और कृष्ण में कोई विभेद नहीं, दरअसल यह दोनों एक ही हैं।

राम में शील और संयम है। कृष्ण दुष्टों के नाश में छल-बल और भेद के प्रयोग को अनुचित नहीं ठहराते। वे युद्धभूमि में मोहग्रस्त अर्जुन को निष्काम कर्म की शिक्षा देते हैं। यही श्रीमदभगवद्गीता है। यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम सृजाम्यहम्। राम कोई कोरा शब्द नहीं है। वह हमारी देह में रुधिर बनकर दौड़ रहा है। हृदय बनकर धड़क रहा है। वह हमारी सांसों की सांस है। उसकी महत्ता का तब पता चलता है जब उसके स्मरण मात्र से सारे कष्ट नष्ट हो जाते हैं। यह कह पाना कठिन है कि कितने कवियों ने राम के विराट व्यक्तित्व से उत्प्रेरित होकर, अभ्यर्थना-गीत गाए हैं। रामायण की कहानी, एक हरहराती हुई नदी की तरह दुर्गम पठारों और जंगलों को मंझाती हुई अंततः सागर संगम तक पहुंचती है। देश के सांस्कृतिक क्षितिज का कौन सा ऐसा कोना है जिसे राम ने न छुआ हो। वह दिग दिगन्त तक व्याप्त है। राम का प्राचीनतम संदर्भ यजुर्वेद 29/59 में मिलता है- अधो रामो सावित्रिः। गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा को श्रुतिसम्मत कहकर इसे वैदिक परम्परा सम्मत माना है। गांधी जी के राम राज्य की कल्पना अद्भुत है। यही भारतीय लोकतंत्र का आदर्श स्वरूप है जहां समाज में आखिरी पंक्ति में खड़े व्यक्ति की जीवन दशा में सुधार का स्वप्न महान संकल्प है। अयोध्या में राम मंदिर में सम्पन्न हुए ध्वजारोहण समारोह ने हमारे जीवन में अद्भुत आलोक और आनंद भर दिया है। चतुर्दिश उत्साह, उमंग और अनुराग का माहौल है। सबकी आंखें अयोध्या की ओर

टकटकी लगाए हुए हैं। सबके मन में सहज लालसा है कि उन्हें एक बार फिर अयोध्या जाने का सुअवसर प्राप्त हो तथा वे भव्य राम मंदिर में स्थापित नवीन विग्रह को देखें, अपने आराध्य के सम्मुख सिर नवाएं, राम मंदिर के धवल उन्नत शिखरों पर शान से फहरा रहे धर्म ध्वज को देखें। ◆

(लेखिका स्वतंत्र विचारक हैं)
मो. : 9454098779

अयोध्या में रामराज्य की पुनर्स्थापना

-चित्रांशी

25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कर कमलों से अर्पित राम मंदिर के उच्च शिखा के धर्म ध्वज का केशरिया रंग सूर्य की किरणों से मिश्रित होकर सरयू के जल तरंगों पर भी लहराते हुए साफ दिख रहा था। यह दृश्य बहुत ही सुन्दर और मनमोहक था। सरयू के पुल पर खड़े हजारों लोग सरयू की जल धारा पर लहराते विशाल धर्म ध्वज की लाल आकृति को देख निहाल हो रहे थे। यह वही सरयू है जिसका जल कभी कारसेवकों के खून से लाल था। आज यहां की लालिमा केशरिया है।

25 नवंबर को उसी सरयू का दृश्य कितना मनोरम और मनोहारी लग रहा था जब राम मंदिर के उच्च शिखर का विशाल केसरिया धर्म ध्वजा की लालिमा सरयू के बलखाती जल धारा में अपनी लाल छटा बिखेर रही थी। हिंदू धर्म और धार्मिक ग्रंथों में जो उल्लेख है उसके अनुसार मंदिर के शिखा पर ध्वजारोहण मंदिर में देवी देवताओं की उपस्थिति का प्रतीक माना जाता है। धर्म ध्वजा हवा के रुख के अनुकूल हर दिशा में लहराता है। जिस दिशा में धर्मध्वजा लहराती है, उस दिशा में हजारों हजार मील तक का माहौल भक्तिमय हो जाता है। वहां तक देवी-देवताओं का आशीर्वचन हवाओं के जरिए पहुंचता है। राम मंदिर के शिखर पर फहराया गया विशालकाय धर्म ध्वजा जब उत्तर और पूर्व की दिशा में लहराता है तो उसकी लालिमा सरयू के जल तरंगों को स्पर्श करती हुई जान पड़ती है। शास्त्रों में इस बात का उल्लेख है कि धर्म ध्वजा इस बात का भी सूचक है कि मंदिर में विराजमान देवी-देवता प्रतापी और शक्तिशाली हैं।

25 नवंबर को प्रधानमंत्री मोदी जी जब राम मंदिर के शिखा पर विशालकाय धर्मध्वजा चढ़ा रहे थे तब राम मंदिर के इतिहास के पुराने पन्नों को भी उघेड़ा जा रहा था और उसके 500 साल पुराने उतार-चढ़ाव की भी चर्चा थी। केसरिया ध्वज फहराया गया। केशरिया ध्वज अर्पण के बाद राम मंदिर अपनी संपूर्णता के चादर में समा गया। धार्मिक मान्यता है कि किसी भी मंदिर के शिखर पर जब तक धर्म ध्वजा नहीं चढ़ाया जाता तब तक मंदिर की पूर्णता अधूरी होती है। राम मंदिर का शिलान्यास हो या निर्माण या फिर उद्घाटन सारे क्रिया कर्म शुभ मुहूर्त और विधि विधान से ही संपन्न हुए। जिन लोगों को 22 जनवरी, 2024 को

राम मंदिर का उद्घाटन राजनीति प्रेरित जान पड़ता था, 25 नवंबर के ध्वजारोहण पर वे खामोश हैं। इस पावन अवसर पर वे क्या मीन मेख निकालें, झूठ मूठ की क्या कहानी गढ़ें, उन्हें कुछ नहीं सूझ रहा।

मंदिर पर धर्म ध्वज फहराना राजनीति नहीं, वैभव और मंदिर की संपूर्णता का प्रतीक है। इस अवसर पर अयोध्या को खास तौर पर सजाया-संवारा गया था। प्रभु राम की अयोध्या का चप्पा-चप्पा रंग बिरंगी रोशनी से नहाया हुआ था। संपूर्ण अयोध्या नगरी धर्म ध्वजारोहण की गवाही के लिए तैयार थी ही, देश भर के राम भक्तों में गजब का उत्साह था। मंदिर के शिखर पर प्रभु श्री राम और माता सीता से जुड़े लेजर शो की अनुपम छटा सबका मन मोह रही थी। यह एक ऐसा आयोजन था जिससे संपूर्ण अयोध्या और मंदिर परिसर का दृश्य ही चकाचौंध हो उठा था। शिखर यानी रघुकुल तिलक! इस तिलक पर ध्वजारोहण का संदेश यह है कि अयोध्या में राम राज की पुनर्स्थापना हो चुकी है। वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस में ध्वजा, तोरण और पताका के महत्व का वर्णन है। राम मंदिर पर फहराई गई धर्मध्वजा कई मायनों में बहुत खास है। ध्वज पर धर्म ग्रंथों में उल्लिखित कोविदार वृक्ष और ऊँ की आकृति उकेरी गई है। कोविदार वृक्ष के बारे में कहा गया है कि यह पारिजात और मदार के दिव्य स्पर्श से उत्पन्न पवित्र वृक्ष है। क्षत्रिय वंश में कोविदार वृक्ष का अलग ही महत्व है। ऊं तो सभी मंत्रों का प्राण है ही। ध्वज पर इसका अंकित होना संपूर्ण सृष्टि का प्रतिनिधित्व माना जाता है। इसी तरह ध्वज पर सूर्य देवता का विराजमान होना विजय का प्रतीक है। ध्वज केसरिया रंग का है। सनातन धर्म में यह रंग त्याग, बलिदान, वीरता और भक्ति का प्रतीक है। रघुवंश के शासन में केसरिया रंग का अति विशिष्ट स्थान रहा है। 22 फीट लंबे और 11 फीट चौड़े इस ध्वज पर अंकित खास महत्व के तीन चिन्ह सूर्य, कोविदार वृक्ष और ऊँ सूर्य भगवान का प्रतीक है। इस विशालकाय ध्वज को 161 फीट के ऊंचे शिखर पर 42 फीट के ध्वज दंडिका पर फहराया गया है। ◆

जो लोग मंदिर के किसी भी गतिविधि को चुनाव और वोट की राजनीति से जोड़ कर देखते हैं उन्हें अपनी सोच पर जरूर पछतावा हुआ होगा क्योंकि नवंबर महीने की 25 तारीख को धर्म ध्वजारोहण के पीछे कौन सी राजनीति थी और कौन सा चुनाव था? दरअसल धर्म द्रोहियों को न तो धर्म कर्म से मतलब है और न ही उसके मुहूर्त और महत्व से। राम मंदिर का शिलान्यास हो या निर्माण या फिर उद्घाटन सारे क्रिया कर्म शुभ मुहूर्त और विधि विधान से ही संपन्न हुआ। जिन लोगों को 22 जनवरी, 2024 को राम मंदिर का उद्घाटन राजनीति प्रेरित जान पड़ता था, 25 नवंबर के ध्वजारोहण पर वे खामोश हैं। इस पावन अवसर पर वे क्या मीन मेख निकालें,झूठ मूठ की क्या कहानी गढ़ें, उन्हें कुछ नहीं सूझ रहा।

(लेखिका स्वतंत्र पत्रकार हैं)
मो. : 7905525699

अयोध्या पर माता अन्नपूर्णा का भी आशीर्वाद

–राधिका

अयोध्या जन आस्था का प्रमुख केंद्र है। परम ब्रह्म भगवान राम की अवतार भूमि है। मानव जाति के उद्भव इतिहास की आधार भूमि है। महाराज मनु की बसाई हुई है। मनु से ही मनुष्य की उत्पत्ति बताई गई है। इस लिहाज से अयोध्या की पुरातनता का तो पूछना ही क्या? भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। आदर्शों और सिद्धांतों के समुच्चय हैं। भगवान राम विग्रहवान धर्म हैं तो उनकी लीलाओं की गवाह रही अयोध्या की पावनता और यहां के परम आध्यात्मिक परिवेश पर भला किसे संदेह हो सकता है? और सरयू को तो भगवान राम अपने श्रीमुख से ही पावन कह चुके हैं। अवध पुरी मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि सरयू बह पावनि। धार्मिक विद्वानों का मानना है कि भगवान राम और उनकी जन्मभूमि अयोध्या के स्मरण मात्र से जीव का कल्याण हो जाता है। जहां राम हैं, वहीं अयोध्या है। जहां राम तहँ अवध निवासू।अयोध्या ने अगर 14 वर्ष का भगवान राम का वनवास देखा है तो उसने भगवान राम के मंदिर निर्माण के लिए अपने प्राणों की आहुति देते अनेक राजाओं और उनके सैनिकों को भी देखा है उसने राममंदिर के लिए लड़ते सिखों का पराक्रम देखा है। भगवान राम के मंदिर को मुगलों के चंगुल से छुड़ाने के लिए साधु-संतों को भी हथियार उठाते और धर्म की रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग करते देखा है।

कई दशकों तक चला राम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन भी देखा है। उसने कारसेवकों के रक्त से सरयू को लाल होते देखा है

तो राम मंदिर निर्माण के रूप में देश-विदेश में रहने वाले करोड़ों रामभक्तों को आह्लादित होते भी देखा है। अब वह हर साल जब रामभक्तों पर विमान से पुष्पवर्षा होते देखती है, तो उसे दिली तसल्ली होती है। विगत कई वर्षों से अयोध्या सरयू तट पर लाखों दीपकों की रोशनी में चमकते अपने वैभव को भी देख रही है। पहले उसने भगवान राम के बाल विग्रह को उनके भव्य और दिव्य मंदिर में स्थापित होते देखा फिर जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 नवंबर को मंदिर के शिखर पर धर्मध्वज फहराया तो पूरा देश राममय हो उठा। एक माह बाद रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने जब भगवान राम की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की दूसरी वर्षगांठ पर पौष माह की द्वादशी तिथि को मंदिर परिसर में बने अन्नपूर्णा मंदिर के शिखर पर धर्मध्वजा लहराई तो अयोध्या राममय होने के साथ ही शिव और आदिशक्ति की भक्ति के रंग में रंग गई। भवानी और शंकर तो श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप हैं ।इसके बिना तो परमब्रह्म जगदाधार भगवान राम की प्राप्ति संभव ही नहीं है। मां अन्नपूर्णा तो सदा पूर्णता प्रदान करने वाली है।अन्नपूर्णा मंदिर के निर्माण के साथ ही एक तरह से अयोध्या पूर्ण हो गई है। अन्नपूर्णे सदा पूर्णे शंकर प्राण वल्लभे। अन्नपूर्णा मां की कृपा के बिना तो विकास और शांति की कल्पना ही नहीं की जा सकती। उनके मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वज का फहराया जाना सनातन गौरव की पराकाष्ठा है। श्रद्धा और विश्वास के आगमन की पदचाप है। इस दृष्टि से भी इस कार्यक्रम का विशेष महत्व है।

अन्नपूर्णा मंदिर पर धर्मध्वज इस बार साल के अंतिम दिन फहराया गया, इससे नववर्ष का जश्न मनाने वालों की खुशी द्विगुणित हो गई। देश-दुनिया के रामभक्तों के उत्साह में चार चांद लग गया। भगवान श्रीराम के जयकारों और मंत्रोच्चार के बीच रक्षा मंत्री व मुख्यमंत्री ने विधिवत पूजन कर मां अन्नपूर्णा मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजा फहराई। दर्शन-पूजन के बाद जब दोनों नेता मंदिर परिसर से बाहर निकले, तो श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीराम के जयकारे लगाकर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर पूरे राममंदिर परिसर में भक्ति और उत्साह का माहौल बना रहा। मुख्य धार्मिक कार्यक्रम भले ही 31 दिसंबर, 2025 को हुआ लेकिन प्राण प्रतिष्ठा द्वादशी से जुड़े अनुष्ठान दो दिन बाद तक चलते रहे। यह और बात है कि इस निमित्त धार्मिक अनुष्ठान पांच दिन पहले ही आरंभ हो गए थे। प्राण प्रतिष्ठा द्वादशी कार्यक्रम देखने के लिए लाखों की तादाद में श्रद्धालु रामनगरी अयोध्या पहुंचे।

अन्नपूर्णा मंदिर पर धर्मध्वज इस बार साल के अंतिम दिन फहराया गया, इससे नववर्ष का जश्न मनाने वालों की खुशी द्विगुणित हो गई। देश-दुनिया के रामभक्तों के उत्साह में चार चांद लग गया। भगवान श्रीराम के जयकारों और मंत्रोच्चार के बीच रक्षा मंत्री व मुख्यमंत्री ने विधिवत पूजन कर मां अन्नपूर्णा मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजा फहराई। दर्शन-पूजन के बाद जब दोनों नेता मंदिर परिसर से बाहर निकले, तो श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीराम के जयकारे लगाकर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर पूरे राममंदिर परिसर में भक्ति और उत्साह का माहौल बना रहा। मुख्य धार्मिक कार्यक्रम भले ही 31 दिसंबर, 2025 को हुआ लेकिन प्राण प्रतिष्ठा द्वादशी से जुड़े अनुष्ठान दो दिन बाद तक चलते रहे। यह और बात है कि इस निमित्त धार्मिक अनुष्ठान पांच दिन पहले ही आरंभ हो गए थे। प्राण प्रतिष्ठा द्वादशी कार्यक्रम देखने के लिए लाखों की तादाद में श्रद्धालु रामनगरी अयोध्या पहुंचे। इस अवसर पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने राम मंदिर आंदोलन को जहां एक एक महान इतिहास करार दिया, वहीं इसे भविष्य की नींव कहने वाला कदम भी बताया। वे यह बताने और जताने से भी नहीं चूके कि पाकिस्तान के खिलाफ चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर में भी भारत ने भगवान राम के आदर्शों के अनुरूप व्यवहार किया। विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा सनातन परंपराओं को मिटाने के बार-बार किए गए प्रयासों के बावजूद, राम मंदिर के ऊपर लहराता हुआ भगवा ध्वज सभ्यतागत निरंतरता का संदेश देता है।

उन्होंने कहा कि राम विनम्र हैं। राम गुणी हैं। राम दयालु हैं, लेकिन जहां आवश्यकता पड़ती है, वहां रामजी दुष्टों के संहारक की भूमिका निभाते हैं। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान, हमने भगवान राम की उसी प्रेरणा से काम किया। भगवान राम महज एक पात्र या धर्मग्रंथ का एक अध्याय नहीं हैं, बल्कि जीवंत नैतिक शक्ति हैं जो नैतिक दुविधा, संयम और कर्तव्य के क्षणों में समाज का मार्गदर्शन करते हैं। राम जन्मभूमि आंदोलन भौगोलिक दृष्टि और समय के लिहाज से दुनिया के सबसे बड़े आंदोलनों में से एक था। राम मंदिर आंदोलन के उथल-पुथल भरे चरणों को याद करते हुए उन्होंने कहा कि भगवान राम का नाम लेने के कारण संतों, ऋषियों और भक्तों को गोलियों, गिरफ्तारियों और दमन का सामना करना पड़ा था। रक्षामंत्री ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की दूसरी वर्षगांठ को गहन आध्यात्मिक संतुष्टि का क्षण बताया और कहा कि भगवान राम को उनके दिव्य मंदिर में विराजमान देखना जीवन भर की उपलब्धि जैसा प्रतीत हुआ।

इसमें संदेह नहीं कि कोई भी सामाजिक आंदोलन अचानक शून्य से जन्म नहीं लेता। यह समाज की चेतना से उभरता है, समाज के भीतर विकसित होता है और समाज में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को बदलते हुए आकार लेता है। जब आंदोलन आगे बढ़ता है, तो यह समाज की दशा और दिशा निर्धारित करता है। मंदिर निर्माण आंदोलन भी एक ऐसा आंदोलन रहा है, जिसने न केवल इतिहास को झकझोर दिया, बल्कि वर्तमान को दिशा दी और भविष्य की नींव रखी। यह संघर्ष सनातन धर्म में विश्वास रखने वाले करोड़ों लोगों के धैर्य, तपस्या और आस्था का संघर्ष था जो पांच शताब्दियों से अधिक समय तक चला।

इसमें संदेह नहीं कि सदियों के इंतजार के बाद, भगवान राम को दो साल पहले उनके मंदिर में स्थापित किया गया था और अब वे अयोध्या ही नहीं, बल्कि अपनी दिव्य उपस्थिति से पूरे विश्व को प्रकाशित कर रहे हैं। अयोध्या की हर गली और हर चौराहा राममय है। हर्ष की यह भावोदधि अयोध्या ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में तरंगायित हो रही है। धर्मों रक्षति रक्षित: का दिव्य संदेश दे रही है। साथ ही यह भी बता रही है कि जो भी देश अपने मूल धर्म, संस्कृति और सभ्यता से कट जाता है, वह अपना अस्तित्व खो देता है।

रक्षामंत्री की मानें तो दो साल पहले अयोध्या में हुआ प्राण प्रतिष्ठा समारोह केवल रामलला के श्री विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा नहीं थी, यह सदियों बाद भारतीय समाज के दिलों और दिमागों में हुई आध्यात्मिक जागृति थी। राम मंदिर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उस दृष्टिकोण का प्रतीक है कि आज उठाए गए कदम अगले हजार वर्षों की नींव रखेंगे। सदियों तक चले लंबे संघर्ष की परिणति को देखना दुर्लभ सौभाग्य है। अयोध्या डबल इंजन वाली सरकार के निरंतर नेतृत्व में अभूतपूर्व परिवर्तन का गवाह बन रही है, जहां आस्था और परंपरा को संरक्षित करते हुए विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे का समवेत विकास भी हो रहा है। अयोध्या धार्मिक पर्यटन का वैश्विक केंद्र बन गई है, जो न केवल अयोध्या के विकास की बल्कि भारत के सभ्यतागत गौरव की भी परिचायक है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मानें तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विगत एक दशक में अयोध्या की स्थिति काफी बदली है। व्यक्तिगत हितों और धार्मिक कट्टरता से प्रभावित लोगों के चलते कभी अयोध्या अशांति और संघर्ष का गढ़ बन गई थी, लेकिन अब वह विकास के पथ पर अनवरत गतिमान है। अयोध्या का नाम ही यह बताता है कि यहां कभी कोई युद्ध नहीं हुआ क्योंकि कोई भी शत्रु इसकी वीरता, शक्ति और गौरव के सामने टिक नहीं सका। हालांकि, कुछ लोगों ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों, धार्मिक कट्टरता और तुष्टीकरण की घृणित राजनीति से प्रेरित होकर अयोध्या को अशांति और संघर्ष का अड्डा बना दिया। फिर भी, यह वही अयोध्या है, जिसने देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सफल नेतृत्व में पिछले 11 सालों में तीन महत्वपूर्ण घटनाएं देखी हैं जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता। 5 अगस्त, 2020 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राम मंदिर का भूमि पूजन किया था। 22 जनवरी, 2024 को प्रधानमंत्री के नेतृत्व में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी। इस साल 25 नवंबर को मंदिर के मुख्य शिखर पर धर्मध्वज फहराया गया। झंडा फहराने से दुनिया को मजबूत संदेश गया कि सनातन धर्म सर्वोपरि है और यह हमेशा देश की आध्यात्मिक चेतना का मार्गदर्शन करता रहेगा। देश और दुनिया का कोई भी ऐसा श्रद्धालु नहीं है, जो अब अयोध्या आकर अभिभूत न होता हो। इसका उदाहरण है कि पिछले पांच वर्षों के भीतर 45 करोड़ से अधिक श्रद्धालु अयोध्या धाम आए हैं।

इसमें संदेह नहीं कि 2025 में प्रयागराज आने वाले श्रद्धालु काशी और अयोध्या भी पहुंचे। भगवान कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा-वृंदावन के आकर्षण ने इस दर्शन लालसा को और अधिक विस्तार दिया। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, पिछले वर्ष 13 जनवरी से 26 फरवरी के बीच आयोजित महाकुंभ के दौरान ही प्रयागराज में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके चलते अयोध्या, काशी और मथुरा में बड़ी तादाद में दर्शनार्थी पहुँचे। एक आधिकारिक बयान के मुताबिक, वर्ष 2024 में उत्तर प्रदेश में 64.91 करोड़ से अधिक पर्यटक आए जिनमें विदेशी पर्यटकों की संख्या 23.64 लाख से ज्यादा थी। वहीं, वर्ष 2025 में महज छह माह के भीतर (जनवरी से जून तक) कुल पर्यटकों की संख्या 121.81 करोड़ से अधिक रही। इनमें विदेशी पर्यटकों की संख्या 33 लाख से ज्यादा थी।

इसमें संदेह नहीं कि 2025 में प्रयागराज आने वाले श्रद्धालु काशी और अयोध्या भी पहुंचे। भगवान कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा-वृंदावन के आकर्षण ने दर्शन की लालसा को और अधिक विस्तार दिया। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, पिछले

वर्ष 13 जनवरी से 26 फरवरी के बीच आयोजित महाकुंभ के दौरान ही प्रयागराज में 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके चलते अयोध्या, काशी और मथुरा में बड़ी तादाद में दर्शनार्थी पहुँचे। एक आधिकारिक बयान के मुताबिक, वर्ष 2024 में उत्तर प्रदेश में 64.91 करोड़ से अधिक पर्यटक आए जिनमें विदेशी पर्यटकों की संख्या 23.64 लाख से ज्यादा थी। वहीं, वर्ष 2025 में महज छह माह के भीतर (जनवरी से जून तक) कुल पर्यटकों की संख्या 121.81 करोड़ से अधिक रही। इनमें विदेशी पर्यटकों की संख्या 33 लाख से ज्यादा थी।

उत्तर प्रदेश देश में सबसे अधिक भ्रमण वाले राज्यों में से एक बनकर उभरा, जहां वर्ष 2025 में 137 करोड़ से अधिक घरेलू पर्यटक आए और विदेशी पर्यटकों की संख्या में भी लगातार वृद्धि दर्ज की गई। इसमें उत्तर प्रदेश के धर्म स्थलों का बड़ा योगदान रहा। अयोध्या का दीपोत्सव, वाराणसी की देव दीपावली, मथुरा में बरसाने की होली जैसे पर्व भी श्रद्धालुओं को बरबस अपनी ओर खींचते रहे। जनवरी से जून (छह माह की अवधि) तक काशी पहुंचे पर्यटकों की संख्या 12.96 करोड़ से ज्यादा रही। इस अवधि में अयोध्या पहुंचे श्रद्धालुओं की संख्या- 23.82 करोड़ से अधिक हो गई। उत्तर प्रदेश में विरासत संरक्षण को लेकर राज्य सरकार का अभियान 2025 में भी लगातार गतिमान रहा। यूं तो भगवान राम के मंदिर के मुख्य शिखर पर भगवा ध्वज लहराने को ही मंदिर निर्माण की पूर्णता मान लिया गया था लेकिन मंदिर निर्माण की आध्यात्मिक पूर्णता तो सही मायने में अब हुई है। शिव-पार्वती के बिना राम पूर्ण नहीं होते और राम-जानकी के बिना शिव पूर्ण नहीं होते। इसलिए भी अन्नपूर्णा मंदिर के शिखर पर धर्मध्वज की स्थापना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह ज्ञान-वैराग्य की सिद्धि प्रदाता होने के साथ ही, पुरुषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति में भी सहायक है। शास्त्रों ने भी मुनादी कर रखी है कि जहां धर्म है, वहीं जय है। यतो धर्मः ततो जयः। राम विग्रहवान धर्म हैं। भगवान शिव धर्म का मूल है। माता पार्वती यानी अन्नपूर्णा जी धर्म की संरक्षिका हैं। इस लिहाज से भी इस आयोजन का महत्व सहज ही बढ़ जाता है। ◆

(लेखिका स्वतंत्र विचारक व आई.टी. एक्सपर्ट हैं)
मो. : 6387005157

त्रेतायुग की याद दिलाता धर्मध्वज

–प्रेमशंकर अवस्थी

अयोध्या में दिव्य श्रीराममंदिर के निर्माण की पूर्णता का यज्ञ महानुष्ठान ध्वजारोहण से सम्पूर्णता की ओर है। पांच सौ वर्षों से प्रज्वलित संघर्ष की आग में तप कर नव्य, दिव्य और भव्य हुई आज की अयोध्या से नये त्रेता युग का सूत्रपात कर रामराज्य की कल्पना को साकार करती नजर आ रही है।

श्रीराममंदिर परिसर 25 नवम्बर, 2025 मार्गशीष शुक्लपक्ष की सीताराम विवाह पंचमी पर ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बना। जहां दिव्य श्रीराममंदिर के भव्य शिखर पर धर्मध्वज का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख डा. मोहन भागवत ने मृगशिरा नक्षत्र के अभिजीत मुहूर्त के पवित्र पल में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत सैकड़ों धर्माचार्यों एवं बलिदानियों के आश्रितों की गौरवमयी उपस्थिति के बीच वेदमंत्रों व शंखनाद के बीच धर्मध्वजा रोहण कर श्रीराममंदिर की पूर्णता की घोषणा की। इसी के साथ सहस्त्राब्दियों से चले आ रहे संघर्ष और करोड़ों राम भक्तों की आस्था को सम्मान मिला। जिसका इंतजार राम भक्तों ने पांच सौ वर्षों तक किया था।

श्रेष्ठतम् संस्कृति नगरी के गौरव से विभूषित हुई रामनगरी अयोध्या में नये त्रेतायुग के सूत्रपात से पुराना वैभव लौट आया है लेकिन कलयुग में राम नाम की अधिक महत्ता है और श्रेष्ठता भी। मोक्ष गति के लिये सत् के मार्ग में चलकर ''राम'' नाम का स्मारण ही सिद्ध महामंत्र है। रम् धातु से घञ् प्रत्यय से बना ''राम'' रमन्ते योगेषु या सर्वेषु जनेषु, हृदयेषु इति रामः का मौलिक स्वरूप सिद्धि से सिद्धक तक है। मोदी जी के अनवरत हृदय निःश्रृत शब्दों में सत्यम् एकम् पद्म परम सत्ये धर्माः प्रतिष्ठताः -सत्य ही एक मात्र पद है और परम् सत्य धर्म में प्रतिष्ठित है। सत्य ही ब्रह्म का स्वरूप है, सत्यमेव जयते इसी

सत्य की विजय घोषणा है। यह धर्म ध्वज निरन्तर सत्य के पथ पर चलने की प्रेरणा देगा। ''प्राण जाय पर वचन न जाई'' व्यक्ति जो कहे, वही किया जाये। यह ध्वजा हमें वचनबद्धता और विश्वास की याद दिलायेगी। इसके साथ ''कर्म प्रधान विश्व रचि राखा'' विश्व में कर्म एवं कर्तव्य की प्रधानता हो, यह धर्म ध्वजा इसी की कामना का संकेत है। ''नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना'' ऐसे समाज के निर्माण की कामना है। जहां कोई दरिद्र न हो, कोई लाचार और दुखी न हो, यह धर्म ध्वज कोई प्रतीक नहीं है बल्कि संकल्प है। संकल्प एक ऐसे भारत का जहां सत्य, कर्म, समरसंता और समृद्धि हो, जो नये रामराज्य को साकार करने का रास्ता दिखायेगा।

ध्वजारोहण के समय समारोह में उपस्थित अतिथिगण और धर्माचार्य, संतगण इतना भावुक हो उठे कि पूरे समारोह में राममय जय घोष से रामनगरी में भक्ति और आस्था की सरयू को निरंतर प्रवाहित बनाये रखा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भावुकता के बीच अपनी भावनाओं को रोक नहीं पाये और प्रवाह में उनके उदगार बहते और हिलोरें लेते रहे और कहा आज अयोध्या भारत की सांस्कृतिक चेतना की एक और उत्कर्ष बिन्दु की साक्षी बन रही है। आज सम्पूर्ण भारत व विश्व राममय है। सदियों की वेदना आज विराम पा रही है। सदियों का संकल्प अपनी सिद्धि को प्राप्त हो रहा है, उनका कहना था कि श्री राम मंदिर के गर्भ गृह की ऊर्जा श्री राम का दिव्य प्रताप इस धर्म ध्वज के रूप में दिव्यतम् भव्यतम् मंदिर में प्रतिष्ठापित हुई है। हमें उसके व्यक्तित्व से सीखना और व्यवहार को आत्मसात करने की प्रेरणा मिली है। उनका संदेश है कि धर्म ध्वज केवल ध्वज नहीं है बल्कि यह भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण के शंखनाद का ध्वज है।

किसी भी मंदिर के शिखर पर वैसे ही धर्मध्वजारोहण मात्र एक रस्म अदायगी नहीं है। बल्कि भारतीय सनातन धर्म में मंदिरों के शिखरों को दैवीय ऊर्जा का सर्वोच्च प्रवेश द्वार माना जाता है।

वैदिक धर्म ग्रन्थों में मंदिर में धर्म ध्वज को ब्रह्मांडीय ऊर्जा और मंदिर के गर्भगृह के बीच के सीधा सम्पर्क सूत्र के रूप में देखा जाता रहा है। एक तरह से यह मंदिर में भगवान के प्रतिष्ठापित होने का स्पष्ट संकेत है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जीवन के महानतम् कर्म से अपने को अनुप्राणित समझते हुए भाव विह्वल होकर देश को अपना संदेश देने से नहीं भूले। संदेश के दर्शन में ''अयोध्या के पावन धाम में'' श्री रामजन्मभूमि में ध्वजारोहण समारोह का हिस्सा बनना मेरे लिये अन्यन्त भाव विभोर करने वाला अनुभव रहा। शुभ मुहुर्त में सम्पन्न हुआ यह अनुष्ठान हमारे सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय एकता के नये अध्याय का उद्घोष है। राम मंदिर का गौरवशाली ध्वज विकसित भारत के नये जागरण की संस्थापना है। यह ध्वज नीति और न्याय का प्रतीक हो, यह ध्वज सुशासन से समृद्धि का पथ प्रदर्शक हो और यह ध्वज विकसित भारत की ऊर्जा बनकर इसी भाव से आवरोहित रहे, भागवान श्री राम से यही कांमना है। जय-जय सियाराम कहकर अपने भाषण के अन्त को अनन्त बनाया। अयोध्या नगरी सांस्कृतिक चेतना के नये-नये उत्कर्षों की साक्षी बनने को तरसती रही। धर्म ध्वजा रोहण के सभी धर्मावलम्बियों को एक साथ लेकर सामूहिक सद्भाव का अनुष्ठान जहां देखने को मिला, वहीं श्री राम मंदिर परिसर में बनाये गये महर्षि बाल्मिकि, महर्षि विश्वामित्र, अगस्त्य और वशिष्ठमुनि आदि मंदिरों ने श्री राम के आदर्श जीवन मूल्यों की शिक्षा दी। उनके भी मंदिरों को नमन कर पूजा पाठ किया। माता शबरी और देवी अहिल्या के परस्परप्रीति का मार्ग जहां प्रशस्त किया वही निषादराज, जटायु और गिलहरी बड़े संकल्प के लिये छोटे प्रयास का प्रतीक हैं के दर्शन-पूजन का भी कार्यक्रम संकल्पों की प्रतिपूर्ति करता है।

श्री राम मंदिर आन्दोलन में वैसे तो भारतीय सनातन

संस्कृति से जुड़े हुए चतुर्दिक असंख्य लोगों ने अपने प्राणोत्सर्ग से बहुत बड़ा योगदान किया, किन्तु राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ व विश्व हिन्दू परिषद के योगदान को कम करके आंकना उचित नहीं होगा। श्री रामजन्मभूमि के आन्दोलन में संघ एवं विश्व हिन्दू परिषद के धर्माचार्यों की लामबन्दी से मुकाम तय करने पर ही आन्दोलन का रास्ता मजबूत एवं सशक्त हुआ था। संघ तो अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रहा है ऐसे में दोनों खुशियां संघ की मुट्ठी में है। श्री राम मंदिर की पूर्णता की सफलता और संघ की की स्थापना का शताब्दी वर्ष। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख डा. मोहन भागवत भी मोदी के साथ धर्म ध्वजारोहण के बराबर के भागीदार बने हैं। अपने उद्धबोधन में बड़े ही कातर एवं भावुक शब्दों में कहा कि धर्म ध्वज पर कोविदार वृक्ष रघुकुल की सत्ता का प्रतीक है। आज ध्वज पर उसका अंकन हमारी अस्मिता की वापसी का प्रतीक है। अशोक सिंघल, आचार्य रामचन्द्रदास परमहंस और विष्णु हरिडालमिया का स्मरण करना इस अवसर पर नहीं भूले। भावुक शब्दों में उनके योगदान को याद किया और कहा कि जिन लोगों ने इस काम के लिए प्राण दिये, उनकी आत्मा आज तृप्त हुई होगी। श्री राम मंदिर तीर्थ धाम 05 अगस्त, 2020 को आरम्भ होकर पांच वर्ष तीन माह का समय इस पुनीत कार्य की पूर्णता में लगा है। यह हर श्रमिक की पूर्ण श्रम की आहुति है। जो उनके पीढ़ियों के स्मरण में सदैव प्रवाहमान रहेगा। वैसे तो यह हर सनातनियों के संघर्षों के प्रतिफल की आहुति है। जो श्री राम मंदिर के सृजन में पूर्णता का प्रतीक है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ धर्म ध्वजारोहण समारोह में अयोध्या में श्री रामजन्मभूमि मंदिर पर सिखगुरूओं का विरोध का जिक्र करने से नहीं भूले। उन्होंने समारोह को इतिहास का आईना भी दिखाया और बताया कि 1510 से 1515 के बीच गुरु नानक देव अयोध्या में श्री राममंदिर जन्मभूमि दर्शन के लिए आये थे, बाद में 1528 में विदेशी आक्रान्ता बाबर के सैनिकों ने इस मन्दिर को तोड़ दिया था उस समय बाबर के अत्याचार को देखते हुए गुरु नानक देव ने बाबर को जाबर कहा था। उनके जुल्मों का कड़ा विरोध किया था। उन्होंने कहा कि अयोध्या में जब भी श्री रामजन्मभूमि के लिए संघर्ष हुआ तो शिखगुरुओं, सिख योंद्धाओं, निहंगों, सन्तों, राजाओं, आम नागरिकों, माताओं और बहनों ने अपना बलिदान देने में कभी संकोच नहीं किया। ये उन्हीं के संघर्षों का प्रतिफल है। जो हमारी दृष्टि के सामने भगवान श्री राम मंदिर में विराजमान है। श्री राम मंदिर पर लहराता यह केसरिया ध्वज, धर्म मर्यादा, सत्य, न्याय, और राष्ट्रधर्म का प्रतीक है। अब अयोध्या में हर दिन एक पर्व है प्रत्येक दिशा में राम राज्य की अनुभूति हो रही है।

अयोध्या सप्त पूरियों में एक है। यह भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र की खोज का परिणाम है। अयोध्या इसकी खोज ऋषि वशिष्ठ और वैवश्वत मनु ने की थी। भगवान विष्णु रामावतार में उस भूमि में जन्म लेना चाहते थे। जो संस्कारों से परिपूर्ण हो अयोध्या श्री भगवान राम की जन्मस्थली है। यह वह भूमि है जहां आदर्श आचरण में बदलते है। यही वह नगरी है जहा श्री राम ने जीवन पथ शुरू किया था। प्रधानमंत्री मोदी कहते है कि इसी अयोध्या ने संसार को बताया कि एक व्यक्ति कैसे समाज को शक्ति और संस्कारों से पुरूषोत्म बनाता है। उनका कहना है कि विकसित भारत बनाने का रास्ता ऐसे ही सामूहिक शक्ति के बीच से जाता है। राम मन्दिर आस्था के साथ मित्रता, कर्तव्य व सामाजिक सद्भाव के मूल्यों की शक्ति देता है। जो भारत को 2047 तक विकसित व समाज को सामर्थ्यवान बनाने की प्रेरणा देता है। तो अपने भीतर के राम को जागृत कर प्राण प्रतिष्ठित करना होगा। उन्होंने इसके लिये आपने विचार साझा करने हेतु बेहतर समय चुना और दृढ़ संकल्प लेने का संदेश दिया।

अयोध्या सप्त पुरियों में एक है। यह भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र की खोज का परिणाम है। अयोध्या इसकी खोज ऋषि वशिष्ठ और वैवश्वत मनु ने की थी। भगवान विष्णु रामावतार में उस भूमि में जन्म लेना चाहते थे। जो संस्कारों से परिपूर्ण हो। अयोध्या श्री भगवान राम की जन्मस्थली है। यह वह भूमि है जहां

आदर्श आचरण में बदलते है। यही वह नगरी है जहां श्री राम ने जीवन पथ शुरू किया था। प्रधानमंत्री मोदी कहते है कि इसी अयोध्या ने संसार को बताया कि एक व्यक्ति कैसे समाज को शक्ति और संस्कारों से पुरुषोत्तम बनता है। उनका कहना है कि विकसित भारत बनने का रास्ता ऐसे ही सामूहिक शक्ति के बीच से जाता है। राम मन्दिर आस्था के साथ मित्रता, कर्तव्य व सामाजिक सद्भाव के मूल्यों की शक्ति देता है। भारत को 2047 तक विकसित व समाज को सामर्थ्यवान बनाने की प्रेरणा देना है तो अपने भीतर के राम को जागृत कर प्राण प्रतिष्ठित करना होगा। उन्होंने इसके लिये आपने विचार साझा करने हेतु बेहतर समय चुना और दृढ़ संकल्प लेने का संदेश दिया।

ध्वजारोहण के समय समारोह में उपस्थित अतिथिगण और धर्माचार्य, संतगण इतना भावुक हो उठे कि पूरे समारोह में राममय जय घोष से रामनगरी में भक्ति और आस्था की सरयू को निरंतर प्रवाहित बनाये रखा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भावुकता के बीच अपनी भावनाओं को रोक नहीं पाये और प्रवाह में उनके उदगार बहते और हिलोरें लेते रहे और कहा आज अयोध्या भारत की सांस्कृतिक चेतना की एक और उत्कर्ष बिन्दु की साक्षी बन रही है। आज सम्पूर्ण भारत व विश्व, राममय है। सदियों की वेदना आज विराम पा रही है। सदियों का संकल्प अपनी सिद्धि को प्राप्त हो रहा है, उनका कहना था कि श्री राम मंदिर के गर्भ गृह की ऊर्जा श्री राम का दिव्य प्रताप इस धर्म ध्वज के रूप में दिव्यतम् भव्यतम् मंदिर में प्रतिष्ठपित हुई है। हमें उसके व्यक्तित्व से सीखना और व्यवहार को आत्मसात करने की प्रेरणा मिली है। उनका संदेश नि:संदेह धर्म ध्वज केवल ध्वज नहीं है बल्कि यह भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण के शंखनाद का ध्वज है।

मंदिर के शिखर पर फहराये गये त्रिकोणात्मक धर्म ध्वज की अनेक विशेषताएं है। यह कोविदार पेड़ का प्रतीक रघुकुल की परंपरा से जुड़ा है। जो जन कल्याण का प्रतीक है। कचनार जैसा प्रतीत होने वाला यह वृक्ष मंदार और पारिजात के वृक्षों का संयुक्त रूप है। वृक्ष पर भगवान सूर्य अंकित हैं जो धर्म और संकल्प के प्रतीक है। भगवान सूर्य के अन्दर धर्म के सर्वोच्च रूप ''ऊँ'' अंकित है। जो धर्म की सर्वोच्चता को प्रदर्शित करता है। भगवा रंग त्याग और उत्साह का प्रतीक है। यह धर्म ध्वज 18 फीट लम्बा और 9 फीट चौड़ा है। जो पैरासूट कपड़े से बने वजन का लगभग 2 किलोग्राम है। मजबूत व हल्का होने के साथ इसे सुगमता से फहराया जा सकता है। मौसम की प्रतिकूलता का प्रभाव धर्म ध्वजा पर नहीं पड़ेगा। विपरीत वातावरण में होने के बावजूद 4 वर्षों तक प्रभावित होने की गुंजाइश नहीं है। इसे डिफेन्स पब्लिक यूनिक की आयुध पैरासूट फैक्टी कानपुर द्वारा निर्मित किया गया है। यह धर्म ध्वज पारस्परिक उत्तर भारतीय नागरशैली में बने मंदिर शिखर पर फहराया गया है। मंदिर के चारों ओर बना आठ सौ मीटर का परकोटा मंदिर की शिल्प विवधता की बानगी है। धर्म ध्वज को फहराने के लिये नायलांन मिश्रित मोटी रस्सी का प्रयोग किया गया है। इसके पीछे का दर्शन यह है कि मौसम के विपरीत होने के बावजूद भी इसका सामना किया जा सके। ध्वज दंड कांस्य धातु से निर्मित है जिसका वजन पांच हजार पांच सौ किलोग्राम बताया जा रहा है। जिसमें एक चक्र भी है जो तीन सौ साठ डिग्री पर घूम सके और हवा की दिशा के अनुकूल दशा को बदलने में सक्षम है।

सनातन धर्म में भगवा ध्वज की अपनी अलौकिक महिमा है कि यह ध्वज ईश्वर की संप्रभुता का प्रतिनिधित्व करती है। जबकि त्रिभुजाकार ध्वज तीनों लोकों में पृथ्वी, आकाश, पाताल का परिचायक होता है। वास्तु शास्त्र का मत है कि त्रिभुजाकार ध्वज अत्यन्त शुभ, शक्ति और विजय का प्रतीक होता है। त्रिभुज की आकृति शक्ति, ऊर्जा और विजय का प्रतिनिधित्व प्रदान करती है। झण्डों पर रंगों के प्रतीकों का चुनाव उस मंदिर में प्रतिष्ठापित देवताओं के अनुरूप होता है। पूजा करने आने वाले श्रद्धालु जब उस ध्वज को देखते है तो उन्हें अपने भीतर विराजमान दैवीयशक्ति का अन्तर्मन में स्मरण हो जाता है। उसका उस पर दैवीय प्रभाव पड़ने लागता है।

सनातन धर्म से सम्बन्धित स्थानों और उनके मंदिरों में त्याग

का प्रतीक ''भगवा'' झण्डा लगाया जाता है। भगवा ध्वज अहंकार का त्यागने और स्वयं को परमात्मा के प्रति समर्पित करने की प्रेरणा देता है। इसीलिये भगवा ध्वज भारत की सनातन संस्कृति की धरोहर का सांस्कृतिक और अध्यात्मिक देव दूत है। वेद, उपनिषद, पुराण, श्रुति सदैव इसका यशगान करते है।

महर्षि बालमीकि ने तो रामायाण ''राम'' को ''रामो विग्रहवान धर्म:'' कहकर उनके विग्रह को धर्म कहा है।

विश्वख्यातिलब्ध राम उपासक संतों ने श्री राम के जीवन दर्शन को वैसे तो पूर्ण व्यापकता प्रदान की है किन्तु महाकवियों में बाल्मीकि और तुलसी के रामचरितमानस में जिस पूर्णता के साथ सम्पूर्णता प्रदान की गयी है। वह विश्व पटल पर युगों-युगों से अजर-अमर है। तुलसी के मानस के एक-एक शब्द मंत्र नहीं महामंत्र के रूप में जन-जन के मानस में व्यापकता को लिये हुए है। तुलसी का तो धर्म ध्वज ''सत्य'' ''शील'' दृढ़ता का प्रतीक है। तभी तो रावण के बीच राम के युद्ध कौशल को अलौकिक एवं कल्पनीय दिव्य दर्शन का संदेश देकर अधीर हुए विभीषण को दिव्य ज्ञान देकर उनकी ''रावण रथी विरथ रघुवीरा'' की पिपासा को शांत करने में सफल हुए और वह श्री राम के पूर्ण शरणागत हो गये। इसके पूर्व श्रीराम और विभीषण के संवाद में मानस के मंत्रों से जो निखार आयी है वह ही राम मंदिर निर्माण की आधारशिला बनी।

रावण रथी विरथ रधुवीरा।
देखि विभीषण भये अधीरा।।
अधिक प्रीतिमन भा संदेहा।
बंदि चरन गहि सहित सनेहा।
नाथ न रथ नहि पद त्राणा।।
केहिं विधि जितब बीर बलवाना।
सुनहु सखा कह कृपा निधाना।।
जेहि जय होई सो स्यंदन आना।
सौरज धीरज जेहि रथ चाका।
सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका।।
बल विवेक तम परहित घोरे।
क्षमा कृपा समता रजु जोरे।।
कवच अभेद विप्र गुरू पूजा।
एहि सम विजय उपाय न दूजा।।
सखा धर्ममय अस रथ जाके।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके।।

श्री राम ने रण कौशल में विभीषण को विजय के दर्शन मंत्र का जो संदेश दिया। वह रथ तो धैर्य और सद्गुणों का है। जिसमें शौर्य, धीरज, सत्य शील, बल, विवेक, क्षमा, कृपा, समता, ईश्वर, भक्ति, वैराग्य, संतोष और विज्ञान जैसे गुण ही उसके रथ के पहिये, ध्वजा और घोड़े हैं, और यही सच्चा रथ है। जिसे कोई वीर रावण जैसे पराक्रमी योद्धा यानी बुराइयों पर विजय प्राप्त कर सकता है। उसी दर्शन मंत्र के अश्रित भगवान राम ने ''सत्य, शील'' दृढ़ ध्वजा पताका फहराकर लंका में रावण से विजय पायी और अयोध्या में वापस आकर त्रेतायुग में उसी विजय धर्म ध्वज से राम राज्य की स्थापना की। मेरा ऐसा मत है कि श्री राम के युद्ध कौशल में विभीषण को दिये गये उनके अलौकिक ज्ञान दर्शन के संदेश से यह स्पष्ट हो गया है कि अयोध्या में आक्रमणकारियों द्वारा विध्वंस किये गये श्री राम मंदिर के निर्माण की पूर्णता के लिए किये गये प्रयास में राम मंदिर आन्दोलन के हजारों राम भक्तों से लेकर सर्वोच्च न्यायालय के प्राप्त निर्णय में दिव्य ज्ञान के स्वावलम्बन के आधार का यह संदेश अवश्य बना होगा। तभी अवतारी युगपुरुष के रूप में मोदी, भागवत और योगी ने अयोध्या के श्री राम मंदिर में भौतिक रूप से धर्म ध्वज लहराकर ''राम काज किन्हे बिना, मोहिं कहा विश्राम की'' प्रण पूर्ति की आहुति अवश्य दी है, किन्तु त्रेतायुग का यह ''सत्य शील'' विजय धर्म ध्वज तुलसी के मानस से लेकर जन-जन के मानस में सदैव फहराने की निरन्तरता का यह संदेश जीवन्तता के साथ अजर-अमर है। लेखक भी इस अवसर पर श्री राम मंदिर के धर्म ध्वज के समक्ष बार-बार प्रणत है। ◆

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)
मो. : 9450403222

सत्य होते सदियों के सपने

-प्रदीप कुमार गुप्ता

अदभुत, अकल्पनीय, अविश्वसनीय, लेकिन शाश्वत सत्य। श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर में 25 नवम्बर, 2025 को हुआ ध्वजारोहण एक युग परिवर्तनकारी घटना है। ध्वज जैसे-जैसे मन्दिर के शिखर की ओर बढ़ रहा था, वैसे-वैसे श्रद्धा, उत्साह और आध्यात्मिक भावनाएं उमड़ती चली जा रही थीं। उस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों का कम्पन एक सच्चे रामभक्त के हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति ही तो थीं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आस्था से जुड़े हुए प्रणाम मुद्रा में हाथ और उपस्थित सन्त-महात्माओं तथा गणमान्यजन सहित टेलीविजन पर पूरे देश और दुनिया की एकटक लगी निगाहें, सदियों के उस संघर्ष व संकल्प को साकार होते हुए देख कर भावविभोर हो रहे थे और उन्हें नमन कर रहे थे। ध्वजारोहण के साथ ही श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है। 31 दिसम्बर, 2025 को अयोध्या में श्रीरामलला के विराजमान होने के द्वितीय वार्षिकोत्सव-प्रतिष्ठा द्वादशी समारोह में मां अन्नपूर्णा मन्दिर के शिखर पर धर्म ध्वजा का आरोहण किया गया।

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का निर्माण और श्रीरामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा हमारे पूर्वजों की 500 वर्षों की तपस्या

का सुखद और आह्लादित करने वाला क्षण है, जिसे हमारी पीढ़ी अपनी आंखों से देख पा रही है। हम सभी देशवासी गौरव के इस पल में किसी न किसी रूप में भागीदार हैं। कोई श्रद्धालु, कोई पर्यटक, कोई श्रमिक, तो कोई किसी न किसी भूमिका में श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के साथ जुड़ा है। अयोध्या त्रेतायुग के बाद एक बार पुनः जगमगा रही है। मुख्यमंत्री जी के शब्दों में 'अयोध्या आज वैश्विक उत्सवों की राजधानी बन गई है। यहां प्रत्येक दिन एक पर्व है, हर दान एक प्रताप है और प्रत्येक दिशा में रामराज्य की पुनर्स्थापना की दिव्य अनुभूति हो रही है। प्रभु श्री राम की

यह पावन नगरी आस्था व आधुनिकता के साथ ही अर्थव्यवस्था के नए युग में प्रवेश कर चुकी है।' विगत 05 वर्षों में 45 करोड़ से अधिक श्रद्धालु श्रीरामनगरी अयोध्या आ चुके हैं।

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का दिव्य रूप सदियों की तपस्या का साकार रूप है। अब जबकि अद्भुत और भव्य मन्दिर पर धर्म ध्वजा का आरोहण हो गया है, तब अयोध्या पुरी दुनिया का नेतृत्व करने को तैयार है। अयोध्या मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मस्थली है। यह त्रेता युग से ही सम्पूर्ण भारत सहित पूरी दुनिया को धर्म, राजनीति, मित्रता, राजधर्म, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यपालन का संदेश देती रही है। देश की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सनातन धर्म की गौरवशाली परम्परा का प्रतिनिधित्व करती अयोध्या नगरी, जो श्रीराम नगरी के रूप में भी विश्वविख्यात है, आज पुनः उत्सवों की राजधानी बन चुकी है।

धर्म पथ, सुग्रीव पथ, आस्था पथ, बजरंग पथ, श्रीराम जन्मभूमि पथ जैसे आध्यात्मिक ऊर्जा से भरे पथ, न केवल अयोध्या की शान बन गए हैं, बल्कि इनसे सम्पूर्ण विश्व को जीवन जीने की एक न प्रेरणा भी मिल रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के विजन और नेतृत्व में अयोध्या में प्रतिवर्ष आयोजित हो रहा दीपोत्सव अपने पिछले ही रिकॉर्ड को ध्वस्त कर नया विश्व रिकॉर्ड बना रहा है। दीपोत्सव विश्व मानवता को यह भी समझाने में सफल हुआ है कि दीपावली का आयोजन क्यों होता है और क्यों यह हर सनातन धर्मावलम्बी के लिए इतना महत्वपूर्ण पर्व है। प्रकाश पर्व दीपावली की उत्पत्ति श्रीराम, माता जानकी और श्री लक्ष्मण जी के 14 वर्षों के वनवास पूर्ण करने के उपरान्त अयोध्या वापसी से जुड़ी है। सत्य, न्याय और धर्म की विजय से जुड़ा यह पर्व पूरी दुनिया को अयोध्या नगरी की ही देन है।

25 नवम्बर, 2025, श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर में ध्वजारोहण की यह तिथि हमारे देश के समृद्ध इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज हो चुकी है। श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माण से जुड़ी हर तिथि आने वाली सदियों तक नए उत्सवों के रूप में मनायी जाएगी। 09 नवम्बर, 2019 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय से फैसला आने के बाद श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। पूरे देश ने इस फैसले का सम्मान किया और भारत ने दुनिया में

सामाजिक सद्भाव का एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया, जो अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता। 05 अगस्त, 2020 को जब पूरी दुनिया कोविड महामारी से जूझ रही थी, तब भारत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सनातन धर्म के सूर्य के प्रतीक श्री राम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माण की आधारशिला रखी जा रही थी। इसी तरह 22 जनवरी, 2024 भी अविस्मरणीय तिथि है, जब साधु, सन्त, महात्माओं और सभ्रान्तजन की उपस्थिति में पुनः प्रधानमंत्री जी के ही कर-कमलों से पूरे विधि-विधान के साथ श्रीरामलला की दिव्य, भव्य और नयनाभिराम प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गई। पूरी दुनिया असम्भव से माने जाने वाले इस अवसर को देख कर आश्चर्यचकित थी। 05 जून, 2025 को मन्दिर में श्रीराम दरबार की प्रतिष्ठा की गयी। अब जबकि 25 नवम्बर, 2025 को श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर में ध्वजारोहण सम्पन्न हो गया है, इसी के साथ ही मंदिर का निर्माण अपनी पूर्णता को प्राप्त हो गया है।

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का निर्माण और श्रीरामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा हमारे पूर्वजों की 500 वर्षों की तपस्या का सुखद और आह्लादित करने वाला क्षण है, जिसे हमारी पीढ़ी अपनी आंखों से देख पा रही है। हम सभी देशवासी गौरव के इस पल में किसी न किसी रूप में भागीदार हैं। कोई श्रद्धालु, कोई पर्यटक, कोई श्रमिक, तो कोई किसी न किसी भूमिका में श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर के साथ जुड़ा है। अयोध्या त्रेतायुग के बाद एक बार पुनः जगमगा रही है। मुख्यमंत्री जी के शब्दों में 'अयोध्या आज वैश्विक उत्सवों की राजधानी बन गई है। यहां प्रत्येक दिन एक पर्व है, हर दान एक प्रताप है और प्रत्येक दिशा में रामराज्य की पुनर्स्थापना की दिव्य अनुभूति हो रही है। प्रभु श्री राम की यह पावन नगरी आस्था व आधुनिकता के साथ ही अर्थव्यवस्था के नए युग में प्रवेश कर चुकी है।' विगत 05 वर्षों में 45 करोड़ से अधिक श्रद्धालु श्रीरामनगरी अयोध्या आ चुके हैं।

यह धर्म ध्वजा मात्र किसी मन्दिर के शिखर पर फहराने वाला सामान्य ध्वज नहीं है, बल्कि यह तपस्या, त्याग, बलिदान, अधर्म पर धर्म, अन्याय पर न्याय, अन्धकार पर प्रकाश की विजय का भी प्रतीक है। यह इस बात का प्रतीक भी है कि हर रात के बाद सवेरा होता है। हर अन्यायी का एक न एक दिन अन्त होता है। धर्म की सदैव विजय होती है। प्रधानमंत्री जी के शब्दों में 'यह धर्म ध्वजा भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है।' संघर्ष से सृजन की गाथा, संतों की साधना और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणति, प्रभु श्रीराम के आदर्शों और सिद्धान्तों का उद्घोष, सत्यमेव जयते का प्रतीक यह ध्वज भारत के आने वाले कल को अपने आशीर्वाद से प्रकाशित करता रहेगा। प्रभु श्रीराम का भव्य मन्दिर 140 करोड़ देशवासियों की आस्था, सम्मान और आत्मगौरव का प्रतीक बन चुका है।

धर्म ध्वजा के बिना मन्दिर का शृंगार अधूरा माना जाता है। धर्म ध्वजा आस्था और विश्वास के केन्द्र मन्दिर को पूर्णता प्रदान करती है। जो लोग किसी कारण से मन्दिर नहीं आ पाते और दूर से ही मन्दिर के ध्वज को प्रणाम कर लेते हैं, उन्हें भी उतना ही पुण्य मिल जाता है?-'आरोपितं ध्वजं दृष्ट्वा, ये अभिनन्दन्ति धार्मिकाः। ते अपि सर्वे प्रमुच्यन्ते, महा पातक कोटिभिः।' यदि प्रदेश की राजधानी लखनऊ से अयोध्या होकर गुरु गोरखनाथ नगरी गोरखपुर की यात्रा की जाए, तो अयोध्या में प्रवेश करने पर हाईवे से दूर से ही श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर पर लगी धर्मध्वजा के दर्शन हो जाते हैं। हम मन ही मन प्रभु श्रीराम को प्रणाम कर अपने गंतव्य की ओर संतुष्ट भाव से आगे बढ़ सकते हैं।

प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर और विकसित भारत के विजन तथा मुख्यमंत्री जी द्वारा उत्तर प्रदेश को आत्मनिर्भर और विकसित बनाए जाने के संकल्प की सिद्धि में जिस सामूहिक शक्ति की आवश्यकता है, उसके लिए यह धर्म ध्वजा प्रेरक और मार्गदर्शक शक्ति के रूप में हमारे साथ है। यह धर्मध्वजा यह भी इंगित करती है कि मन्दिर की दिव्यता के भीतर उससे भी विशाल, विराट और विशिष्ट दैवीय शक्ति की उपस्थिति है, जो

मनुष्य को हर प्रकार के दु:ख से मुक्ति प्रदान करने में सक्षम और समर्थ है। मन्दिर में लगी धर्म पताका मन्दिर की पवित्रता और आध्यात्मिक ऊर्जा को भी दर्शाती है। मन्दिर के ऊपर फहराता हुआ ध्वज अन्यंत चित्ताकर्षक लगता है और मन-मस्तिष्क को गर्व से भर देता है।

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का निर्माण उत्तर भारतीय 'नागर' और दक्षिण भारतीय परम्परा के सुन्दर समन्वय से किया गया है। यह इस बात का प्रतीक है कि विभिन्नताओं से परे पूरा भारत और इसकी संस्कृति एक है और वह है 'भारतीय'। गर्भ गृह के मध्य और प्रवेश मार्ग पर 05 प्रमुख मण्डप-नृत्य, रंग, सभा, प्रार्थना और कीर्तन मण्डप हैं। मन्दिर के चार कोनों पर सूर्य, भगवती, गणेश और शिव उप मन्दिर बनाए गए हैं। उत्तर-दक्षिण दिशा में माता अन्नपूर्णा और हनुमान जी के मन्दिर स्थित हैं। मन्दिर के विशाल प्रांगण में सप्तऋषियों, लोकमाता अहिल्याबाई, निषादराज, माता शबरी और गोस्वामी तुलसीदास की दिव्य प्रतिमाओं की स्थापना की गयी है। यह हमारे देश की उस सामाजिक संस्कृति का परिचायक है, जो समरसता का सन्देश देती है। साथ ही, यह इन महानुभावों के योगदान का स्मरण भी कराती है। यहां जटायु जी और गिलहरी की प्रतिमाएं भी स्थापित की गयी हैं। गिद्धराज जटायु की प्रतिमा अत्याचारी से उनके संघर्ष की साक्षी है। गिलहरी की प्रतिमा हमें सन्देश देती है कि बड़े संकल्पों की सिद्धि के लिए सामूहिक शक्ति और छोटे से छोटे प्रयास का भी सम महत्व है। सम्पूर्ण मन्दिर में 1,000 से अधिक मूर्तियां, 3,000 स्तम्भ-उकेरण और 7,000 शिल्प डिजाइन किए गए हैं, जो श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर की भव्यता तथा गरिमा को और बढ़ाते हैं।

श्रीराम मन्दिर के 191 फीट ऊँचे शिखर पर लहराते धर्मध्वज की लम्बाई 22 फीट और चौड़ाई 11 फीट है। इसे

सम्भालने वाला ध्वजदण्ड 42 फीट ऊँचा है। ध्वज रघुकुल की श्रेष्ठ परम्पराओं से प्रेरित है, जिसका निर्माण कानपुर स्थित डिफेन्स पब्लिक सेक्टर यूनिट 'ग्लाइडर्स इण्डिया' की इकाई आयुध पैराशूट निर्माणी ने किया है। वाल्मीकि रामायण में वर्णित परम्पराओं से प्रेरित ध्वज में तीन पवित्र प्रतीक शामिल हैं। सूर्य सत्य, प्रकाश और धर्म की शाश्वतता का प्रतीक है। ऊँ अनादि-अनन्त ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का और कोविदार वृक्ष विजय व समृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है।

पाँच सदियों के बाद श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का निर्माण और श्रीरामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा देश के लिए गर्व का विषय है, लेकिन हमें यह भी हमेशा याद रखना चाहिए कि इस लम्बी अवधि के दौरान न जाने कितनी पीढ़ियां अपनी जीवन यात्रा इसी आशा में पूरी कर गई कि एक न एक दिन भव्य मन्दिर बनेगा और श्रीरामलला अपने स्वयं के महल में विराजमान होंगे। यह अवधि सनातन धर्म की पताका पुनः फहराने के लिए किए गए संघर्ष, बलिदान, त्याग, तप के लिए भी जानी जाएगी। आज अयोध्यानगरी को विश्व की सुन्दरतम नगरी बनाए जाने के लिए प्रदेश सरकार समर्पित भाव से और पूरे समर्पण के साथ कार्य कर रही है। अयोध्या सोलर सिटी के रूप में भी विकसित हो रही है। अयोध्या भारत की प्राचीन विरासत को अक्षुण्ण रखते हुए विकास के नए मानक गढ़ रही है। विरासत और विकास का यह संगम प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी गति दे रहा है। अयोध्या में रोजगार के नए अवसर बने हैं। यहां आने वाले श्रद्धालुओं को एक नयी नगरी के दर्शन हो रहे हैं, जो उनके अनुभव को जीवन भर के लिए यादगार बना रही। ऐसे में प्रभु श्रीराम से यही प्रार्थना है कि हमारा देश विकास के नित नए प्रतिमान गढ़ता हुआ विश्व को नेतृत्व प्रदान करता रहे। गंगा-यमुना-सरस्वती-सरयू जैसी पवित्र नदियों से सिंचित उत्तर प्रदेश रामराज्य की अवधारणा को चरितार्थ करता हुआ आगे बढ़ता रहे, धर्मध्वजा यूं ही फहराती रहे। जय हिन्द। ◆

(लेखक मुख्यमंत्री सूचना परिसर में फीचर लेखक हैं)
मो. : 7705800992

उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन लिमिटेड

बिजली बिल राहत योजना 2025-26

घरेलू एवं वाणिज्यिक उपभोक्ताओं को राहत प्रदान करने के लिए लाभकारी योजना

(1 दिसंबर, 2025-28 फरवरी, 2026)

पहली बार 100% ब्याज माफी के साथ मूलधन में भारी छूट

घरेलू उपभोक्ता
(02 किलोवाट तक)

दुकानदार उपभोक्ता
(01 किलोवाट)

योजना में मिलने वाली छूट

- मूलधन में 25% तक की भारी छूट
- सरचार्ज/ब्याज में 100% छूट
- छोटी-छोटी आसान किस्तों में जमा करने की सुविधा
- बढ़े हुए बिलों को सिस्टम द्वारा अपने आप औसत खपत के हिसाब से कम करने की सुविधा
- सभी प्रकार के बिजली चोरी मामलों में भी राहत व मुकदमे से छुटकारा

जल्दी आएं, ज्यादा छूट पाएं

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
1912

पंजीकरण के लिए उपभोक्ता www.uppcl.org, UPPCL Consumer App, विभागीय कार्यालय, फिनटेक एजेंट, मीटर रीडर या जनसेवा केंद्र के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

पंजीकरण शुल्क - ₹2,000 (यह राशि आपके बिल में समायोजित कर दी जाएगी)

काम दमदार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

उंगलियों पर परिवहन सेवाएं

सुगम यात्रा का लाभ उठाएं

परिवहन संबंधी सेवाओं के लिए

वॉट्सऐप चैटबॉट 80054 41222

पर 'Hi' अथवा 'नमस्ते' मैसेज करें

चैटबॉट पर उपलब्ध सेवाएं —

- ड्राइविंग लाइसेंस
- वाहन पंजीकरण
- परमिट सेवाएं
- कर अदायगी
- अन्य सेवाओं की त्वरित एवं विश्वसनीय जानकारी

चैटबॉट से जुड़ने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

काम दमदार डबल इंजन सरकार

अधिक जानकारी के लिए विजिट करें :

https://uptransport.upsdc.gov.in/

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश | UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP परिवहन विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए विशाल सिंह, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश एन. भार्गव, प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ द्वारा मुद्रित, सम्पादक–चन्द्र विजय वर्मा।